

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

31-January-2016 11:29 IST

Text of Prime Minister's 'Mann ki Baat' on All India Radio

मेरे प्यारे देशवासियो, 2016 की ये पहली 'मन की बात' है। 'मन की बात' ने मुझे आप लोगों के साथ ऐसे बाँध के रखा है, ऐसे बाँध के रखा है कि कोई भी चीज़ नज़र आ जाती है, कोई विचार आ जाता है, तो आपके बीच बता देने की इच्छा हो जाती है। कल मैं पूज्य बापू को श्रद्धांजलि देने के लिये राजघाट गया था। शहीदों को नमन करने का ये प्रतिवर्ष होने वाला कार्यक्रम है। ठीक 11 बजे 2 मिनट के लिये मौन रख करके देश के लिये जान की बाज़ी लगा देने वाले, प्राण न्योछावर करने वाले महापुरुषों के लिये, वीर पुरुषों के लिये, तेजस्वी-तपस्वी लोगों के लिये श्रद्धा व्यक्त करने का अवसर होता है। लेकिन अगर हम देखें, हम में से कई लोग हैं, जिन्होंने ये नहीं किया होगा। आपको नहीं लगता है कि ये स्वभाव बनना चाहिए, इसे हमें अपनी राष्ट्रीय जिम्मेवारी समझना चाहिए? मैं जानता हूँ मेरी एक 'मन की बात' से ये होने वाला नहीं है। लेकिन जो मैंने कल feel किया, लगा आपसे भी बातें करूँ। और यही बातें हैं जो देश के लिये हमें जीने की प्रेरणा देती हैं। आप कल्पना तो कीजिए, हर वर्ष 30 जनवरी ठीक 11 बजे सवा-सौ करोड़ देशवासी 2 मिनट के लिये मौन रखें। आप कल्पना कर सकते हैं कि इस घटना में कितनी बड़ी ताक़त होगी? और ये बात सही है कि हमारे शास्त्रों ने कहा है –

“संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम” - “हम सब एक साथ चलें, एक साथ बोलें, हमारे मन एक हों।” यही तो राष्ट्र की सच्ची ताक़त है और इस ताक़त को प्राण देने का काम ऐसी घटनायें करती हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ दिन पहले मैं सरदार पटेल के विचारों को पढ़ रहा था। तो कुछ बातों पर मेरा ध्यान गया और उनकी एक बात मुझे बहुत पसंद आई। खादी के संबंध में सरदार पटेल ने कहा है, हिन्दुस्तान की आज़ादी खादी में ही है, हिन्दुस्तान की सभ्यता भी खादी में ही है, हिन्दुस्तान में जिसे हम परम धर्म मानते हैं, वह अहिंसा खादी में ही है और हिन्दुस्तान के किसान, जिनके लिए आप इतनी भावना दिखाते हैं, उनका कल्याण भी खादी में ही है। सरदार साहब सरल भाषा में सीधी बात बताने के आदी थे और बहुत बढ़िया ढंग से उन्होंने खादी का माहात्म्य बताया है। मैंने कल 30 जनवरी को पूज्य बापू की पुण्य तिथि पर देश में खादी एवं ग्रामोद्योग से जुड़े हुए जितने लोगों तक पहुँच सकता हूँ, मैंने पत्र लिख करके पहुँचने का प्रयास किया। वैसे पूज्य बापू विज्ञान के पक्षकार थे, तो मैंने भी टेक्नोलॉजी का ही उपयोग किया और टेक्नोलॉजी के माध्यम से लाखों ऐसे भाइयों-बहनों तक पहुँचने का प्रयास किया है। खादी अब एक symbol बना है, एक अलग पहचान बना है। अब खादी युवा पीढ़ी के भी आकर्षण का केंद्र बनता जा रहा है और खास करके जो-जो holistic health care और organic की तरफ़ झुकाव रखते हैं, उनके लिए तो एक उत्तम उपाय बन गया है। फैशन के रूप में भी खादी ने अपनी जगह बनाई है और मैं खादी से जुड़े लोगों का अभिनन्दन करता हूँ कि उन्होंने खादी में नयापन लाने के लिए भरपूर प्रयास किया है। अर्थव्यवस्था में बाज़ार का अपना महत्व है। खादी ने भी भावात्मक जगह के साथ-साथ बाज़ार में भी जगह बनाना अनिवार्य हो गया है। जब मैंने लोगों से कहा कि अनेक प्रकार के fabrics आपके पास हैं, तो एक खादी भी तो होना चाहिये। और ये बात लोगों के गले उतर रही है कि हाँ भई, खादीधारी तो नहीं बन सकते, लेकिन अगर दसों प्रकार के fabric हैं, तो एक और हो जाए। लेकिन साथ-साथ मेरी बात को सरकार में भी एक सकारात्मक माहौल पनप रहा है। बहुत सालों पहले सरकार में खादी का भरपूर उपयोग होता था। लेकिन धीरे-धीरे आधुनिकता के नाम पर ये सब ख़त्म होता गया और खादी से जुड़े हुए हमारे ग़रीब लोग

बेरोज़गार होते गए। खादी में करोड़ों लोगों को रोज़गार देने की ताकत है। पिछले दिनों रेल मंत्रालय, पुलिस विभाग, भारतीय नौसेना, उत्तराखण्ड का डाक-विभाग – ऐसे कई सरकारी संस्थानों ने खादी के उपयोग में बढ़ावा देने के लिए कुछ अच्छे Initiative लिए हैं और मुझे बताया गया कि सरकारी विभागों के इस प्रयासों के परिणामस्वरूप खादी क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए, इस requirement को पूरा करने के लिए, सरकार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, अतिरिक्त – extra - 18 लाख मानव दिन का रोज़गार generate होगा। 18 lakh man-days, ये अपने आप में एक बहुत बड़ा jump होगा। पूज्य बापू भी हमेशा Technology के up-gradation के प्रति बहुत ही सजग थे और आग्रही भी थे और तभी तो हमारा चरखा विकसित होते-होते यहाँ पहुँचा है। इन दिनों solar का उपयोग करते हुए चरखा चलाना, solar energy चरखे के साथ जोड़ना बहुत ही सफल प्रयोग रहा है। उसके कारण मेहनत कम हुई है, उत्पादन बढ़ा है और qualitative गुणात्मक परिवर्तन भी आया है। खास करके solar चरखे के लिए लोग मुझे बहुत सारी चिट्ठियाँ भेजते रहते हैं। राजस्थान के दौसा से गीता देवी, कोमल देवी और बिहार के नवादा ज़िले की साधना देवी ने मुझे पत्र लिखकर कहा है कि solar चरखे के कारण उनके जीवन में बहुत परिवर्तन आया है। हमारी आय double हो गयी है और हमारा जो सूत है, उसके प्रति भी आकर्षण बढ़ा है। ये सारी बातें एक नया उत्साह बढ़ाती हैं। और 30 जनवरी, पूज्य बापू को जब स्मरण करते हैं, तो मैं फिर एक बार दोहराऊँगा - इतना तो अवश्य करें कि अपने ढेर सारे कपड़ों में एक खादी भी रहे, इसके आग्रही बनें।

प्यारे देशवासियो, 26 जनवरी का पर्व बहुत उमंग और उत्साह के साथ हम सबने मनाया। चारों तरफ़, आतंकवादी क्या करेंगे, इसकी चिंता के बीच देशवासियों ने हिम्मत दिखाई, हौसला दिखाया और आन-बान-शान के साथ प्रजासत्ताक पर्व मनाया। लेकिन कुछ लोगों ने हट करके कुछ बातें कीं और मैं चाहूँगा कि ये बातें ध्यान देने जैसी हैं, खास-करके हरियाणा और गुजरात, दो राज्यों ने एक बड़ा अनोखा प्रयोग किया। इस वर्ष उन्होंने हर गाँव में जो गवर्नमेंट स्कूल है, उसका ध्वजवंदन करने के लिए, उन्होंने उस गाँव की जो सबसे पढ़ी-लिखी बेटी है, उसको पसंद किया। हरियाणा और गुजरात ने बेटी को माहात्म्य दिया। पढ़ी-लिखी बेटी को विशेष माहात्म्य दिया। 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' - इसका एक उत्तम सन्देश देने का उन्होंने प्रयास किया। मैं दोनों राज्यों की इस कल्पना शक्ति को बधाई देता हूँ और उन सभी बेटियों को बधाई देता हूँ, जिन्हें ध्वजवंदन, ध्वजारोहण का अवसर मिला। हरियाणा में तो और भी बात हुई कि गत एक वर्ष में जिस परिवार में बेटी का जन्म हुआ है, ऐसे परिवारजनों को 26 जनवरी के निमित्त विशेष निमंत्रित किया और वी.आई.पी. के रूप में प्रथम पंक्ति में उनको स्थान दिया। ये अपने आप में इतना बड़ा गौरव का पल था और मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने अपने 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान का प्रारंभ हरियाणा से किया था, क्योंकि हरियाणा में sex-ratio में बहुत गड़बड़ हो चुकी थी। एक हज़ार बेटों के सामने जन्म लेने वाली बेटियों की संख्या बहुत कम हो गयी थी। बड़ी चिंता थी, सामाजिक संतुलन खतरे में पड़ गया था। और जब मैंने हरियाणा पसंद किया, तो मुझे हमारे अधिकारियों ने कहा था कि नहीं-नहीं साहब, वहाँ मत कीजिए, वहाँ तो बड़ा ही negative माहौल है। लेकिन मैंने काम किया और मैं आज हरियाणा का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ कि उन्होंने इस बात को अपनी बात बना लिया और आज बेटियों के जन्म की संख्या में बहुत तेज़ी से वृद्धि हो रही है। मैं सचमुच में वहाँ के सामाजिक जीवन में जो बदलाव आया है, उसके लिए अभिनन्दन करता हूँ।

पिछली बार 'मन की बात' में मैंने दो बातें कही थीं। एक, एक नागरिक के नाते हम महापुरुषों के statue की सफाई क्यों न करें! statue लगाने के लिये तो हम बड़े emotional होते हैं, लेकिन बाद में हम बेपरवाह होते हैं। और दूसरी बात मैंने कही थी, प्रजासत्ताक पर्व है तो हम कर्तव्य पर भी बल कैसे दें, कर्तव्य की चर्चा कैसे हो? अधिकारों की चर्चा बहुत हुई है और होती भी रहेगी, लेकिन कर्तव्यों पर भी तो चर्चा होनी चाहिए! मुझे खुशी है कि देश के कई स्थानों पर नागरिक आगे आए, सामाजिक संस्थाएँ आगे आईं, शैक्षिक संस्थाएँ आगे आईं, कुछ संत-महात्मा आगे आए और उन सबने कहीं-न-कहीं जहाँ ये statue हैं, प्रतिमाएँ हैं, उसकी सफाई की, परिसर की सफाई की। एक अच्छी शुरुआत हुई है, और ये सिर्फ़ स्वच्छता अभियान नहीं है, ये सम्मान अभियान भी है। मैं हर किसी का उल्लेख नहीं कर रहा हूँ, लेकिन जो खबरें मिली हैं, बड़ी संतोषजनक हैं। कुछ लोग

संकोचवश शायद खबरें देते नहीं हैं। मैं उन सबसे आग्रह करता हूँ – MyGov portal पर आपने जो statue की सफ़ाई की है, उसकी फोटो ज़रूर भेजिए। दुनिया के लोग उसको देखते हैं और गर्व महसूस करते हैं।

उसी प्रकार से 26 जनवरी को 'कर्तव्य और अधिकार' - मैंने लोगों के विचार माँगे थे और मुझे खुशी है कि हज़ारों लोगों ने उसमें हिस्सा लिया।

मेरे प्यारे देशवासियो, एक काम के लिये मुझे आपकी मदद चाहिए और मुझे विश्वास है कि आप मेरी मदद करेंगे। हमारे देश में किसानों के नाम पर बहुत-कुछ बोला जाता है, बहुत-कुछ कहा जाता है। खैर, मैं उस विवाद में उलझना नहीं चाहता हूँ। लेकिन किसान का एक सबसे बड़ा संकट है, प्राकृतिक आपदा में उसकी पूरी मेहनत पानी में चली जाती है। उसका साल बर्बाद हो जाता है। उसको सुरक्षा देने का एक ही उपाय अभी तो ध्यान में आता है और वो है फ़सल बीमा योजना। 2016 में भारत सरकार ने एक बहुत बड़ा तोहफ़ा किसानों को दिया है - 'प्रधानमंत्री फ़सल बीमा योजना'। लेकिन ये योजना की तारीफ़ हो, वाहवाही हो, प्रधानमंत्री को बधाइयाँ मिलें, इसके लिये नहीं है। इतने सालों से फ़सल बीमा की चर्चा हो रही है, लेकिन देश के 20-25 प्रतिशत से ज़्यादा किसान उसके लाभार्थी नहीं बन पाए हैं, उससे जुड़ नहीं पाए हैं। क्या हम संकल्प कर सकते हैं कि आने वाले एक-दो साल में हम कम से कम देश के 50 प्रतिशत किसानों को फ़सल बीमा से जोड़ सकें? बस, मुझे इसमें आपकी मदद चाहिये। क्योंकि अगर वो फ़सल बीमा के साथ जुड़ता है, तो संकट के समय एक बहुत बड़ी मदद मिल जाती है। और इस बार 'प्रधानमंत्री फ़सल बीमा योजना' की इतनी जनस्वीकृति मिली है, क्योंकि इतना व्यापक बना दिया गया है, इतना सरल बना दिया गया है, इतनी टेक्नोलॉजी का Input लाए हैं। और इतना ही नहीं, फ़सल कटने के बाद भी अगर 15 दिन में कुछ होता है, तो भी मदद का आश्वासन दिया है। टेक्नोलॉजी का उपयोग करके, उसकी गति तेज़ कैसे हो, बीमा के पैसे पाने में विलम्ब न हो - इन सारी बातों पर ध्यान दिया गया है। सबसे बड़ी बात है कि फ़सल बीमा की प्रीमियम की दर, इतनी नीचे कर दी गयी, इतनी नीचे कर दी गयी हैं, जो शायद किसी ने सोचा भी नहीं होगा। नयी बीमा योजना में किसानों के लिये प्रीमियम की अधिकतम सीमा खरीफ़ की फ़सल के लिये दो प्रतिशत और रबी की फ़सल के लिए डेढ़ प्रतिशत होगी। अब मुझे बताइए, मेरा कोई किसान भाई अगर इस बात से वंचित रहे, तो नुकसान होगा कि नहीं होगा? आप किसान नहीं होंगे, लेकिन मेरी मन की बात सुन रहे हैं। क्या आप किसानों को मेरी बात पहुँचायेंगे? और इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप इसको अधिक प्रचारित करें। इसके लिए इस बार मैं एक आपके लिये नयी योजना भी लाया हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरी 'प्रधानमंत्री फ़सल बीमा योजना' ये बात लोगों तक पहुँचे। और ये बात सही है कि टी.वी. पर, रेडियो पर मेरी 'मन की बात' आप सुन लेते हैं। लेकिन बाद में सुनना हो तो क्या? अब मैं आपको एक नया तोहफ़ा देने जा रहा हूँ। क्या आप अपने मोबाइल फ़ोन पर भी मेरे 'मन की बात' सुन सकते हैं और कभी भी सुन सकते हैं। आपको सिर्फ़ इतना ही करना है – बस एक missed call कर दीजिए अपने मोबाइल फ़ोन से। 'मन की बात' के लिये मोबाइल फ़ोन का नंबर तय किया है – 8190881908. आठ एक नौ शून्य आठ, आठ एक नौ शून्य आठ। आप missed call करेंगे, तो उसके बाद कभी भी 'मन की बात' सुन पाएँगे। फ़िलहाल तो ये हिंदी में है, लेकिन बहुत ही जल्द आपको अपनी मातृभाषा में भी 'मन की बात' सुनने का अवसर मिलेगा। इसके लिए भी मेरा प्रबन्ध जारी है।

मेरे प्यारे नौजवानो, आपने तो कमाल कर दिया। जब start-up का कार्यक्रम 16 जनवरी को हुआ, सारे देश के नौजवानों में नयी ऊर्जा, नयी चेतना, नया उमंग, नया उत्साह मैंने अनुभव किया। लाखों की तादाद में लोगों ने उस कार्यक्रम में आने के लिए registration करवाया। लेकिन इतनी जगह न होने के कारण, आखिर विज्ञान भवन में ये कार्यक्रम किया। आप पहुँच नहीं पाए, लेकिन आप पूरा समय on-line इसमें शरीक हो करके रहे। शायद कोई एक कार्यक्रम इतने घंटे तक लाखों की तादाद में नौजवानों ने अपने-आप को जोड़ करके रखा और ऐसा बहुत rarely होता है, लेकिन हुआ! और मैं देख रहा था कि start-up का क्या उमंग है। और लेकिन एक बात, जो सामान्य लोगों की सोच है कि start-up मतलब कि I.T. related बातें, बहुत ही

sophisticated कारोबार। start-up के इस event के बाद ये भ्रम टूट गया। I.T. के आस-पास का start-up तो एक छोटा सा हिस्सा है। जीवन विशाल है, आवश्यकतायें अनंत हैं। start-up भी अनगिनत अवसरों को लेकर के आता है।

मैं अभी कुछ दिन पहले सिक्किम गया था। सिक्किम अब देश का organic state बना है और देश भर के कृषि मंत्रियों और कृषि सचिवों को मैंने वहाँ निमंत्रित किया था। मुझे वहाँ दो नौजवानों से मिलने का मौका मिला – IIM से पढ़ करके निकले हैं – एक हैं अनुराग अग्रवाल और दूसरी हैं सिद्धि कर्नाणी। वो start-up की ओर चल पड़े और वो मुझे सिक्किम में मिल गए। वे North-East में काम करते हैं, कृषि क्षेत्र में काम करते हैं और herbal पैदावार हैं, organic पैदावार हैं, इसका global marketing करते हैं। ये हुई न बात!

पिछली बार मैंने मेरे start-up से जुड़े लोगों से कहा था कि 'Narendra Modi App' पर अपने अनुभव भेजिए। कइयों ने भेजे हैं, लेकिन और ज़्यादा आयेंगे, तो मुझे खुशी होगी। लेकिन जो आये हैं, वो भी सचमुच में प्रेरक हैं। कोई विश्वास द्विवेदी करके नौजवान हैं, उन्होंने on-line kitchen start-up किया है और वो मध्यम-वर्गीय लोग, जो रोज़ी-रोटी के लिए आये हुए हैं, उनको वो on-line networking के द्वारा टिफ़िन पहुँचाने का काम करते हैं। कोई मिस्टर दिग्गेश पाठक करके हैं, उन्होंने किसानों के लिए और खास करके पशुओं का जो आहार होता है, animal feed होता है, उस पर काम करने का मन बनाया है। अगर हमारे देश के पशु, उनको अच्छा आहार मिलेगा, तो हमें अच्छा दूध मिलेगा, हमें अच्छा दूध मिलेगा, तो हमारा देश का नौजवान ताक़तवर होगा। मनोज गिल्दा, निखिल जी, उन्होंने agri-storage का start-up शुरू किया है। वो scientific fruits storage system के साथ कृषि उत्पादों के लिए bulk storage system develop कर रहे हैं। यानि ढेर सारे सुझाव आये हैं। आप और भी भेजिए, मुझे अच्छा लगेगा और मुझे बार-बार 'मन की बात' में अगर start-up की बात करनी पड़ेगी, जैसे मैं स्वच्छता की बात हर बार करता हूँ, start-up की भी करूँगा, क्योंकि आपका पराक्रम, ये हमारी प्रेरणा है।

मेरे प्यारे देशवासियो, स्वच्छता अब सौन्दर्य के साथ भी जुड़ रही है। बहुत सालों तक हम गंदगी के खिलाफ़ नाराज़गी व्यक्त करते रहे, लेकिन गंदगी नहीं हटी। अब देशवासियों ने गंदगी की चर्चा छोड़ स्वच्छता की चर्चा शुरू की है और स्वच्छता का काम कहीं-न-कहीं, कुछ-न-कुछ चल ही रहा है। लेकिन अब उसमें एक कदम नागरिक आगे बढ़ गए हैं। उन्होंने स्वच्छता के साथ सौन्दर्य जोड़ा है। एक प्रकार से सोने पे सुहागा और खास करके ये बात नज़र आ रही है रेलवे स्टेशनों पर। मैं देख रहा हूँ कि इन दिनों देश के कई रेलवे स्टेशन पर वहाँ के स्थानीय नागरिक, स्थानीय कलाकार, students - ये अपने-अपने शहर का रेलवे स्टेशन सजाने में लगे हैं। स्थानीय कला को केंद्र में रखते हुए दीवारों का पेंटिंग रखना, साइन-बोर्ड अच्छे ढंग से बनाना, कलात्मक रूप से बनाना, लोगों को जागरूक करने वाली भी चीज़ें उसमें डालनी हैं, न जाने क्या-क्या कर रहे हैं! मुझे बताया किसी ने कि हज़ारीबाग के स्टेशन पर आदिवासी महिलाओं ने वहाँ की स्थानीय सोहराई और कोहबर आर्ट की डिज़ाइन से पूरे रेलवे स्टेशन को सज़ा दिया है। ठाणे ज़िले के 300 से ज़्यादा volunteers ने किंग सर्किल स्टेशन को सजाया, माटुंगा, बोरीवली, खार। इधर राजस्थान से भी बहुत खबरें आ रही हैं, सवाई माधोपुर, कोटा। ऐसा लग रहा है कि हमारे रेलवे स्टेशन अपने आप में हमारी परम्पराओं की पहचान बन जायेंगे। हर कोई अब खिड़की से चाय-पकौड़े की लॉरी वालों को नहीं ढूँढ़ेगा, ट्रेन में बैठे-बैठे दीवार पर देखेगा कि यहाँ की विशेषता क्या है। और ये न रेलवे का Initiative था, न नरेन्द्र मोदी का Initiative था। ये नागरिकों का था। देखिये नागरिक करते हैं, तो कैसा करते हैं जी। लेकिन मैं देख रहा हूँ कि मुझे कुछ तो तस्वीरें मिली हैं, लेकिन मेरा मन करता है कि मैं और तस्वीरें देखूँ। क्या आप, जिन्होंने रेलवे स्टेशन पर या कहीं और स्वच्छता के साथ सौन्दर्य के लिए कुछ प्रयास किया है, क्या मुझे आप भेज सकते हैं? ज़रूर भेजिए। मैं तो देखूँगा, लोग भी देखेंगे और औरों को भी प्रेरणा मिलेगी। और रेलवे स्टेशन पर जो हो सकता है, वो बस स्टेशन पर हो सकता है, वो अस्पताल में हो सकता है, वो स्कूल में हो सकता है, मंदिरों के आस-पास हो सकता है, गिरजाघरों के आस-पास हो सकता है, मस्जिदों के आस-पास हो सकता है, बाग़-बगीचे में हो सकता है, कितना सारा हो सकता है! जिन्होंने ये विचार आया और जिन्होंने इसको शुरू किया और जिन्होंने

आगे बढ़ाया, सब अभिनन्दन के अधिकारी हैं। लेकिन हाँ, आप मुझे फ़ोटो ज़रूर भेजिए, मैं भी देखना चाहता हूँ, आपने क्या किया है!

मेरे प्यारे देशवासियो, अपने लिए गर्व की बात है कि फ़रवरी के प्रथम सप्ताह में 4 तारीख से 8 तारीख तक भारत बहुत बड़ी मेज़बानी कर रहा है। पूरा विश्व, हमारे यहाँ मेहमान बन के आ रहा है और हमारी नौसेना इस मेज़बानी के लिए पुरजोश तैयारी कर रही है। दुनिया के कई देशों के युद्धपोत, नौसेना के जहाज़, आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम के समुद्री तट पर इकट्ठे हो रहे हैं। International Fleet Review भारत के समुद्र तट पर हो रहा है। विश्व की सैन्य-शक्ति और हमारी सैन्य-शक्ति के बीच तालमेल का एक प्रयास है। एक joint exercise है। बहुत बड़ा अवसर है। आने वाले दिनों में आपको टी.वी. मीडिया के द्वारा इसकी जानकारीयाँ तो मिलने ही वाली हैं, क्योंकि ये बहुत बड़ा कार्यक्रम होता है और सब कोई इसको बल देता है। भारत जैसे देश के लिए ये बहुत महत्वपूर्ण है और भारत का सामुद्रिक इतिहास स्वर्णिम रहा है। संस्कृत में समुद्र को उदधि या सागर कहा जाता है। इसका अर्थ है अनंत प्रचुरता। सीमायें हमें अलग करती होंगी, ज़मीन हमें अलग करती होगी, लेकिन जल हमें जोड़ता है, समुद्र हमें जोड़ता है। समंदर से हम अपने-आप को जोड़ सकते हैं, किसी से भी जोड़ सकते हैं। और हमारे पूर्वजों ने सदियों पहले विश्व भ्रमण करके, विश्व व्यापार करके इस शक्ति का परिचय करवाया था। चाहे छत्रपति शिवाजी हों, चाहे चोल साम्राज्य हो - सामुद्रिक शक्ति के विषय में उन्होंने अपनी एक नई पहचान बनाई थी। आज भी हमारे कई राज्य हैं कि जहाँ समुन्दर से जुड़ी हुई अनेक परम्पराएँ जीवित हैं, उत्सव के रूप में मनाई जाती हैं। विश्व जब भारत का मेहमान बन रहा है, नौसेना की शक्ति का परिचय हो रहा है। एक अच्छा अवसर है। मुझे भी सौभाग्य मिलेगा इस वैश्विक अवसर पर उपस्थित रहने का।

वैसे ही भारत के पूर्वी छोर गुवाहाटी में खेल-कूद समारोह हो रहा है, सार्क देशों का खेल-कूद समारोह। सार्क देशों के हज़ारों खिलाड़ी गुवाहाटी की धरती पर आ रहे हैं। खेल का माहौल, खेल का उमंग। सार्क देशों की नई पीढ़ी का एक भव्य उत्सव असम में गुवाहाटी की धरती पर हो रहा है। ये भी अपने आप में सार्क देशों के साथ नाता जोड़ने का अच्छा अवसर है।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैंने पहले ही कहा था कि मन में जो आता है, मन करता है, आपसे खुल करके बांटूँ। आने वाले दिनों में दसवीं और बारहवीं की परीक्षाएँ होंगी। पिछली बार 'मन की बात' में मैंने परीक्षा के संबंध में विद्यार्थियों से कुछ बातें की थीं। इस बार मेरी इच्छा है कि जो विद्यार्थियों ने सफलता पाई है और तनावमुक्त परीक्षा के दिन कैसे गुज़ारे हैं, परिवार में क्या माहौल बना, गुरुजनों ने, शिक्षकों ने क्या role किया, स्वयं ने क्या प्रयास किये, अपनों से सीनियर ने उनको क्या बताया और क्या किया? आपके अच्छे अनुभव होंगे। इस बार हम ऐसा एक काम कर सकते हैं कि आप अपने अनुभव मुझे 'Narendra Modi App' पर भेज दीजिये। और मैं मीडिया से भी प्रार्थना करूँगा, उसमें जो अच्छी बातें हों, वे आने वाले फ़रवरी महीने में, मार्च महीने में अपने मीडिया के माध्यम से प्रचारित करें, ताकि देशभर के students उसको पढ़ेंगे, टी.वी. पर देखेंगे और उनको भी चिंतामुक्त exam कैसे हो, तनावमुक्त exam कैसे हो, हँसते-खेलते exam कैसे दिए जाएँ, इसकी जड़ी-बूटी हाथ लग जाएगी और मुझे विश्वास है कि मीडिया के मित्र इस काम में ज़रूर मदद करेंगे। हाँ, लेकिन तब करेंगे, जब आप सब चीज़ें भेजेंगे। भेजेंगे न? पक्का भेजिए।

बहुत-बहुत धन्यवाद, दोस्तो। फिर एक बार अगली 'मन की बात' के लिए अगले महीने ज़रूर मिलेंगे। बहुत धन्यवाद।

AKT/AK

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

28-February-2016 11:36 IST

Text of Prime Minister's 'Mann ki Baat' on All India Radio

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार! आप रेडियो पर मेरी 'मन की बात' सुनते होंगे, लेकिन दिमाग इस बात पर लगा होगा - बच्चों के exam शुरू हो रहे हैं, कुछ लोगों के दसवीं-बारहवीं के exam शायद 1 मार्च को ही शुरू हो रहे हैं। तो आपके दिमाग में भी वही चलता होगा। मैं भी आपकी इस यात्रा में आपके साथ शरीक होना चाहता हूँ। आपको आपके बच्चों के exam की जितनी चिंता है, मुझे भी उतनी ही चिंता है। लेकिन अगर हम exam को, परीक्षा को देखने का अपना तौर-तरीका बदल दें, तो शायद हम चिंतामुक्त भी हो सकते हैं।

मैंने पिछली मेरी 'मन की बात' में कहा था कि आप NarendraModiApp पर अपने अनुभव, अपने सुझाव मुझे अवश्य भेजिए। मुझे खुशी इस बात की है - शिक्षकों ने, बहुत ही सफल जिनकी करियर रही है ऐसे विद्यार्थियों ने, माँ-बाप ने, समाज के कुछ चिंतकों ने बहुत सारी बातें मुझे लिख कर के भेजी हैं। दो बातें तो मुझे छू गईं कि सब लिखने वालों ने विषय को बराबर पकड़ के रखा। दूसरी बात इतनी हजारों मात्रा में चीजें आई कि मैं मानता हूँ कि शायद ये बहुत महत्वपूर्ण विषय है। लेकिन ज्यादातर हमने exam के विषय को स्कूल के परिसर तक या परिवार तक या विद्यार्थी तक सीमित कर दिया है। मेरी App पर जो सुझाव आये, उससे तो लगता है कि ये तो बहुत ही बड़ा, पूरे राष्ट्र में लगातार विद्यार्थियों के इन विषयों की चर्चाएँ होती रहनी चाहिए।

मैं आज मेरी इस 'मन की बात' में विशेष रूप से माँ-बाप के साथ, परीक्षार्थियों के साथ और उनके शिक्षकों के साथ बातें करना चाहता हूँ। जो मैंने सुना है, जो मैंने पढ़ा है, जो मुझे बताया गया है, उसमें से भी कुछ बातें बताऊंगा। कुछ मुझे जो लगता है, वो भी जोड़ूंगा। लेकिन मुझे विश्वास है कि जिन विद्यार्थियों को exam देनी है, उनके लिए मेरे ये 25-30 मिनट बहुत उपयोगी होंगे, ऐसा मेरा मत है।

मेरे प्यारे विद्यार्थी मित्रो, मैं कुछ कहूँ, उसके पहले आज की 'मन की बात' का opening, हम विश्व के well-known opener के साथ क्यूँ न करें। जीवन में सफलता की ऊँचाइयों को पाने में कौन-सी चीजें आपको काम आईं, उनके अनुभव आपको ज़रूर काम आएँगे। भारत के युवाओं को जिनके प्रति नाज़ है, ऐसे भारतरत्न श्रीमान सचिन तेंदुलकर, उन्होंने जो message भेजा है, वह मैं आपको सुनाना चाहता हूँ: -

“नमस्कार, मैं सचिन तेंदुलकर बोल रहा हूँ। मुझे पता है कि exams कुछ ही दिनों में start होने वाली हैं। आप में से कई लोग tense भी रहेंगे। मेरा एक ही message है आपको कि आपसे expectations आपके माता-पिता करेंगे, आपके teachers करेंगे, आपके बाकी के family members करेंगे, दोस्त करेंगे। जहाँ भी जाओगे, सब पूछेंगे कि आपकी तैयारी कैसी चल रही है, कितने percent आपका स्कोर करोगे। यही कहना चाहूँगा मैं कि आप खुद अपने लिए कुछ target set कीजियेगा, किसी और के expectation के pressure में मत आइयेगा। आप मेहनत ज़रूर कीजियेगा, मगर एक realistic achievable target खुद के लिए सेट कीजिये और वो target achieve करने के लिए कोशिश करना। मैं जब Cricket खेलता था, तो मेरे से भी बहुत सारे expectations होते थे। पिछले 24 साल मैं कई सारे कठिन moments आये और कई-कई बार अच्छे moments आये, मगर लोगों के expectations हमेशा रहते थे और वो बढ़ते ही गये, जैसे समय बीतता गया, expectations भी बढ़ते ही गए। तो इसके लिए मुझे एक solution find करना बहुत ज़रूरी था। तो मैंने यही सोचा कि मैं मेरे खुद के expectations रखूँगा और खुद के targets set करूँगा। अगर वो मेरे खुद के targets मैं set

कर रहा हूँ और वो achieve कर पा रहा हूँ, तो मैं ज़रूर कुछ-न-कुछ अच्छी चीज़ देश के लिए कर पा रहा हूँ। और वो ही targets मैं हमेशा achieve करने की कोशिश करता था। मेरा focus रहता था ball पे और targets अपने आप slowly-slowly achieve होते गए। मैं आपको यही कहूँगा कि आप, आपकी सोच positive होनी बहुत ज़रूरी है। positive सोच को positive results follow करेंगे। तो आप positive ज़रूर रहियेगा और ऊपर वाला आपको ज़रूर अच्छे results दे, ये मुझे, इसकी पूरी उम्मीद है और आपको मैं best wishes देना चाहूँगा exams के लिए। एक tension free जा के पेपर लिखिये और अच्छे results पाइये। Good Luck!"

दोस्तो, देखा, तेंदुलकर जी क्या कह रहे हैं। ये expectation के बोझ के नीचे मत दबिये। आप ही को तो आपका भविष्य बनाना है। आप खुद से अपने लक्ष्य को तय करें, खुद ही अपने target तय करें - मुक्त मन से, मुक्त सोच से, मुक्त सामर्थ्य से। मुझे विश्वास है कि सचिन जी की ये बात आपको काम आएगी। और ये बात सही है। प्रतिस्पर्धा क्यों? अनुस्पर्धा क्यों नहीं। हम दूसरों से स्पर्धा करने में अपना समय क्यों बर्बाद करें। हम खुद से ही स्पर्धा क्यों न करें। हम अपने ही पहले के सारे रिकॉर्ड तोड़ने का तय क्यों न करें। आप देखिये, आपको आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं पायेगा और अपने ही पिछले रिकॉर्ड को जब तोड़ोगे, तब आपको खुशी के लिए, संतोष के लिए किसी और से अपेक्षा भी नहीं रहेगी। एक भीतर से संतोष प्रकट होगा।

दोस्तो, परीक्षा को अंकों का खेल मत मानिये। कहाँ पहुँचे, कितना पहुँचे? उस हिसाब-किताब में मत फँसे रहिये। जीवन को तो किसी महान उद्देश्य के साथ जोड़ना चाहिए। एक सपनों को ले कर के चलना चाहिए, संकल्पबद्ध होना चाहिए। ये परीक्षाएँ, वो तो हम सही जा रहे हैं कि नहीं जा रहे, उसका हिसाब-किताब करती हैं; हमारी गति ठीक है कि नहीं है, उसका हिसाब-किताब करती हैं। और इसलिए विशाल, विराट ये अगर सपने रहें, तो परीक्षा अपने आप में एक आनंदोत्सव बन जायेगी। हर परीक्षा उस महान उद्देश्य की पूर्ति का एक कदम होगी। हर सफलता उस महान उद्देश्य को प्राप्त करने की चाभी बन जायेगी। और इसलिए इस वर्ष क्या होगा, इस exam में क्या होगा, वहाँ तक सीमित मत रहिये। एक बहुत बड़े उद्देश्य को ले कर के चलिये और उसमें कभी अपेक्षा से कुछ कम भी रह जाएगा, तो निराशा नहीं आएगी। और ज़ोर लगाने की, और ताक़त लगाने की, और कोशिश करने की हिम्मत आएगी।

जिन हज़ारों लोगों ने मुझे मेरे App पर मोबाइल फ़ोन से छोटी-छोटी बातें लिखी हैं। श्रेय गुप्ता ने इस बात पर बल दिया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। students अपनी पढ़ाई के साथ-साथ अपनी health का भी ध्यान रखें, जिससे आप exam में स्वस्थतापूर्वक अच्छे से लिख सकें। अब मैं आज आखिरी दिन ये तो नहीं कहूँगा कि आप दंड-बैठक लगाना शुरू कर दीजिये और तीन किलोमीटर, पाँच किलोमीटर दौड़ने के लिए जाइये। लेकिन एक बात सही है कि खास कर के exam के दिनों में आप का routine कैसा है। वैसे भी 365 दिवस हमारा routine हमारे सपनों और संकल्पों के अनुकूल होना चाहिये। श्रीमान प्रभाकर रेड्डी जी की एक बात से मैं सहमत हूँ। उन्होंने खास आग्रह किया है, समय पर सोना चाहिए और सुबह जल्दी उठकर revision करना चाहिए। examination centre पर प्रवेश-पत्र और दूसरी चीज़ों के साथ समय से पहले पहुँच जाना चाहिए। ये बात प्रभाकर रेड्डी जी ने कही है, मैं शायद कहने की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि मैं सोने के संबंध में थोड़ा उदासीन हूँ और मेरे काफ़ी दोस्त भी मुझे शिकायत करते रहते हैं कि आप बहुत कम सोते हैं। ये मेरी एक कमी है, मैं भी ठीक करने की कोशिश करूँगा। लेकिन मैं इससे सहमत ज़रूर हूँ। निर्धारित सोने का समय, गहरी नींद - ये उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि आपकी दिन भर की और गतिविधियाँ और ये संभव है। मैं भाग्यवान हूँ, मेरी नींद कम है, लेकिन बहुत गहरी ज़रूर है और इसके लिए मेरा काम चल भी जाता है। लेकिन आपसे तो मैं आग्रह करूँगा। वरना कुछ लोगों की आदत होती है, सोने से पहले लम्बी-लम्बी टेलीफ़ोन पर बात करते रहते हैं। अब उसके बाद वही विचार चलते रहते हैं, तो कहाँ से नींद आएगी? और जब मैं सोने की बात करता हूँ, तो ये मत सोचिए कि मैं exam के लिए सोने के लिए कहा रहा हूँ। गलतफ़हमी मत करना। मैं exam के time पर तो आपको अच्छी परीक्षा देने के लिए तनावमुक्त अवस्था के लिए सोने की बात कर रहा हूँ। सोते रहने की बात नहीं कर रहा हूँ। वरना कहीं ऐसा न हो कि marks कम आ जाये और माँ पूछे कि क्यों बेटे, कम आये, तो कह दो कि मोदी जी ने सोने को कहा था, तो मैं तो सो गया था। ऐसा नहीं

करोगे न! मुझे विश्वास है नहीं करोगे।

वैसे जीवन में, discipline सफलताओं की आधारशिला को मजबूत बनाने का बहुत बड़ा कारण होती है। एक मजबूत foundation discipline से आता है। और जो unorganized होते हैं, Indiscipline होते हैं, सुबह करने वाला काम शाम को करते हैं, दोपहर को करने वाला काम रात देर से करते हैं, उनको ये तो लगता है कि काम हो गया, लेकिन इतनी energy waste होती है और हर पल तनाव रहता है। हमारे शरीर में भी एक-आध अंग, हमारे body का एक-आध part थोड़ी-सी तकलीफ़ करे, तो आपने देखा होगा कि पूरा शरीर सहजता नहीं अनुभव करता है। इतना ही नहीं, हमारा routine भी चरमरा जाता है। और इसलिए किसी चीज़ को हम छोटी न मानें। आप देखिये, अपने-आपको कभी जो निर्धारित है, उसमें compromise करने की आदत में मत फंसाइए। तय करें, करके देखें।

दोस्तो, कभी-कभी मैंने देखा है कि जो student exam के लिए जाते हैं, दो प्रकार के student होते हैं, एक, उसने क्या पढ़ा है, क्या सीखा है, किन बातों में उसकी अच्छी ताकत है - उन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। दूसरे प्रकार के student होते हैं - यार, पता नहीं कौन-सा सवाल आयेगा, पता नहीं कैसा सवाल आयेगा, पता नहीं कर पाऊंगा कि नहीं कर पाऊंगा, पेपर भारी होगा कि हल्का होगा? ये दो प्रकार के लोग देखे होंगे आपने। जो कैसा पेपर आयेगा, उसके tension में रहता है, उसका उसके परिणाम पर भी नकारात्मक प्रभाव होता है। जो मेरे पास क्या है, उसी विश्वास से जाता है, तो कुछ भी आ जाये, वो निपट लेता है। इस बात को मुझसे भी अच्छी तरह अगर कोई कह सकता है, तो checkmate करने में जिनकी मास्टरी है और दुनिया के अच्छों-अच्छों को जिसने checkmate कर दिया है, ऐसे Chess के champion विश्वनाथन आनंद, वो अपने अनुभव बतायेंगे। आइये, इस exam में आप checkmate करने का तरीका उन्हीं से सीख लीजिए: -

“Hello, this is Viswanathan Anand. First of all, let me start off by wishing you all the best for your exams. I will next talk a little bit about how I went to my exams and my experiences for that. I found that exams are very much like problems you face later in life. You need to be well rested, get a good night's sleep, you need to be on a full stomach, you should definitely not be hungry and the most important thing is to stay calm. It is very very similar to a game of Chess. When you play, you don't know, which pawn will appear, just like in a class you don't know, which question will appear in an exam. So if you stay calm and you are well nourished and have slept well, then you will find that your brain recalls the right answer at the right moment. So stay calm. It is very important not to put too much pressure on yourself, don't keep your expectations too high. Just see it as a challenge - do I remember what I was taught during the year, can I solve these problems. At the last minute, just go over the most important things and the things you feel, the topics you feel, you don't remember very well. You may also recall some incidents with the teacher or the students, while you are writing an exam and this will help you recall a lot of subject matter. If you revise the questions you find difficult, you will find that they are fresh in your head and when you are writing the exam, you will be able to deal with them much better. So stay calm, get a good night's sleep, don't be over-confident but don't be pessimistic either. I have always found that these exams go much better than you fear before. So stay confident and all the very best to you.”

विश्वनाथन आनंद ने सचमुच में बहुत ही महत्वपूर्ण बात बताई है और आपने भी जब उनको अन्तर्राष्ट्रीय Chess के गेम में देखा होगा, कितनी स्वस्थता से वो बैठे होते हैं और कितने ध्यानस्थ होते हैं। आपने देखा होगा, उनकी आँखें भी इधर-उधर नहीं जाती हैं। कभी हम सुनते थे न, अर्जुन के जीवन की घटना कि पक्षी की आँख पर कैसे उनकी नज़र रहती थी।

बिल्कुल वैसे ही विश्वनाथन को जब खेलते हुए देखते हैं, तो बिल्कुल उनकी आँखें एकदम से बड़ी target पर fix रहती हैं और वो भीतर की शांति की अभिव्यक्ति होती है। ये बात सही है कि कोई कह दे, इसलिये फिर भीतर की शांति आ ही जायेगी, ये तो कहना कठिन है। लेकिन कोशिश करनी चाहिये! हँसते-हँसते क्यों न करें! आप देखिये, आप हँसते रहेंगे, खिलखिलाहट हँसते रहेंगे exam के दिन भी, अपने-आप शांति आना शुरू हो जाएगी। आप दोस्तों से बात नहीं कर रहे हैं या अकेले चल रहे हैं, मुरझाए-मुरझाए चल रहे हैं, ढेर सारी किताबों को last moment भी हिला रहे हैं, तो-तो फिर वो शांत मन हो नहीं सकता है। हँसिए, बहुत हँसते चलिए, साथियों के साथ चुटकले share करते चलिए, आप देखिए, अपने-आप शांति का माहौल खड़ा हो जाएगा।

मैं आपको एक बात छोटी सी समझाना चाहता हूँ। आप कल्पना कीजिये कि एक तालाब के किनारे पर आप खड़े हैं और नीचे बहुत बढ़िया चीज़ें दिखती हैं। लेकिन अचानक कोई पत्थर मार दे पानी में और पानी हिलना शुरू हो जाए, तो नीचे जो बढ़िया दिखता था, वो दिखता है क्या? अगर पानी शांत है, तो चीज़ें कितनी ही गहरी क्यों न हों, दिखाई देती हैं। लेकिन पानी अगर अशांत है, तो नीचे कुछ नहीं दिखता है। आपके भीतर बहुत-कुछ पड़ा हुआ है। साल भर की मेहनत का भण्डार भरा पड़ा है। लेकिन अशांत मन होगा, तो वो खज़ाना आप ही नहीं खोज पाओगे। अगर शांत मन रहा, तो वो आपका खज़ाना बिल्कुल उभर करके आपके सामने आएगा और आपकी exam एकदम सरल हो जायेगी।

मैं एक बात बताऊँ मेरी अपनी - मैं कभी-कभी कोई लेक्चर सुनने जाता हूँ या मुझे सरकार में भी कुछ विषय ऐसे होते हैं, जो मैं नहीं जानता हूँ और मुझे काफी concentrate करना पड़ता है। तो कभी-कभी ज्यादा concentrate करके समझने की कोशिश करता हूँ, तो एक भीतर तनाव महसूस करता हूँ। फिर मुझे लगता है, नहीं-नहीं, थोड़ा relax कर जाऊँगा, तो मुझे अच्छा रहेगा। तो मैंने अपने-आप अपनी technique develop की है। बहुत deep breathing कर लेता हूँ। गहरी साँस लेता हूँ। तीन बार-पांच बार गहरी साँस लेता हूँ, समय तो 30 सेकिंड, 40 सेकिंड, 50 सेकिंड जाता है, लेकिन फिर मेरा मन एकदम से शांत हो करके चीज़ों को समझने के लिए तैयार हो जाता है। हो सकता है, ये मेरा अनुभव हो, आपको भी काम आ सकता है।

रजत अग्रवाल ने एक अच्छी बात बतायी है। वो मेरी App पर लिखते हैं - हम हर दिन कम-से-कम आधा घंटे दोस्तों के साथ, परिवारजनों के साथ relax feel करें। गप्पें मारें। ये बड़ी महत्वपूर्ण बात रजत जी ने बताई है, क्योंकि ज्यादातर हम देखते हैं कि हम जब exam दे करके आते हैं, तो गिनने के लिए बैठ जाते हैं, कितने सही किया, कितना गलत किया। अगर घर में माँ-बाप भी पढ़े लिखे हों और उसमें भी अगर माँ-बाप भी टीचर हों, तो-तो फिर पूरा पेपर फिर से लिखवाते हैं - बताओ, तुमने क्या लिखा, क्या हुआ! सारा जोड़ लगाते हैं, देखो, तुम्हें 40 आएगा कि 80 आएगा, 90 आएगा! आपका दिमाग जो exam हो गयी, उसमें खपा रहता है। आप भी क्या करते हैं, दोस्तों से फ़ोन पर share करते हैं, अरे यार, उसमें तुमने क्या लिखा! अरे यार, उसमें तुम्हारा कैसा गया! अच्छा, तुम्हें क्या लगा। यार, मेरी तो गड़बड़ हो गयी। यार, मैंने तो गलती कर दी। अरे यार, मुझे ये तो मालूम था, लेकिन मुझे याद नहीं आया। हम उसी में फँस जाते हैं। दोस्तो, ये मत कीजिये। exam के समय हो गया, सो हो गया। परिवार के साथ और विषयों पर गप्पें मारिए। पुरानी हँसी-खुशी की यादें ताज़ा कीजिए। कभी माँ-बाप के साथ कहीं गये हों, तो वहाँ के दृश्यों को याद करिए। बिल्कुल उनसे निकल करके ही आधा घंटा बिताइए। रजत जी की बात सचमुच में समझने जैसी है।

दोस्तो, मैं क्या आपको शांति की बात बताऊँ। आज आपको exam देने से पहले एक ऐसे व्यक्ति ने आपके लिए सन्देश भेजा है, वे मूलतः शिक्षक हैं और आज एक प्रकार से संस्कार शिक्षक बने हुए हैं। रामचरितमानस, वर्तमान सन्दर्भ में उसकी व्याख्या करते-करते वो देश और दुनिया में इस संस्कार सरिता को पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे पूज्य मुरारी बापू ने भी विद्यार्थियों के लिए बड़ी महत्वपूर्ण tip भेजी है और वे तो शिक्षक भी हैं, चिन्तक भी हैं और इसलिए उनकी बातों में दोनों का मेल है: -

“मैं मुरारी बापू बोल रहा हूँ। मैं विद्यार्थी भाइयों-बहनों को यही कहना चाहता हूँ कि परीक्षा के समय में मन पर कोई भी बोझ रखे बिना और बुद्धि का एक स्पष्ट निर्णय करके और चित को एकाग्र करके आप परीक्षा में बैठिये और जो स्थिति आई है, उसको स्वीकार कर लीजिए। मेरा अनुभव है कि परिस्थिति को स्वीकार करने से बहुत हम प्रसन्न रह सकते हैं और खुश रह सकते हैं। आपकी परीक्षा में आप निर्भर और प्रसन्नचित आगे बढ़ें, तो ज़रूर सफलता मिलेगी और यदि सफलता न भी मिली, तो भी fail होने की ग्लानि नहीं होगी और सफल होने का गर्व भी होगा। एक शेर कह कर मैं मेरा सन्देश और शुभकामना देता हूँ - लाज़िम नहीं कि हर कोई हो कामयाब ही, जीना भी सीखिए नाकामियों के साथ। हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री का ये जो 'मन की बात' का कार्यक्रम है, उसको मैं बहुत आवाकार देता हूँ। सबके लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामना। धन्यवाद।”

पूज्य मुरारी बापू का मैं भी आभारी हूँ कि उन्होंने बहुत अच्छा सन्देश हम सबको दिया। दोस्तो, आज एक और बात बताना चाहता हूँ। मैं देख रहा हूँ कि इस बार जो मुझे लोगों ने जो अपने अनुभव बताये हैं, उसमें योग की चर्चा अवश्य की है। और ये मेरे लिए खुशी की बात है कि इन दिनों में दुनिया में जिस किसी से मिलता हूँ, थोड़ा-सा भी समय क्यों न मिले, योग की थोड़ी सी बात तो कोई न कोई करता ही करता है। दुनिया के किसी भी देश का व्यक्ति क्यों न हो, भारत का कोई व्यक्ति क्यों न हो, तो मुझे अच्छा लगता है कि योग के संबंध में इतना आकर्षण पैदा हुआ है, इतनी जिज्ञासा पैदा हुई है और देखिये, कितने लोगों ने मुझे मेरे मोबाइल App पर, श्री अतनु मंडल, श्री कुणाल गुप्ता, श्री सुशांत कुमार, श्री के. जी. आनंद, श्री अभिजीत कुलकर्णी, न जाने अनगिनत लोगों ने meditation की बात की है, योग पर बल दिया है। खैर दोस्तो, मैं बिल्कुल ही आज ही कह दूँ, कल सुबह से योग करना शुरू करो, वो तो आपके साथ अन्याय होगा। लेकिन जो योग करते हैं, वो कम से कम exam है इसलिए आज न करें, ऐसा न करें। करते हैं तो करिये। लेकिन ये बात सही है कि विद्यार्थी जीवन में हो या जीवन का उत्तरार्ध हो, अंतर्मन की विकास यात्रा में योग एक बहुत बड़ी चाभी है। सरल से सरल चाभी है। आप ज़रूर उस पर ध्यान दीजिए। हाँ, अगर आप अपने नजदीक में कोई योग के जानकार होंगे, उनको पूछोगे तो exam के दिनों में पहले योग नहीं किया होगा, तो भी दो-चार चीज़ें तो ऐसे बता देंगे, जो आप दो-चार-पाँच मिनट में कर सकते हैं। देखिये, अगर आप कर सकते हैं तो! हाँ, मेरा उसमें विश्वास बहुत है।

मेरे नौजवान साथियो, आपको परीक्षा हॉल में जाने की बड़ी जल्दी होती है। जल्दी-जल्दी पर अपने bench पर बैठ जाने का मन करता है? क्या ये चीज़ें हड़बड़ी में क्यों करें? अपना पूरे दिन का समय का ऐसा प्रबंधन क्यों न करें कि कहीं ट्रैफिक में रुक जाएँ, तो भी समय पर हम पहुँच ही जाएँ। वर्ना ऐसी चीज़ें एक नया तनाव पैदा करती हैं। और एक बात है, हमें जितना समय मिला है, उसमें जो प्रश्नपत्र है, जो instructions हैं, हमें कभी-कभी लगता है कि ये हमारा समय खा जाएगा। ऐसा नहीं है दोस्तो। आप उन instructions को बारीकी से पढ़िए। दो मिनट-तीन मिनट-पाँच मिनट जाएगी, कोई नुकसान नहीं होगा। लेकिन उससे exam में क्या करना है, उसमें कोई गड़बड़ नहीं होगी और बाद में पछतावा नहीं होगा और मैंने देखा है कि कभी-कभार पेपर आने के बाद भी pattern नयी आयी है, ऐसा पता चलता है, लेकिन पढ़ लेते हैं instructions, तो शायद हम अपने आपको बराबर cope-up कर लेते हैं कि हाँ, ठीक है, चलो, मुझे ऐसे ही जाना है। और मैं आपसे आग्रह करूँगा कि भले आपके पाँच मिनट इसमें जाएँ, लेकिन इसको ज़रूर करें।

श्रीमान यश नागर, उन्होंने हमारे मोबाइल App पर लिखा है कि जब उन्होंने पहली बार पेपर पढ़ा, तो उन्हें ये काफी कठिन लगा। लेकिन उसी पेपर को दोबारा आत्मविश्वास के साथ, अब यही पेपर मेरे पास है, कोई नये प्रश्न आने वाले नहीं हैं, मुझे इतने ही प्रश्नों से निपटना है और जब दोबारा मैं सोचने लगा, तो उन्होंने लिखा है कि मैं इतनी आसानी से इस पेपर को समझ गया, पहली बार पढ़ा तो लगा कि ये तो मुझे नहीं आता है, लेकिन वही चीज़ दोबारा पढ़ा, तो मुझे ध्यान में आया कि नहीं-नहीं सवाल दूसरे तरीके से रखा गया है, लेकिन ये तो वही बात है, जो मैं जानता हूँ। प्रश्नों को समझना ये बहुत आवश्यक होता है। प्रश्नों को न समझने से कभी-कभी प्रश्न कठिन लगता है। मैं यश नागर की इस बात पर बल देता हूँ कि आप प्रश्नों को दो बार पढ़ें, तीन बार पढ़ें, चार बार पढ़ें और आप जो जानते हैं, उसके साथ उसको match करने का प्रयास करें। आप देखिये, वो प्रश्न लिखने से पहले ही सरल हो जाएगा।

मेरे लिए आज खुशी की बात है कि भारतरत्न और हमारे बहुत ही सम्मानित वैज्ञानिक सी.एन.आर. राव, उन्होंने धैर्य पर बल दिया है। बहुत ही कम शब्दों में लेकिन बहुत ही अच्छा सन्देश हम सभी विद्यार्थियों को उन्होंने दिया है। आइये, राव साहब का message सुनें:-

“This is C.N.R. Rao from Bangalore. I fully realise that the examinations cause anxiety. That too competitive examinations. Do not worry, do your best. That’s what I tell all my young friends. At the same time remember, that there are many opportunities in this country. Decide what you want to do in life and don’t give it up. You will succeed. Do not forget that you are a child of the universe. You have a right to be here like the trees and the mountains. All you need is doggedness, dedication and tenacity. With these qualities you will succeed in all examinations and all other endeavours. I wish you luck in everything you want to do. God Bless.”

देखा, एक वैज्ञानिक का बात करने का तरीका कैसा होता है। जो बात कहने में मैं आधा घंटा लगाता हूँ, वो बात वो तीन मिनट में कह देते हैं। यही तो विज्ञान की ताकत है और यही तो वैज्ञानिक मन की ताकत है। मैं राव साहब का बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने देश के बच्चों को प्रेरित किया। उन्होंने जो बात कही है - दृढ़ता की, निष्ठा की, तप की, यही बात है - dedication, determination, diligence. डटे रहो, दोस्तो, डटे रहो। अगर आप डटे रहोगे, तो डर भी डरता रहेगा। और अच्छा करने के लिए सुनहरा भविष्य आपका इन्तजार कर रहा है।

अब मेरे App पर एक सन्देश रुचिका डाबस ने अपने exam experience को share किया है। उन्होंने कहा कि उनके परिवार में exam के समय एक positive atmosphere बनाने का लगातार प्रयास होता है और ये चर्चा उनके साथी परिवारों में भी होती थी। सब मिला करके positive वातावरण। ये बात सही है, जैसा सचिन जी ने भी कहा, positive approach, positive frame of mind positive energy को उजागर करता है।

कभी-कभी बहुत सी बातें ऐसी होती हैं कि जो हमें प्रेरणा देती हैं, और ये मत सोचिए कि ये सब विद्यार्थियों को ही प्रेरणा देती हैं। जीवन के किसी भी पड़ाव पर आप क्यों न हों, उत्तम उदाहरण, सत्य घटनाएँ बहुत बड़ी प्रेरणा भी देती हैं, बहुत बड़ी ताकत भी देती हैं और संकट के समय नया रास्ता भी बना देती हैं। हम सब electricity bulb के आविष्कारक थॉमस एलवा एडिसन, हमारे syllabus में उसके विषय में पढ़ते हैं। लेकिन दोस्तो, कभी ये सोचा है, कितने सालों तक उन्होंने इस काम को करने के लिए खपा दिए। कितनी बार विफलताएँ मिली, कितना समय गया, कितने पैसे गए। विफलता मिलने पर कितनी निराशा आयी होगी। लेकिन आज उस electricity, वो bulb हम लोगों की ज़िंदगी को भी तो रोशन करता है। इसी को तो कहते हैं, विफलता में भी सफलता की संभावनाएँ निहित होती हैं।

श्रीनिवास रामानुजन को कौन नहीं जानता है। आधुनिक काल के महानतम गणित विचारकों में से एक नाम -Indian Mathematician. आपको पता होगा, उनका formal कोई education mathematics में नहीं हुआ था, कोई विशेष प्रशिक्षण भी नहीं हुआ था, लेकिन उन्होंने Mathematical analysis, number theory जैसे विभिन्न क्षेत्रों में गहन योगदान किया। अत्यंत कष्ट भरा जीवन, दुःख भरा जीवन, उसके बावजूद भी वो दुनिया को बहुत-कुछ दे करके गए।

जे. के. रॉलिंग एक बेहतरीन उदाहरण हैं कि सफलता कभी भी किसी को भी मिल सकती है। हैरी पॉटर series आज दुनिया भर में लोकप्रिय है। लेकिन शुरू से ऐसा नहीं था। कितनी समस्या उनको झेलनी पड़ी थी। कितनी विफलताएँ आई थीं। रॉलिंग ने खुद कहा था कि मुश्किलों में वो सारी ऊर्जा उस काम में लगाती थीं, जो वाकई उनके लिए मायने रखता था।

Exam आजकल सिर्फ विद्यार्थी की नहीं, पूरे परिवार की और पूरे स्कूल की, teacher की सबकी हो जाती है। लेकिन parents और teachers के support system के बिना अकेला विद्यार्थी, स्थिति अच्छी नहीं है। teacher हो, parents हों, even senior students हों, ये सब मिला करके हम एक टीम बनके, unit बनके समान सोच के साथ, योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ें, तो परीक्षा सरल हो जाती है।

श्रीमान केशव वैष्णव ने मुझे App पर लिखा है, उन्होंने शिकायत की है कि parents ने अपने बच्चों पर अधिक marks मांगने के लिए कभी भी दबाव नहीं बनाना चाहिये। सिर्फ तैयारी करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये। वो relax रहे, इसकी चिंता करनी चाहिये।

विजय जिंदल लिखते हैं, बच्चों पर उनसे अपनी उम्मीदों का बोझ न डालें। जितना हो सके, उनका हौसला बढ़ायें। विश्वास बनाये रखने में सहायता करें। ये बात सही है। मैं आज parents को अधिक कहना नहीं चाहता हूँ। कृपा करके दबाव मत बनाइये। अगर वो अपने किसी दोस्त से बात कर रहा है, तो रोकिये मत। एक हल्का-फुल्का वातावरण बनाइए, सकारात्मक वातावरण बनाइए। देखिये, आपका बेटा हो या बेटी कितना confidence आ जायेगा। आपको भी वो confidence नज़र आयेगा।

दोस्तो, एक बात निश्चित है, खास करके मैं युवा मित्रों से कहना चाहता हूँ। हम लोगों का जीवन, हमारी पुरानी पीढ़ियों से बहुत बदल चुका है। हर पल नया innovation, नई टेक्नोलॉजी, विज्ञान के नित नए रंग-रूप देखने को मिल रहे हैं और हम सिर्फ अभिभूत हो रहे हैं, ऐसा नहीं है। हम उससे जुड़ने का पसंद करते हैं। हम भी विज्ञान की रफ़्तार से आगे बढ़ना चाहते हैं।

मैं ये बात इसलिए कर रहा हूँ, दोस्तो कि आज National Science Day है। National Science Day, देश का विज्ञान महोत्सव हर वर्ष 28 फरवरी हम इस रूप में मनाते हैं। 28 फरवरी, 1928 सर सी.वी. रमन ने अपनी खोज 'रमन इफ़ेक्ट' की घोषणा की थी। यही तो खोज थी, जिसमें उनको नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ और इसलिए देश 28 फरवरी को National Science Day के रूप में मनाता है। जिज्ञासा विज्ञान की जननी है। हर मन में वैज्ञानिक सोच हो, विज्ञान के प्रति आकर्षण हो और हर पीढ़ी को innovation पर बल देना होता है और विज्ञान और टेक्नोलॉजी के बिना innovation संभव नहीं होते हैं। आज National Science Day पर देश में innovation पर बल मिले। ज्ञान, विज्ञान, टेक्नोलॉजी ये सारी बातें हमारी विकास यात्रा के सहज हिस्से बनने चाहिए और इस बार National Science Day का theme है 'Make in India Science and Technology Driven innovations'. सर सी.वी. रमन को मैं नमन करता हूँ और आप सबको विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए आग्रह कर रहा हूँ।

दोस्तो, कभी-कभी सफलताएँ बहुत देर से मिलती हैं और सफलता जब मिलती है, तब दुनिया को देखने का नज़रिया भी बदल जाता है। आप exam में शायद बहुत busy रहे होंगे, तो शायद हो सकता है, बहुत सी खबरे आपके मन में register न हुई हों। लेकिन मैं देशवासियों को भी इस बात को दोहराना चाहता हूँ। आपने पिछले दिनों में सुना होगा कि विज्ञान के विश्व में एक बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण खोज हुई है। विश्व के वैज्ञानिकों ने परिश्रम किया, पीढ़ियाँ आती गईं, कुछ-न-कुछ करती गईं और करीब-करीब 100 साल के बाद एक सफलता हाथ लगी। 'Gravitational Waves' हमारे वैज्ञानिकों के पुरुषार्थ से, उसे उजागर किया गया, detect किया गया। ये विज्ञान की बहुत दूरगामी सफलता है। ये खोज न केवल पिछली सदी के हमारे महान वैज्ञानिक आइन्स्टाइन की theory को प्रमाणित करती है, बल्कि Physics के लिए महान discovery मानी जाती है। ये पूरी मानव-जाति को पूरे विश्व के काम आने वाली बात है, लेकिन एक भारतीय के नाते हम सब को इस बात की खुशी है कि सारी खोज की प्रक्रिया में हमारे देश के सपूत, हमारे देश के होनहार वैज्ञानिक भी उससे जुड़े हुये थे। उनका भी योगदान है। मैं उन सभी वैज्ञानिकों को आज हृदय से बधाई देना चाहता हूँ, अभिनन्दन करना चाहता हूँ। भविष्य में भी इस खोज को आगे बढ़ाने में हमारे वैज्ञानिक प्रयासरत रहेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों में भारत भी

हिस्सेदार बनेगा और मेरे देशवासियों, पिछले दिनों में एक महत्वपूर्ण निर्णय किया है। इसी खोज में और अधिक सफलता पाने के लिए Laser Interferometer Gravitational-Wave Observatory, short में उसको कहते हैं 'LIGO', भारत में खोलने का सरकार ने निर्णय लिया है। दुनिया में दो स्थान पर इस प्रकार की व्यवस्था है, भारत तीसरा है। भारत के जुड़ने से इस प्रक्रिया को और नई ताकत मिलेगी, और नई गति मिलेगी। भारत ज़रूर अपने मर्यादित संसाधनों के बीच भी मानव कल्याण की इस महत्तम वैज्ञानिक खोज की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनेगा। मैं फिर एक बार सभी वैज्ञानिकों को बधाई देता हूँ, शुभकामनायें देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, मैं एक नंबर लिखवाता हूँ आपको, कल से आप missed call करके इस नंबर से मेरी 'मन की बात' सुन सकते हैं, आपकी अपनी मातृभाषा में भी सुन सकते हैं। missed call करने के लिए नंबर है - 81908-81908. मैं दोबारा कहता हूँ 81908-81908.

दोस्तो, आपकी exam शुरू हो रही है। मुझे भी कल exam देनी है। सवा-सौ करोड़ देशवासी मेरी examination लेने वाले हैं। पता है न, अरे भई, कल बजट है! 29 फरवरी, ये Leap Year होता है। लेकिन हाँ, आपने देखा होगा, मुझे सुनते ही लगा होगा, मैं कितना स्वस्थ हूँ, कितना आत्मविश्वास से भरा हुआ हूँ। बस, कल मेरी exam हो जाये, परसों आपकी शुरू हो जाये। और हम सब सफल हों, तो देश भी सफल होगा।

तो दोस्तो, आपको भी बहुत-बहुत शुभकामनायें, ढेर सारी शुभकामनायें। सफलता-विफलता के तनाव से मुक्त हो करके, मुक्त मन से आगे बढ़िये, डटे रहिये। धन्यवाद!

AKT/AK

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

27-March-2016 11:29 IST

Text of PM's "Mann ki Baat" programme on All India Radio

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सब को बहुत-बहुत नमस्कार! आज दुनिया भर में ईसाई समुदाय के लोग Easter मना रहे हैं। मैं सभी लोगों को Easter की ढ़ेरों शुभकामनायें देता हूँ।

मेरे युवा दोस्तो, आप सब एक तरफ़ Exam में busy होंगे। कुछ लोगों की exam पूरी हो गयी होगी। और कुछ लोगों के लिए इसलिए भी कसौटी होगी कि एक तरफ़ exam और दूसरी तरफ़ T-20 Cricket World Cup. आज भी शायद आप भारत और Australia के match का इंतज़ार करते होंगे। पिछले दिनों भारत ने पाकिस्तान और बांग्लादेश के खिलाफ़ दो बेहतरीन match जीते हैं। एक बढ़िया सा momentum नज़र आ रहा है। आज जब Australia और भारत खेलने वाले हैं, मैं दोनों टीमों के players को अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

65 प्रतिशत जनसँख्या नौजवान हो और खेलों की दुनिया में हम खो गए हों! ये तो बात कुछ बनती नहीं है। समय है, खेलों में एक नई क्रांति का दौर का। और हम देख रहे हैं कि भारत में cricket की तरह अब Football, Hockey, Tennis, Kabaddi एक mood बनता जा रहा है। मैं आज नौजवानों को एक और खुशखबरी के साथ, कुछ अपेक्षायें भी बताना चाहता हूँ। आपको शायद इस बात का तो पता चल गया होगा कि अगले वर्ष 2017 में भारत FIFA Under - 17 विश्वकप की मेज़बानी करने जा रहा है। विश्व की 24 टीमों में भारत में खेलने के लिए आ रही हैं। 1951, 1962 Asian Games में भारत ने Gold Medal जीता था और 1956 Olympic Games में भारत चौथे स्थान पर रहा था। लेकिन दुर्भाग्य से पिछले कुछ दशकों में हम निचली पायरी पर ही चलते गए, पीछे ही हटते गए, गिरते ही गए, गिरते ही गए। आज तो FIFA में हमारा ranking इतना नीचे है कि मेरी बोलने की हिम्मत भी नहीं हो रही है। और दूसरी तरफ़ मैं देख रहा हूँ कि इन दिनों भारत में युवाओं की Football में रुचि बढ़ रही है। EPL हो, Spanish League हो या Indian Super League के match हो। भारत का युवा उसके विषय में जानकारी पाने के लिए, TV पर देखने के लिए समय निकालता है। कहने का तात्पर्य यह है कि रुचि तो बढ़ रही है। लेकिन इतना बड़ा अवसर जब भारत में आ रहा है, तो हम सिर्फ़ मेज़बान बन कर के अपनी जिम्मेवारी पूरी करेंगे? इस पूरा वर्ष एक Football, Football, Football का माहौल बना दें। स्कूलों में, कॉलेजों में, हिन्दुस्तान के हर कोने पर हमारे नौजवान, हमारे स्कूलों के बालक पसीने से तर-ब-तर हों। चारों तरफ़ Football खेला जाता हो। ये अगर करेंगे तो फिर तो मेज़बानी का मज़ा आएगा और इसीलिए हम सब की कोशिश होनी चाहिये कि हम Football को गाँव-गाँव, गली-गली कैसे पहुँचाएं। 2017 FIFA Under - 17 विश्वकप एक ऐसा अवसर है इस एक साल के भीतर-भीतर हम चारों तरफ़ नौजवानों के अन्दर Football के लिए एक नया जोम भर दे, एक नया जुत्सा भर दे। इस मेज़बानी का एक फ़ायदा तो है ही है कि हमारे यहाँ Infrastructure तैयार होगा। खेल के लिए जो आवश्यक सुविधाएँ हैं उस पर ध्यान जाएगा। मुझे तो इसका आनंद तब मिलेगा जब हम हर नौजवान को Football के साथ जोड़ेंगे।

दोस्तो, मैं आप से एक अपेक्षा करता हूँ। 2017 की ये मेज़बानी, ये अवसर कैसा हो, साल भर का हमारा Football में momentum लाने के लिए कैसे-कैसे कार्यक्रम हो, प्रचार कैसे हो, व्यवस्थाओं में सुधार कैसे हो, FIFA Under - 17 विश्वकप के माध्यम से भारत के नौजवानों में खेल के प्रति रुचि कैसे बढ़े, सरकारों में, शैक्षिक संस्थाओं में, अन्य सामाजिक संगठनों में, खेल के साथ जुड़ने की स्पर्धा कैसे खड़ी हो? Cricket में हम सभी देख पा रहे हैं, लेकिन यही चीज़ और खेलों में भी लानी है। Football एक अवसर है। क्या आप मुझे अपने सुझाव दे सकते हैं? वैश्विक स्तर पर भारत का

branding करने के लिए एक बहुत बड़ा अवसर मैं मानता हूँ। भारत की युवा शक्ति की पहचान कराने का अवसर मानता हूँ। Match के दरमियाँ क्या पाया, क्या खोया उस अर्थ में नहीं। इस मेज़बानी की तैयारी के द्वारा भी, हम अपनी शक्ति को सजो सकते हैं, शक्ति को प्रकट भी कर सकते हैं और हम भारत का Branding भी कर सकते हैं। क्या आप मुझे NarendraModiApp, इस पर अपने सुझाव भेज सकते हैं क्या? Logo कैसा हो, slogans कैसे हो, भारत में इस बात को फैलाने के लिए क्या क्या तरीके हों, गीत कैसे हों, souvenirs बनाने हैं तो किस-किस प्रकार के souvenirs बन सकते हैं। सोचिए दोस्तो, और मैं चाहूँगा कि मेरा हर नौजवान ये 2017, FIFA, Under- 17 विश्व Cup का Ambassador बने। आप भी इसमें शरीक होइए, भारत की पहचान बनाने का सुनहरा अवसर है।

मेरे प्यारे विद्यार्थियों, छुट्टियों के दिनों में आपने पर्यटन के लिए सोचा ही होगा। बहुत कम लोग हैं जो विदेश जाते हैं लेकिन ज्यादातर लोग अपने-अपने राज्यों में 5 दिन, 7 दिन कहीं चले जाते हैं। कुछ लोग अपने राज्यों से बाहर जाते हैं। पिछली बार भी मैंने आप लोगों से एक आग्रह किया था कि आप जहाँ जाते हैं वहाँ से फोटो upload कीजिए। और मैंने देखा कि जो काम Tourism Department नहीं कर सकता, जो काम हमारा Cultural Department नहीं कर सकता, जो काम राज्य सरकारें, भारत सरकार नहीं कर सकती, वो काम देश के करोड़ों-करोड़ों ऐसे प्रवासियों ने कर दिया था। ऐसी-ऐसी जगहों के फोटो upload किये गए थे कि देख कर के सचमुच में आनंद होता था। इस काम को हमें आगे बढ़ाना है इस बार भी कीजिये, लेकिन इस बार उसके साथ कुछ लिखिए। सिर्फ़ फोटो नहीं! आपकी रचनात्मक जो प्रवृत्ति है उसको प्रकट कीजिए और नई जगह पर जाने से, देखने से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। जो चीजें हम classroom में नहीं सीख पाते, जो हम परिवार में नहीं सीख पाते, जो चीज हम यार-दोस्तों के बीच में नहीं सीख पाते, वे कभी-कभी भ्रमण करने से ज्यादा सीखने को मिलती है और नई जगहों के नयेपन का अनुभव होता है। लोग, भाषा, खान-पान वहाँ के रहन-सहन न जाने क्या-क्या देखने को मिलता है। और किसी ने कहा है - 'A traveller without observation. is a bird without wings' 'शौक-ए-दीदार है अगर, तो नज़र पैदा कर'। भारत विविधताओं से भरा हुआ है। एक बार देखने के लिए निकल पड़ो जीवन भर देखते ही रहोगे, देखते ही रहोगे! कभी मन नहीं भरेगा और मैं तो भाग्यशाली हूँ मुझे बहुत भ्रमण करने का अवसर मिला है। जब मुख्यमंत्री नहीं था, प्रधानमंत्री नहीं था और आपकी ही तरह छोटी उम्र थी, मैंने बहुत भ्रमण किया। शायद हिन्दुस्तान का कोई District नहीं होगा, जहाँ मुझे जाने का अवसर न मिला हो। ज़िन्दगी को बनाने के लिए प्रवास की एक बहुत बड़ी ताकत होती है और अब भारत के युवकों में प्रवास में साहस जुड़ता चला जा रहा है। जिज्ञासा जुड़ती चली जा रही है। पहले की तरह वो रटे-रटाये, बने-बनाये उसी route पर नहीं चला जाता है, वो कुछ नया करना चाहता है, वो कुछ नया देखना चाहता है। मैं इसे एक अच्छी निशानी मानता हूँ। हमारा युवा साहसिक हो, जहाँ कभी पैर नहीं रखा है, वहाँ पैर रखने का उसका मन होना चाहिए।

मैं Coal India को एक विशेष बधाई देना चाहता हूँ। Western Coalfields Limited (WCL), नागपुर के पास एक सावनेर, जहाँ Coal Mines हैं। उस Coal Mines में उन्होंने Eco friendly Mine Tourism Circuit develop किया है। आम तौर पर हम लोगों की सोच है कि Coal Mines - यानि दूर ही रहना। वहाँ के लोगों की तस्वीरें जो हम देखते हैं तो हमें लगता है वहाँ जाने जैसा क्या होगा और हमारे यहाँ तो कहावत भी रहती है कि कोयले में हाथ काले, तो लोग यूँ ही दूर भागते हैं। लेकिन उसी कोयले को Tourism का destination बना देना और मैं खुश हूँ कि अभी-अभी तो ये शुरुआत हुई है और अब तक करीब दस हजार से ज्यादा लोगों ने नागपुर के पास सावनेर गाँव के निकट ये Eco friendly Mine Tourism की मुलाकात की है। ये अपने आप में कुछ नया देखने का अवसर देती है। मैं आशा करता हूँ कि इन छुट्टियों में जब प्रवास पर जाएँ तो स्वच्छता में आप कुछ योगदान दे सकते हैं क्या?

इन दिनों एक बात नज़र आ रही है, भले वो कम मात्रा में हो अभी भी आलोचना करनी है तो अवसर भी है लेकिन फिर भी अगर हम ये कहें कि एक जागरूकता आई है। Tourist places पर लोग स्वच्छता बनाये रखने का प्रयास कर रहे हैं। Tourist भी कर रहे हैं और जो tourist destination के स्थान पर स्थाई रूप से रहने वाले लोग भी कुछ न कुछ कर रहे हैं। हो सकता है बहुत वैज्ञानिक तरीके से नहीं हो रहा? लेकिन हो रहा है। आप भी एक tourist के नाते 'tourist

destination पर स्वच्छता' उस पर आप बल दे सकते हैं क्या? मुझे विश्वास है मेरे नौजवान मुझे इसमें जरूर मदद करेंगे। और ये बात सही है कि tourism सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला क्षेत्र है। गरीब से गरीब व्यक्ति कमाता है और जब tourist, tourist destination पर जाता है। गरीब tourist जाएगा तो कुछ न कुछ तो लेगा। अमीर होगा तो ज्यादा खर्चा करेगा। और tourism के द्वारा बहुत रोजगार की संभावना है। विश्व की तुलना में भारत tourism में अभी बहुत पीछे है। लेकिन हम सवा सौ करोड़ देशवासी हम तय करें कि हमें अपने tourism को बल देना है तो हम दुनिया को आकर्षित कर सकते हैं। विश्व के tourism के एक बहुत बड़े हिस्से को हमारी ओर आकर्षित कर सकते हैं और हमारे देश के करोड़ों-करोड़ों नौजवानों को रोजगार के अवसर उपलब्ध करा सकते हैं। सरकार हो, संस्थाएँ हों, समाज हो, नागरिक हो हम सब ने मिल करके ये करने का काम है। आइये हम उस दिशा में कुछ करने का प्रयास करें।

मेरे युवा दोस्तो, छुट्टियाँ ऐसे ही आ कर चला जाएं, ये बात मुझे अच्छी नहीं लगती। आप भी इस दिशा में सोचिए। क्या आपकी छुट्टियाँ, ज़िन्दगी के महत्वपूर्ण वर्ष और उसका भी महत्वपूर्ण समय ऐसे ही जाने दोगे क्या? मैं आपको सोचने के लिए एक विचार रखता हूँ। क्या आप छुट्टियों में एक हुनर, अपने व्यक्तित्व में एक नई चीज़ जोड़ने का संकल्प, ये कर सकते हैं क्या? अगर आपको तैरना नहीं आता है, तो छुट्टियों में संकल्प कर सकते हैं, मैं तैरना सीख लूँ, साइकिल चलाना नहीं आता है तो छुट्टियों में तय कर लूँ मैं साइकिल चलाऊँ। आज भी मैं दो उंगली से कंप्यूटर को टाइप करता हूँ, तो क्या मैं टाइपिंग सीख लूँ? हमारे व्यक्तित्व के विकास के लिए कितने प्रकार के कौशल हैं? क्यों ना उसको सीखें? क्यों न हमारी कुछ कमियों को दूर करें? क्यों न हम अपनी शक्तियों में इजाफ़ा करें। अब सोचिए और कोई उसमें बहुत बड़े classes चाहिए कोई trainer चाहिए, बहुत बड़ी fees चाहिए, बड़ा budget चाहिए ऐसा नहीं है। आप अपने अगल-बगल में भी मान लीजिये आप तय करें कि मैं waste में से best बनाऊँगा। कुछ देखिये और उसमें से बनाना शुरू कर दीजिये। देखिये आप को आनंद आयेगा शाम होते-होते देखिये ये कूड़े-कचरे में से आपने क्या बना दिया। आप को painting का शौक है, आता नहीं है, अरे तो शुरू कर दीजिये ना, आ जायेगा। आप अपनी छुट्टियों का समय अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए, अपने पास कोई एक नए हुनर के लिए, अपने कौशल-विकास के लिए अवश्य करें और अनगिनत क्षेत्र हो सकते हैं जरूरी नहीं है, कि मैं जो गिना रहा हूँ वही क्षेत्र हो सकते हैं। और आपके व्यक्तित्व की पहचान उससे और उससे आप का आत्मविश्वास इतना बढ़ेगा इतना बढ़ेगा। एक बार देख लीजिये जब छुट्टियों के बाद स्कूल में वापिस जाओगे, कॉलेज में वापिस जाओगे और अपने साथियों को कहोगे कि भाई मैंने तो छुट्टियों में ये सीख लिया और अगर उसने नहीं सिखा होगा, तो वो सोचेगा कि यार मेरा तो बर्बाद हो गया तुम बड़े पक्के हो यार कुछ करके आ गए। ये अपने साथियों में शायद बात होगी। मुझे विश्वास है कि आप जरूर करेंगे। और मुझे बताइए कि आप ने क्या सीखा। बतायेंगे ना!। इस बार 'मन की बात' में My-gov पर कई सुझाव आये हैं।

'मेरा नाम अभि चतुर्वेदी है। नमस्ते प्रधानमंत्री जी, आपने पिछले गर्मियों की छुट्टियों में बोला कि चिड़ियों को भी गर्मी लगती है, तो हमने एक बर्तन में पानी में रखकर अपनी बालकोनी में या छत पर रख देना चाहिये, जिससे चिड़िया आकर पानी पी लें। मैंने ये काम किया और मेरे को आनंद आया, इसी बहाने मेरी बहुत सारी चिड़ियों से दोस्ती हो गयी। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप इस कार्य को वापस 'मन की बात' में दोहराएँ।'

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं अभि चतुर्वेदी का आभारी हूँ इस बालक ने मुझे याद कराया वैसे मैं भूल गया था। और मेरे मन में नहीं था कि आज मैं इस विषय पर कुछ कहूँगा लेकिन उस अभि ने मुझे याद करवाया कि पिछले वर्ष मैंने पक्षियों के लिए घर के बाहर मिट्टी के बर्तन में। मेरे प्यारे देशवासियो मैं अभि चतुर्वेदी एक बालक का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। उसने मुझे फोन करके एक अच्छा काम याद करवा दिया। पिछली बार तो मुझे याद था। और मैंने कहा था कि गर्मियों के दिनों में पक्षियों के लिए अपने घर के बाहर मिट्टी के बर्तनों में पानी रखे। अभि ने मुझे बताया कि वो साल भर से इस काम को कर रहा है। और उसकी कई चिड़िया उसकी दोस्त बन गई है। हिन्दी की महान कवि महादेवी वर्मा वो पक्षियों को बहुत प्यार करती थीं। उन्होंने अपनी कविता में लिखा था - तुझको दूर न जाने देंगे, दानों से आंगन भर देंगे और होद में भर देंगे हम मीठा-मीठा ठंडा पानी। आइये महादेवी जी की इस बात को हम भी करें। मैं अभि को अभिनन्दन भी देता हूँ

और आभार भी व्यक्त करता हूँ कि तुमने मुझको बहुत महत्वपूर्ण बात याद कराई।

मैसूर से शिल्पा कूके, उन्होंने एक बड़ा संवेदनशील मुद्दा हम सब के लिए रखा है। उन्होंने कहा है कि हमारे घर के पास दूध बेचने वाले आते हैं, अखबार बेचने वाले आते हैं, Postman आते हैं। कभी कोई बर्तन बेचने वाले वहाँ से गुजरते हैं, कपड़े बेचने वाले गुजरते हैं। क्या कभी हमने उनको गर्मियों के दिनों में पानी के लिए पूछा है क्या? क्या कभी हमने उसको पानी offer किया है क्या? शिल्पा मैं आप का बहुत आभारी हूँ आपने बहुत संवेदनशील विषय को बड़े सामान्य सरल तरीके से रख दिया। ये बात सही है बात छोटी होती है लेकिन गर्मी के बीच अगर postman घर के पास आया और हमने पानी पिलाया कितना अच्छा लगेगा उसको। खैर भारत में तो ये स्वाभाव है ही है। लेकिन शिल्पा मैं आभारी हूँ कि तुमने इन चीजों को observe किया।

मेरे प्यारे किसान भाइयो और बहनो, Digital India - Digital India आपने बहुत सुना होगा। कुछ लोगों को लगता है कि Digital India तो शहर के नौजवानों की दुनिया है। जी नहीं, आपको खुशी होगी कि एक "किसान सुविधा App" आप सब की सेवा में प्रस्तुत किया है। ये "किसान सुविधा App" के माध्यम से अगर आप उसको अपने Mobile-Phone में download करते हैं तो आपको कृषि सम्बन्धी, weather सम्बन्धी बहुत सारी जानकारियाँ अपनी हथेली में ही मिल जाएगी। बाज़ार का हाल क्या है, मंडियों में क्या स्थिति है, इन दिनों अच्छी फसल का क्या दौर चल रहा है, दवाइयाँ कौन-सी उपयुक्त होती हैं? कई विषय उस पर है। इतना ही नहीं इसमें एक बटन ऐसा है कि जो सीधा-सीधा आपको कृषि वैज्ञानिकों के साथ जोड़ देता है, expert के साथ जोड़ देता है। अगर आप अपना कोई सवाल उसके सामने रखोगे तो वो जवाब देता है, समझाता है, आपको। मैं आशा करता हूँ कि मेरे किसान भाई-बहन इस "किसान सुविधा App" को अपने Mobile-Phone पर download करें। try तो कीजिए उसमें से आपके काम कुछ आता है क्या? और फिर भी कुछ कमी महसूस होती है तो आप मुझे शिकायत भी कर दीजिये।

मेरे किसान भाइयो और बहनों, बाकियों के लिए तो गर्मी छुट्टियों के लिए अवसर रहा है। लेकिन किसान के लिए तो और भी पसीना बहाने का अवसर बन जाता है। वो वर्षा का इंतजार करता है और इंतजार के पहले किसान अपने खेत को तैयार करने के लिए जी-जान से जुट जाता है, ताकि वो बारिश की एक बूंद भी बर्बाद नहीं होने देना चाहता है। किसान के लिए, किसानों के season शुरू होने का समय बड़ा ही महत्वपूर्ण होता है। लेकिन हम देशवासियों को भी सोचना होगा कि पानी के बिना क्या होगा? क्या ये समय हम अपने तालाब, अपने यहाँ पानी बहने के रास्ते तालाबों में पानी आने के जो मार्ग होते हैं जहाँ पर कूड़ा-कचरा या कुछ न कुछ encroachment हो जाता तो पानी आना बंद हो जाता है और उसके कारण जल-संग्रह धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। क्या हम उन पुरानी जगहों को फिर से एक बार खुदाई करके, सफाई करके अधिक जल-संचय के लिए तैयार कर सकते हैं क्या? जितना पानी बचायेंगे तो पहली बारिश में भी अगर पानी बचा लिया, तालाब भर गए, हमारे नदी नाले भर गए तो कभी पीछे बारिश रूठ भी जाये तो हमारा नुकसान कम होता है।

इस बार आपने देखा होगा 5 लाख तालाब, खेत-तालाब बनाने का बीड़ा उठाया है। मनरेगा से भी जल-संचय के लिए assets create करने की तरफ बल दिया है। गाँव-गाँव पानी बचाओ, आने वाली बारिश में बूँद-बूँद पानी कैसे बचाएँ। गाँव का पानी गाँव में रहे, ये अभियान कैसे चलायें, आप योजना बनाइए, सरकार की योजनाओं से जुड़िए ताकि एक ऐसा जन-आंदोलन खड़ा करें, ताकि हम पानी से एक ऐसा जन-आन्दोलन खड़ा करें जिसके पानी का माहत्म्य भी समझें और पानी संचय के लिए हर कोई जुड़े। देश में कई ऐसे गाँव होंगे, कई ऐसे प्रगतिशील किसान होंगे, कई ऐसे जागरूक नागरिक होंगे जिन्होंने इस काम को किया होगा। लेकिन फिर भी अभी और ज्यादा करने की आवश्यकता है।

मेरे किसान भाइयो-बहनों, मैं एक बार आज फिर से दोहराना चाहता हूँ। क्योंकि पिछले दिनों भारत सरकार ने एक बहुत बड़ा किसान मेला लगाया था और मैंने देखा कि क्या-क्या आधुनिक technology आई है, और कितना बदलाव आया है, कृषि क्षेत्र में, लेकिन फिर भी उसे खेतों तक पहुँचाना है और अब किसान भी कहने लगा है कि भई अब तो fertilizer कम

करना है। मैं इसका स्वागत करता हूँ। अधिक fertilizer के दुरुपयोग ने हमारी धरती माँ को बीमार कर दिया है और हम धरती माँ के बेटे हैं, सन्तान हैं हम अपनी धरती माँ को बीमार कैसे देख सकते हैं। अच्छे मसाले डालें तो खाना कितना बढ़िया बनता है, लेकिन अच्छे से अच्छे मसाले भी अगर ज्यादा मात्रा में दाल दें तो वो खाना खाने का मन करता है क्या? वही खाना बुरा लगता है न? ये fertilizer का भी ऐसा ही है, कितना ही उत्तम fertilizer क्यों न हो, लेकिन हद से ज्यादा fertilizer का उपयोग करेंगे तो वो बर्बादी का कारण बन जायेगा। हर चीज़ balance होनी चाहिये और इससे खर्चा भी कम होगा, पैसे आपके बचेंगे। और हमारा तो मत है - कम cost ज्यादा output, "कम लागत, ज्यादा पावत", इसी मंत्र को लेकर चलना चाहिए और वैज्ञानिक तौर-तरीकों से हम अपने कृषि को आगे बढ़ाना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि जल संचय में जो भी आवश्यक काम करना पड़े, हमारे पास एक-दो महीने हैं बारिश आने तक, हम पूरे मनोयोग से इसको करें। जितना पानी बचेगा किसानों को उतना ही ज्यादा लाभ होगा, जिन्दगी उतनी ही ज्यादा बचेगी।

मेरे प्यारे देशवासियों, 7 अप्रैल को 'World Health Day' है और इस बार दुनिया ने 'World Health Day' को 'beat Diabetes' इस theme पर केन्द्रित किया है। diabetes को परास्त करिए। Diabetes एक ऐसा मेजबान है कि वो हर बीमारी की मेजबानी करने के लिए आतुर रहता है। एक बार अगर diabetes घुस गया तो उसके पीछे ढेर सारे बीमारी कुरूपी मेहमान अपने घर में, शरीर में घुस जाते हैं। कहते हैं 2014 में भारत में करीब साढ़े छः करोड़ diabetes के मरीज थे। 3 प्रतिशत मृत्यु का कारण कहते हैं कि diabetes पाया गया। और diabetes के दो प्रकार होते हैं एक Type-1, Type-2. Type- 1 में वंशगत रहता है, hereditary है, माता-पिता को है इसलिए बालक को होता है। और Type-2 आदतों के कारण, उम्र के कारण, मोटापे के कारण। हम उसको निमंत्रण देकर के बुलाते हैं। दुनिया diabetes से चिंतित है, इसलिए 7 तारीक को 'World Health Day' में इसको theme रखा गया है। हम सब जानते हैं कि हमारी life style उसके लिए सबसे बड़ा कारण है। शरीरिक श्रम कम हो रहा है। पसीने का नाम-ओ-निशान नहीं है, चलना-फिरना हो नहीं रहा है। खेल भी खेलेंगे तो online खेलते हैं, off-line कुछ नहीं हो रहा है। क्या हम, 7 तारीख से कुछ प्रेरणा ले कर के अपने निजी जीवन में diabetes को परास्त करने के लिए कुछ कर सकते हैं क्या? आपको योग में रुचि है तो योग कीजिए नहीं तो कम से कम दौड़ने चलने के लिए तो जाइये। अगर मेरे देश का हर नागरिक स्वस्थ होगा तो मेरा भारत भी तो स्वस्थ होगा। कभी कबार हम संकोचवश medical check-up नहीं करवाते हैं। और फिर बहुत बुरे हाल होने के बाद ध्यान में आता है कि ओह... हो... मेरा तो बहुत पुराना diabetes था। Check करने में क्या जाता है इतना तो कर लीजिये और अब तो सारी बातें उपलब्ध हैं। बहुत आसानी से हो जाती हैं। आप ज़रूर उसकी चिंता कीजिए।

24 मार्च को दुनिया ने TB Day मनाया। हम जानते हैं, जब मैं छोटा था तो TB का नाम सुनते ही डर जाते थे। ऐसा लगता था कि बस अब तो मौत आ गयी। लेकिन अब TB से डर नहीं लगता है। क्योंकि सबको मालूम है कि TB का उपचार हो सकता है, और आसानी से हो सकता है। लेकिन जब TB और मौत जुड़ गए थे तो हम डरते थे लेकिन अब TB के प्रति हम बेपरवाह हो गए हैं। लेकिन दुनिया की तुलना में TB के मरीजों की संख्या बहुत है। TB से अगर मुक्ति पानी है तो एक तो correct treatment चाहिये और complete treatment चाहिये। सही उपचार हो और पूरा उपचार हो। बीच में से छोड़ दिया तो वो मुसीबत नई पैदा कर देता है। अच्छा TB तो एक ऐसी चीज़ है कि अड़ोस-पड़ोस के लोग भी तय कर सकते हैं कि अरे भई check करो देखो, TB हो गया होगा। खासी आ रही है, बुखार रहता है, वज़न कम होने लगता है। तो अड़ोस-पड़ोस को भी पता चल जाता है कि देखो यार कहीं उसको TB-VB तो नहीं हुआ। इसका मतलब हुआ कि ये बीमारी ऐसी है कि जिसको जल्द जाँच की जा सकती है।

मेरे प्यारे देशवासियों, इस दिशा में बहुत काम हो रहा है। तेरह हज़ार पांच सौ से अधिक Microscopy Centre हैं। चार लाख से अधिक DOT provider हैं। अनेक advance labs हैं और सारी सेवाएँ मुफ्त में हैं। आप एक बार जाँच तो करा लीजिए। और ये बीमारी जा सकती है। बस सही उपचार हो और बीमारी नष्ट होने तक उपचार जारी रहे। मैं आपसे आग्रह करूँगा कि चाहे TB हो या Diabetes हो हमें उसे परास्त करना है। भारत को हमें इन बीमारियों से मुक्ति दिलानी है। लेकिन ये सरकार, डॉक्टर, दवाई से नहीं होता है जब तक की आप न करें। और इसलिए मैं आज मेरे देशवासियों से आग्रह

करता हूँ कि हम diabetes को परास्त करें। हम TB से मुक्ति पायें।

मेरे प्यारे देशवासियो, अप्रैल महीने में कई महत्वपूर्ण अवसर आ रहे हैं। विशेष कर 14 अप्रैल भीमराव बाबा साहिब अम्बेडकर का जन्मदिन। उनकी 125वीं जयंती साल भर पूरे देश में मनाई गयी। एक पंचतीर्थ, मऊ उनका जन्म स्थान, London में उनकी शिक्षा हुई, नागपुर में उनकी दीक्षा हुई, 26-अलीपुर रोड, दिल्ली में उनका महापरिनिर्वाण हुआ और मुंबई में जहाँ उनका अन्तिम संस्कार हुआ वो चैत्य भूमि। इन पाँचों तीर्थ के विकास के लिए हम लगातार कोशिश कर रहे हैं। मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस वर्ष 14 अप्रैल को मुझे बाबा साहिब अम्बेडकर की जन्मस्थली मऊ जाने का सौभाग्य मिल रहा है। एक उत्तम नागरिक बनने के लिए बाबा साहिब ने हमने बहुत कुछ दिया है। उस रास्ते पर चल कर के एक उत्तम नागरिक बन कर के उनको हम बहुत बड़ी श्रधांजलि दे सकते हैं।

कुछ ही दिनों में, विक्रम संवत् की शुरुआत होगी। नया विक्रम संवत् आएगा। अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग रूप से मनाया जाता है। कोई इसे नव संवत्सर कहता है, कोई गुड़ी-पड़वा कहता है, कोई वर्ष प्रतिप्रता कहता है, कोई उगादी कहता है। लेकिन हिन्दुस्तान के करीब-करीब सभी क्षेत्रों में इसका महात्म्य है। मेरी नव वर्ष के लिए सब को बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं।

आप जानते हैं, मैं पिछली बार भी कहा था कि मेरे 'मन की बात' को सुनने के लिए, कभी भी सुन सकते हैं। करीब-करीब 20 भाषाओं में सुन सकते हैं। आपके अपने समय पर सुन सकते हैं। आपके अपने मोबाइल फ़ोन पर सुन सकते हैं। बस सिर्फ आपको एक missed call करना होता है। और मुझे खुशी है कि इस सेवा का लाभ अभी तो एक महीना बड़ी मुश्किल से हुआ है। लेकिन 35 लाख लोगों ने इसका फायदा उठाया। आप भी नंबर लिख लीजिये 81908-81908. मैं repeat करता हूँ 81908-81908. आप missed call करिए और जब भी आपकी सुविधा हो पुरानी 'मन की बात' भी सुनना चाहते हो तो भी सुन सकते हो, आपकी अपनी भाषा में सुन सकते हो। मुझे खुशी होगी आपके साथ जुड़े रहने की।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपको बहुत-बहुत शुभकामनायें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/AK

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

25-अप्रैल-2016 17:45 IST

प्रधानमंत्री का आकाशवाणी पर प्रसारित 'मन की बात' कार्यक्रम का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सबको नमस्कार। छुट्टियों में कई कार्यक्रम हर कोई बनाता है। और छुट्टियों में आम का season होता है, तो ये भी मन करता है कि आम का मज़ा लें और कभी ये भी मन करता है कि कुछ पल दोपहर को सोने का मौका मिल जाए, तो अच्छा होगा। लेकिन इस बार की भयंकर गर्मी ने चारों तरफ सारा मज़ा किरकिरा कर दिया है। देश में चिंता होना बहुत स्वाभाविक है और उसमें भी, जब लगातार सूखा पड़ता है, तो पानी-संग्रह के जो स्थान होते हैं, वो भी कम पड़ जाते हैं। कभी-कभार encroachment के कारण, silting के कारण, पानी आने के जो प्रवाह हैं, उसमें रुकावटों के कारण, जलाशय भी अपनी क्षमता से काफी कम पानी संग्रहीत करते हैं और सालों के क्रम के कारण उसकी संग्रह-क्षमता भी कम हो जाती है। सूखे से निपटने के लिए पानी के संकट से राहत के लिए सरकारें अपना प्रयास करें, वो तो है, लेकिन मैंने देखा है कि नागरिक भी बहुत ही अच्छे प्रयास करते हैं। कई गाँवों में जागरूकता देखी जाती है और पानी का मूल्य क्या है, वो तो वही जानते हैं, जिन्होंने पानी की तकलीफ झेली है। और इसलिए ऐसी जगह पर, पानी के संबंध में एक संवेदनशीलता भी होती है और कुछ-न-कुछ करने की सक्रियता भी होती है। मुझे कुछ दिन पहले कोई बता रहा था कि महाराष्ट्र के अहमदनगर ज़िले के हिवरे बाज़ार ग्राम पंचायत और वहाँ के गाँव वालों ने पानी को गाँव के एक बहुत बड़े संवेदनशील Issue के रूप में address किया। जल संचय करने की इच्छा करने वाले तो कई गाँव मिल जाते हैं, लेकिन इन्होंने तो किसानों के साथ बातचीत करके पूरी cropping pattern बदल दी। ऐसी फसल, जो सबसे ज्यादा पानी उपयोग करती थी, चाहे गन्ना हो, केला हो, ऐसी फसलों को छोड़ने का निर्णय कर लिया। सुनने में बात बहुत सरल लगती है, लेकिन इतनी सरल नहीं है। सबने मिल करके कितना बड़ा संकल्प किया होगा? किसी कारखाना वाला पानी का उपयोग करता हो, कहोगे, तुम कारखाना बंद करो, क्योंकि पानी ज्यादा लेते हो, तो क्या परिणाम आएगा, आप जानते हैं। लेकिन ये मेरे किसान भाई, देखिए, उनको लगा कि भाई, गन्ना बहुत पानी लेता है, तो गन्ना छोड़ो, उन्होंने छोड़ दिया। और पूरा उन्होंने fruit और vegetable, जिसमें कम-से-कम पानी की ज़रूरत पड़ती है, ऐसी फसलों पर चले गए। उन्होंने sprinkler, drip Irrigation, टपक सिंचाई, water harvesting, water recharging - इतने सारे Initiative लिये कि आज गाँव पानी के संकट के सामने जूझने के लिए अपनी ताकत पर खड़ा हो गया। ठीक है, मैं एक छोटे से गाँव हिवरे बाज़ार की चर्चा भले करता हूँ, लेकिन ऐसे कई गाँव होंगे। मैं ऐसे सभी गाँववासियों को भी बहुत-बहुत बधाई देता हूँ आपके इस उत्तम काम के लिए।

मुझे किसी ने बताया कि मध्य प्रदेश में देवास ज़िले में गोरवा गाँव पंचायत। पंचायत ने प्रयत्न करके farm pond बनाने का अभियान चलाया। करीब 27 farm ponds बनाए और उसके कारण ground water level में बढ़ोतरी हुई, पानी ऊपर आया। जब भी पानी की ज़रूरत पड़ी फसल को, पानी मिला और वो मोटा-मोटा हिसाब बताते थे, करीब उनकी कृषि उत्पादन में 20 प्रतिशत वृद्धि हुई। तो पानी तो बचा ही बचा और जब पानी का water table ऊपर आता है, तो पानी की quality में भी बहुत सुधार होता है। और दुनिया में ऐसा कहते हैं, शुद्ध पीने का पानी GDP growth का कारण बन जाता है, स्वास्थ्य का तो बनता ही बनता है। कभी-कभार तो लगता है कि जब भारत सरकार रेलवे से पानी लातूर पहुँचाती है, तो दुनिया के लिए वो एक खबर बन जाती है। ये बात सही है कि जिस तेज़ी से railway ने काम किया, वो बधाई की पात्र तो है, लेकिन वो गाँव वाले भी उतने ही बधाई के पात्र हैं। मैं तो कहूँगा, उससे भी ज्यादा बधाई के पात्र हैं। लेकिन ऐसी अनेक योजनाएँ, नागरिकों के द्वारा चलती हैं, वो कभी सामने नहीं आती हैं। सरकार की अच्छी बात तो कभी-कभी सामने आ भी जाती है, लेकिन कभी हम अपने अगल-बगल में देखेंगे, तो ध्यान में आएगा कि सूखे के खिलाफ़ किस-किस प्रकार से लोग, नये-नये तौर-तरीके से, समस्या के समाधान के लिए प्रयास करते रहते हैं।

मनुष्य का स्वभाव है, कितने ही संकट से गुजरता हो, लेकिन कहीं से कोई अच्छी खबर आ जाए, तो जैसे पूरा संकट दूर हो गया, ऐसा feel होता है। जब से ये जानकारी सार्वजनिक हुई कि इस बार वर्षा 106 प्रतिशत से 110 प्रतिशत तक होने की संभावना है, जैसे मानो एक बहुत बड़ा शान्ति का सन्देश आ गया हो। अभी तो वर्षा आने में समय है, लेकिन अच्छी वर्षा की खबर भी एक नयी चेतना ले आयी।

लेकिन मेरे प्यारे देशवासियो, अच्छी वर्षा होगी, ये समाचार जितना आनंद देता है, उतना ही हम सबके लिए एक अवसर भी देता है, चुनौती भी देता है। क्या हम गाँव-गाँव पानी बचाने के लिये, एक अभी से अभियान चला सकते हैं! किसानों को

मिट्टी की जरूरत पड़ती है, खेत में वो फसल के नाते काम आती है। क्यों न हम इस बार गाँव के तालाबों से मिट्टी उठा-उठा करके खेतों में ले जाएँ, तो खेत की ज़मीन भी ठीक होगी, तो उसकी जल-संचय की ताकत भी बढ़ जायेगी। कभी सीमेंट के बोरे में, कभी fertilizer के खाली बोरे में, पत्थर और मिट्टी भरके जहाँ से पानी जाने के रास्ते हैं, उस पानी को रोका जा सकता है क्या? पाँच दिन पानी रुकेगा, सात दिन पानी रुकेगा, तो पानी ज़मीन में जाएगा। तो ज़मीन में पानी के level ऊपर आयेंगे। हमारे कुओं में पानी आएगा। जितना पानी हो सकता है, रोकना चाहिए। वर्षा का पानी, गाँव का पानी गाँव में रहेगा, ये अगर हम संकल्प करके कुछ न कुछ करें और ये सामूहिक प्रयत्नों से संभव है। तो आज भले पानी का संकट है, सूखे की स्थिति है, लेकिन आने वाला महीना - डेढ़ महीने का हमारे पास समय है और मैं तो हमेशा कहता हूँ, कभी हम पोरबंदर महात्मा गाँधी के जन्म-स्थान पर जाएँ, तो जो वहाँ अलग-अलग स्थान हम देखते हैं, तो उसमें एक जगह वो भी देखने जैसी है कि वर्षा के पानी को बचाने के लिए, घर के नीचे किस प्रकार के tank दो सौ-दो सौ साल पुराने बने हुए हैं और वो पानी कितना शुद्ध रहता था।

कोई श्रीमान कुमार कृष्णा, उन्होंने MyGov पर लिखा है और एक प्रकार से जिज्ञासा भी व्यक्त की है। वो कहते हैं कि हमारे रहते हुए कभी गंगा सफाई का अभियान संभव होगा क्या! उनकी चिंता बहुत स्वाभाविक है, क्योंकि करीब-करीब 30 साल से ये काम चल रहा है। कई सरकारें आईं, कई योजनायें बनीं, ढेर सारा खर्चा भी हुआ और इसके कारण, भाई कुमार कृष्णा जैसे देश के करोड़ों लोगों के मन में ये सवाल होना बहुत स्वाभाविक है। जो लोग धार्मिक आस्था में रहते हैं, उनके लिए गंगा मोक्षदायिनी है। लेकिन मैं उस माहात्म्य को तो स्वीकार करूंगा ही, पर इससे ज्यादा मुझे लगता है कि गंगा ये जीवनदायिनी है। गंगा से हमें रोटी मिलती है। गंगा से हमें रोज़ी मिलती है। गंगा से हमें जीने की एक नयी ताकत मिलती है। गंगा जैसे बहती है, देश की आर्थिक गतिविधि को भी एक नयी गति देती है। एक भगीरथ ने गंगा तो हमें ला कर दे दी, लेकिन बचाने के लिए करोड़ों-करोड़ों भगीरथों की ज़रूरत है। जन भागीदारी के बिना ये काम कभी सफल हो ही नहीं सकता है और इसलिए हम सबने सफाई के लिए, स्वच्छता के लिए, एक change agent बनना पड़ेगा। बार-बार बात को दोहराना पड़ेगा, कहना पड़ेगा। सरकार की तरफ से कई सारे प्रयास चल रहे हैं। गंगा तट पर जो-जो राज्य हैं, उन राज्यों का भी भरपूर सहयोग लेने का प्रयास हो रहा है। सामाजिक, स्वैच्छिक संगठनों को भी जोड़ने का प्रयास हो रहा है। surface cleaning और Industrial प्रदूषण पर रोकने के लिए काफी कदम उठाए हैं। हर दिन गंगा में बड़ी मात्रा में, नालों के रास्ते से ठोस कचरा बह करके अन्दर आता है। ऐसे कचरे को साफ़ करने के लिए वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर, पटना - ऐसे स्थानों पर trash skimmer पानी में तैरते-तैरते कचरा साफ़ करने का काम करते हैं। सभी local bodies को ये मुहैया कराया गया है और उनसे आग्रह किया गया है कि इसको लगातार चलाएँ और वहीं से कचरा साफ़ करते चलें। और पिछले दिनों मुझे जो बताया गया कि जहाँ बड़े अच्छे ढंग से प्रयास होता है, वहाँ तो तीन टन से ग्यारह टन तक प्रतिदिन कचरा निकाला जाता है। तो ये तो बात सही है कि इतनी मात्रा में गंदगी बढ़ने से रुक ही रही है। आने वाले दिनों में और भी स्थानों पर trash skimmer लगाने की योजना है और उसका लाभ गंगा और यमुना तट के लोगों को तुरंत अनुभव भी होगा। Industrial प्रदूषण पर नियन्त्रण के लिए pulp and paper, distillery एवं sugar Industry के साथ एक action plan प्लान बन गया है। कुछ मात्रा में लागू होना शुरू भी हुआ है। उसके भी अच्छे परिणाम निकलेंगे, ऐसा अभी तो मुझे लग रहा है।

मुझे इस बात की खुशी है कि मुझे बताया गया कि उत्तराखंड एवं उत्तर प्रदेश, वहाँ जो distillery का जो discharge होता था, तो पिछले दिनों कुछ अफसर मुझे बता रहे थे कि zero liquid discharge की ओर उन्होंने सफलता पा ली है। Pulp and Paper Industry या Black liquor की निकासी लगभग पूरी तरह खत्म हो रही है। ये सारे इस बात के संकेत हैं कि हम सही दिशा में बढ़ रहे हैं और एक जागरूकता भी बढ़ी है। और मैंने देखा है कि सिर्फ गंगा के तट के नहीं, दूर-सुदूर दक्षिण का भी कोई व्यक्ति मिलता है, तो ज़रूर कहता है कि साहब, गंगा सफाई तो होगी न! तो यही एक जो जन-सामान्य की आस्था है, वो गंगा सफाई में ज़रूर सफलता दिलाएगी। गंगा स्वच्छता के लिये लोग donation भी दे रहे हैं। एक काफ़ी अच्छे ढंग से इस व्यवस्था को चलाया जा रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 24 अप्रैल है। भारत में इसे 'पंचायती राज दिवस' के रूप में मनाया जाता है। आज ही के दिन पंचायती राज व्यवस्था का हमारे देश में आरम्भ हुआ था और आज धीरे-धीरे पूरे देश में पंचायती राज व्यवस्था हमारी लोकतांत्रिक राजव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है।

14 अप्रैल बाबा साहब आंबेडकर की 125वीं जयंती हम मना रहे थे और आज 24 अप्रैल, 'पंचायती राज दिवस' मना रहे हैं। ये ऐसा सभ्य संयोग था, जिस महापुरुष ने हमें भारत का संविधान दिया, उस दिन से लेकर के 24 तारीख, जो कि संविधान की सबसे बड़ी मजबूत कड़ी है, वो हमारा गाँव - दोनों को जोड़ने की प्रेरणा और इसलिए भारत सरकार ने राज्य सरकारों के सहयोग के साथ 14 अप्रैल से 24 अप्रैल, 10 दिन ग्रामोदय से भारतोदय अभियान चलाया। ये मेरा सौभाग्य था कि 14 अप्रैल को बाबा साहब आंबेडकर जी के जन्मदिन मुझे बाबा साहब आंबेडकर का जन्म स्थान महु, वहाँ जाने का अवसर मिला। उस पवित्र धरती को नमन करने का अवसर मिला। और आज 24 तारीख को मैं झारखण्ड में, जहाँ हमारे

अधिकतम आदिवासी भाई-बहन रहते हैं, उस प्रदेश में आज जा करके 'पंचायती राज दिवस' मनाने वाला हूँ और दोपहर को 3 बजे फिर एक बार 'पंचायती राज दिवस' पर मैं देश की सभी पंचायतों से बातचीत करने वाला हूँ। इस अभियान ने एक बहुत बड़ा जागरूकता का काम किया है। हिन्दुस्तान के हर कोने में गाँव के स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाएँ कैसे मजबूत बनें? गाँव स्वयं आत्मनिर्भर कैसे बनें? ग्राम स्वयं अपने विकास की योजना कैसे बनाएँ? Infrastructure का भी महत्व हो, social Infrastructure का भी महत्व हो। गाँव में dropout न हों, बच्चे स्कूल न छोड़ दें, 'बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ' अभियान सफलता पूर्वक चले। बेटी का जन्मदिन गाँव का महोत्सव बनना चाहिये, कई ऐसी योजनाएँ, कुछ गाँव में तो food donation का कार्यक्रम हुआ। शायद ही एक साथ हिन्दुस्तान के इतने गाँवों में इतने विविध कार्यक्रम 10 दिन चले हों, ये बहुत कम होता है। मैं, सभी राज्य सरकारों को, ग्राम प्रधानों को इस बात के लिए बधाई देता हूँ कि आपने बहुत ही मौलिक तरीके से नवीनता के साथ, इस पूरे अवसर को गाँव की भलाई के लिये, गाँव के विकास के लिये, लोकतंत्र की मजबूती के लिये, एक अवसर में परिवर्तित किया। गाँवों में जो जागरूकता आयी है, वही तो भारत-उदय की गारंटी है। भारत-उदय का आधार ग्राम-उदय ही है और इसलिए ग्राम-उदय पर हम सब बल देते रहेंगे, तो इच्छित परिणाम प्राप्त करके ही रहेंगे।

मुम्बई से शर्मिला धारपुरे, आपने मुझे फ़ोन कॉल पर अपनी चिंता जतायी है: -

"प्रधानमंत्री जी नमस्कार, मैं, शर्मिला धारपुरे बोल रही हूँ, मुम्बई से। मेरा आपसे, स्कूल और college education के बारे में सवाल है। जैसे education sector में पिछले बहुत वर्षों से सुधार की ज़रूरत पाई गयी है। पर्याप्त स्कूलों का या colleges का न होना या फिर शिक्षा में education की quality न होना। ऐसा पाया गया है कि बच्चे अपना education पूरा भी कर लेते हैं, उन्हें फिर भी अक्सर basic चीज़ों के बारे में पता नहीं होता है। उससे हमारे बच्चे दुनिया की दौड़ में पीछे पड़ जाते हैं। इस बारे में आपके क्या विचार हैं और आप इस sector को किस तरह से इसमें सुधार लाना चाहते हैं? इसके बारे में कृपया हमें बताइए। धन्यवाद!"

ये चिंता बहुत स्वाभाविक है। आज हर परिवार में माँ-बाप का अगर पहला कोई सपना रहता है, तो वो रहता है बच्चों की अच्छी शिक्षा। घर-गाड़ी, सब बाद में विचार आता है और भारत जैसे देश के लिए जन-मन की ये भावना है, वो बहुत बड़ी ताकत है। बच्चों को पढ़ाना और अच्छा पढ़ाना। अच्छी शिक्षा मिले, उसकी चिंता होना - ये और अधिक बढ़ना चाहिये, और अधिक जागरूकता आनी चाहिए। और मैं मानता हूँ, जिन परिवारों में ये जागरूकता होती है, उसका असर स्कूलों पर भी आता है, शिक्षकों पर भी आता है और बच्चा भी जागरूक होता जाता है कि मैं स्कूल में इस काम के लिए जा रहा हूँ। और इसलिये, मैं, सभी अभिभावकों से, माँ-बाप से सबसे पहले यह आग्रह करूँगा कि बच्चे के साथ, स्कूल की हो रही गतिविधियों से विस्तार से समय देकर के बातें करें। और कुछ बात ध्यान में आए, तो खुद स्कूल में जा करके शिक्षकों से बात करें। ये जो vigilance है, ये भी हमारी शिक्षा व्यवस्था में कई बुराइयों को कम कर सकता है और जन भागीदारी से तो ये होना ही होना है। हमारे देश में सभी सरकारों ने शिक्षा पर बल दिया है और हर कोई सरकार ने अपने-अपने तरीके से प्रयास भी किया है। और ये भी सच्चाई है कि काफी अरसे तक हम लोगों का ध्यान इसी बात पर रहा कि शिक्षा संस्थान खड़े हों, शिक्षा व्यवस्था का विस्तार हो, स्कूल बनें, colleges बनें, teachers की भर्ती हो, अधिकतम बच्चे स्कूल आएँ। तो, एक प्रकार से, शिक्षा को चारों तरफ़ फैलाने का प्रयास, ये प्राथमिकता रही और ज़रूरी भी था, लेकिन अब जितना महत्व विस्तार का है, उससे भी ज़्यादा महत्व हमारी शिक्षा में सुधार का है। विस्तार का एक बहुत बड़ा काम हम कर चुके हैं। अब हमें, quality education पर focus करना ही होगा। साक्षरता अभियान से अब अच्छी शिक्षा, ये हमारी प्राथमिकता बनानी पड़ेगी। अब तक हिसाब-किताब outlay का होता था, अब हमें outcome पर ही focus करना पड़ेगा। अब तक स्कूल में कितने आये, उस पर बल था, अब schooling से ज़्यादा learning की ओर हमें बल देना होगा। Enrollment, enrollment, enrollment - ये मंत्र लगातार गूँजता रहा, लेकिन अब, जो बच्चे स्कूल में पहुँचे हैं, उनको अच्छी शिक्षा, योग्य शिक्षा, इसी पर हमने ध्यान केन्द्रित करना होगा। वर्तमान सरकार का बजट भी आपने देखा होगा। अच्छी शिक्षा पर बल देने का प्रयास हो रहा है। ये बात सही है कि बहुत बड़ी लम्बी सफ़र काटनी है। लेकिन अगर हम सवा-सौ करोड़ देशवासी तय करें, तो, लम्बी सफ़र भी कट सकती है। लेकिन शर्मिला जी की बात सही है कि हमें आमूलचूल सुधार लाने की ज़रूरत है।

इस बार बजट में आपने देखा होगा कि लीक से हटकर के काम किया गया है। बजट के अन्दर, दस सरकारी University और दस Private University - उनको सरकारी बंधनों से मुक्ति देने का और challenge route पर उनको आने के लिए कहा है कि आइये, आप top most University बनने के लिए क्या करना चाहते हैं, बताइये। उनको खुली छूट देने के इरादे से ये योजना रखी गयी है। भारत की Universities भी वैश्विक स्पर्धा करने वाली University बन सकती हैं, बनानी भी चाहिए। इसके साथ-साथ जितना महत्व शिक्षा का है, उतना ही महत्व skill का है, उसी प्रकार से शिक्षा में technology बहुत बड़ा role play करेगी। Long Distance Education, technology - ये हमारी शिक्षा को सरल भी बनाएगी और ये बहुत ही निकट भविष्य में इसके परिणाम नज़र आएँगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

बड़े लम्बे समय से एक विषय पर लोग मुझे पूछते रहते हैं, कुछ लोग web portal MyGov पर लिखते हैं, कुछ लोग मुझे NarendraModiApp पर लिखते हैं, और ज्यादातर ये नौजवान लिखते हैं।

“प्रधानमंत्री जी नमस्कार! मैं मोना कर्णवाल बोल रही हूँ, बिजनौर से। आज के जमाने में युवाओं के लिए पढ़ाई के साथ-साथ sports का भी बहुत महत्व है। उनमें team spirit की भावना भी होनी चाहिए और अच्छे leader होने के गुण भी होने चाहिए, जिससे कि उनका overall holistic development हो। ये मैं अपने experience से कह रही हूँ, क्योंकि, मैं, खुद भी Bharat Scouts and Guides में रह चुकी हूँ और इसका मेरे जीवन में बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। मैं चाहती हूँ कि आप ज्यादा से ज्यादा युवाओं को motivate करें। मैं चाहती हूँ कि सरकार भी ज्यादा से ज्यादा NCC, NSS और Bharat Scouts and Guides को promote करे।”

आप लोग मुझे इतने सुझाव भेजते रहते थे, तो एक दिन मुझे भी लगा कि मैं आप लोगों से बात करूँ कि इससे पहले मैं इन सबसे से बातचीत करूँ। तो आप ही लोगों का दबाव था, आप ही लोगों के सुझाव थे, उसका परिणाम ये हुआ कि मैंने ऐसी एक अभी meeting बुलायी, जिसमें NCC के मुखिया थे, NSS के थे, Scout and Guide के थे, Red Cross के थे, नेहरू युवा केंद्र के थे। और जब मैंने उनको पूछा कि पहले कब मिले थे, तो उन्होंने कहा, नहीं-नहीं भाई, हम तो देश आज़ाद होने के बाद इस प्रकार की meeting ये पहली हुई है। तो मैं सबसे पहले तो उन युवा-मित्रों का अभिनन्दन करता हूँ कि जिन्होंने मुझ पर दबाव डाला इन सारे कामों के संबंध में। और उसी का परिणाम है कि मैंने meeting की और मुझे लगा कि अच्छा हुआ कि मैं मिला। बहुत co-ordination की आवश्यकता लगी मुझे। अपने-अपने तरीके से बहुत-कुछ हो रहा है, लेकिन अगर सामूहिक रूप से, संगठित रूप से हमारे भिन्न-भिन्न प्रकार के संगठन काम करें, तो कितना बड़ा परिणाम दे सकते हैं। और कितना बड़ा फैलाव है उनका, कितने परिवारों तक ये पहुँचे हुए हैं। तो मुझे इनका व्याप देखकर के तो बड़ा ही समाधान हुआ। और उनका उमंग भी बहुत था, कुछ-न-कुछ करना था। और ये तो बात सही है कि मैं तो स्वयं ही NCC का Cadet रहा हूँ, तो मुझे मालूम है कि ऐसे संगठनों से एक नई दृष्टि मिलती है, प्रेरणा मिलती है, एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण पनपता है। तो मुझे तो बचपन में वो लाभ मिला ही मिला है और मैं भी मानता हूँ कि इन संगठनों में एक नया प्राण भरना चाहिये, नई ताकत भरनी चाहिये। इस बार अब मैंने उनके सामने कुछ रखे हैं विषय। मैंने उनको कहा है कि भाई, इस season में जल-संचय का बड़ा काम हमारे युवा, सारे संगठन क्यों न करें। हम लोग प्रयास करके कितने block, कितने जिले, खुले में शौच जाना बंद करवा सकते हैं। Open defecation free कैसे कर सकते हैं? देश को जोड़ने के लिए ऐसे कौन से कार्यक्रमों की रचना कर सकते हैं, हम सभी संगठनों के common युवा-गीत क्या हो सकता है? कई बातें उनके साथ हुई हैं।

मैं आज आपसे भी आग्रह करता हूँ, आप भी मुझे बताइए, बहुत perfect सुझाव बताइए कि हमारे अनेक-अनेक युवा संगठन चलते हैं। उनकी कार्यशैली, कार्यक्रम में क्या नई चीज़ें जोड़ सकते हैं? मेरे NarendraModiApp पर आप लिखोगे, तो मैं उचित जगह पर पहुँचा दूँगा और मैं मानता हूँ कि इस meeting के बाद काफ़ी कुछ उन में गति आएगी, ऐसा तो मुझे लग रहा है और आपको भी उसके साथ जुड़ने का मन करेगा, ऐसी स्थिति तो बन ही जाएगी।

मेरे प्यारे देशवासियों, आज हम सब को सोचने के लिए मज़बूर करने वाली बात मुझे करनी है। मैं इसे हम लोगों को झकझोरने वाली बात के रूप में भी देखता हूँ। आपने देखा होगा कि हमारे देश की राजनैतिक अवस्था ऐसी है कि पिछले कई चुनावों में इस बात की चर्चा हुआ करती थी कि कौन पार्टी कितने गैस के cylinder देगी? 12 cylinder कि 9 cylinder? ये चुनाव का बड़ा मुद्दा हुआ करता था। और हर राजनैतिक दल को लगता था कि मध्यमवर्गीय समाज को चुनाव की दृष्टि से पहुँचना है, तो Gas Cylinder एक बहुत बड़ा issue है। दूसरी तरफ़, अर्थशास्त्रियों का दबाव रहता था कि subsidy कम करो और उसके कारण कई कमेटियाँ बैठती थीं, जिसमें गैस की subsidy कम करने पर बहुत बड़े प्रस्ताव आते थे, सुझाव आते थे। इन कमेटियों के पीछे करोड़ों रुपए के खर्च होते थे। लेकिन बात वहीं की वहीं रह जाती थी। यह अनुभव सबका है। लेकिन इसके बाहर कभी सोचा नहीं गया। आज मेरे देशवासियों, आप सब को मेरा हिसाब देते हुए मुझे आनंद होता है कि मैंने तीसरा रास्ता चुना और वो रास्ता था जनता-जनार्दन पर भरोसा करने का। कभी-कभी हम राजनैताओं को भी अपने से ज्यादा अपनों पर भरोसा करना चाहिये। मैंने जनता-जनार्दन पर भरोसा करके ऐसे ही बातों-बातों में कहा था कि अगर आप साल भर के पंद्रह सौ, दो हजार रुपया खर्च का बोझ सहन कर सकते हैं, तो आप gas subsidy क्यों नहीं छोड़ देते, किसी गरीब के काम आएगी। ऐसे ही मैंने बात कही थी, लेकिन आज मैं बड़े गर्व के साथ कह सकता हूँ, मुझे नाज़ हो रहा है मेरे देशवासियों पर।

एक-करोड़ परिवारों ने स्वेच्छा से अपनी gas subsidy surrender कर दी। और ये एक करोड़ परिवार अमीर नहीं हैं। मैं देख रहा हूँ, कोई retired Teacher, retired Clerk, कोई किसान, कोई छोटा-सा दुकान चलाने वाला - ऐसे मध्यम-वर्ग, निम्न मध्यम-वर्ग के परिवार हैं, जिन्होंने छोड़ा। दूसरी विशेषता देखिए कि subsidy छोड़ने के लिए mobile phone की

app से कर सकते थे, online कर सकते थे, telephone पर missed call करके कर सकते थे, बहुत तरीके थे। लेकिन, हिसाब लगाया गया तो पता चला कि इन एक-करोड़ परिवारों में 80 percent से ज्यादा लोग वो थे, जो स्वयं distributor के यहाँ ख़ुद गए, कतार में खड़े रहे और लिखित में देकर के उन्होंने अपनी subsidy surrender कर दी।

मेरे प्यारे देशवासियों, ये छोटी बात नहीं है। सरकार अगर कोई एक tax में थोड़ी-सी भी रियायत दे दे, छूट दे दे, तो हफ्ते भर टी.वी. और अखबारों में उस सरकार की वाहवाही सुनाई देती है। एक-करोड़ परिवारों ने subsidy छोड़ दी और हमारे देश में subsidy एक प्रकार से हक बन गया है, उसे छोड़ दिया। मैं सबसे पहले उन एक-करोड़ परिवारों को शत-शत नमन करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ। क्योंकि उन्होंने राजनेताओं को नये तरीके से सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। इस एक घटना ने देश के अर्थशास्त्रियों को भी नये तरीके से सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। और दुनिया के अर्थवेत्ता भी ऐसा होगा तो ऐसा होगा, ऐसा करेंगे तो वैसा निकलेगा, इस प्रकार जो आर्थिक समीकरण बनाते हैं, उनके लिये भी उनकी सोच की मर्यादाओं से बाहर की ये घटना है। इस पर कभी-न-कभी सोचना पड़ेगा। एक-करोड़ परिवारों का सब्सिडी छोड़ना, बदले में करोड़ों गरीब परिवारों को गैस सिलिंडर मिलना। एक करोड़ परिवारों का सब्सिडी छोड़ने से रुपयों का बचत होना, ये बाहरी दृष्टि से बहुत सामान्य बातें हैं। असामान्य बात ये है कि जनता पर भरोसा रखकर के काम करें, तो कितनी बड़ी सिद्धि मिलती है। मैं खासकर के पूरे political class को आज आग्रह से कहना चाहूँगा कि हम हर जगह पर जनता पर भरोसा रखने वाली एक बात ज़रूर करें। आपने कभी सोचा नहीं होगा, वैसा परिणाम हमें मिलेगा। और हमें इस दिशा में जाना चाहिए। और मुझे तो लगातार लगता है कि जैसे मेरे मन में आया कि ये वर्ग 3 और 4 के Interview क्यों करें भई। जो अपना exam देकर के marks भेज रहा है, उस पर भरोसा करें। कभी तो मुझे ऐसा भी लगता है कि हम कभी घोषित करें कि आज रेलवे की वो जो route है, उसमें कोई ticket checker नहीं रहेगा। देखिये तो, देश की जनता पर हम भरोसा करें। बहुत सारे प्रयोग कर सकते हैं। एक बार देश की जनता पर हम भरोसा करें, तो अप्रतिम परिणाम मिल सकते हैं। खैर, ये तो मेरे मन के विचार हैं, इसको कोई सरकार का नियम तो नहीं बना सकते, लेकिन माहौल तो बना सकते हैं। और ये माहौल कोई राजनेता नहीं बना रहा है। देश के एक करोड़ परिवारों ने बना दिया है।

रवि करके किसी सज्जन ने मुझे पत्र लिखा है - "Good news every day". वो लिख रहे हैं कि कृपया अपने अधिकारियों से कहिए कि हर दिन कोई एक अच्छी घटना के बारे में post करें। प्रत्येक newspaper और news channel में हर breaking news, बुरी news ही होती है। क्या सवा-सौ करोड़ आबादी वाले देश में हमारे आस-पास कुछ भी अच्छा नहीं हो रहा है? कृपया इस हालत को बदलिए। रवि जी ने बड़ा गुस्सा व्यक्त किया है। लेकिन मैं मानता हूँ कि शायद वो मुझ पर गुस्सा नहीं कर रहे हैं, हालात पर गुस्सा कर रहे हैं। आप को याद होगा, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम हमेशा ये बात कहते थे कि अखबार के पहले पन्ने पर सिर्फ positive खबरें छापिए। वे लगातार इस बात को कहते रहते थे। कुछ दिन पहले मुझे एक अखबार ने चिट्ठी भी लिखी थी। उन्होंने कहा था कि हमने तय किया है कि सोमवार को हम एक भी negative खबर नहीं देंगे, positive खबर ही देंगे। इन दिनों मैंने देखा है, कुछ T.V. Channel positive खबरों का समय specially तय करके दे रहे हैं। तो ये तो सही है कि इन दिनों अब माहौल बना है positive खबरों का। और हर किसी को लग रहा है कि सही खबरें, अच्छी खबरें लोगों को मिलती रहें। एक बात सही है कि बड़े-से-बड़ा व्यक्ति भी उत्तम-से-उत्तम बात बताए, अच्छे-से-अच्छे शब्दों में बताए, बढ़िया-से-बढ़िया तरीके से बताए, उसका जितना प्रभाव होता है, उससे ज्यादा कोई अच्छी खबर का होता है। अच्छी खबर अच्छा करने की प्रेरणा का सबसे बड़ा कारण बनती है। तो ये तो सही है कि जितना हम अच्छाई को बल देंगे, तो अपने आप में बुराइयों के लिए जगह कम रहेगी। अगर दिया जलायेंगे, तो अंधेरा छंटेगा ही - छंटेगा ही - छंटेगा ही। और इसलिए आप को शायद मालूम होगा, सरकार की तरफ से एक website चलाई जा रही है 'Transforming India'. इस पर सकारात्मक खबरें होती हैं। और सिर्फ सरकार की नहीं, जनता की भी होती हैं और ये एक ऐसा portal है कि आप भी अपनी कोई अच्छी खबर है, तो उसमें आप भेज सकते हैं। आप भी उसमें contribute कर सकते हैं। अच्छा सुझाव रवि जी आपने दिया है, लेकिन कृपा करके मुझ पर गुस्सा मत कीजिए। हम सब मिल करके positive करने का प्रयास करें, positive बोलने का प्रयास करें, positive पहुंचाने का प्रयास करें।

हमारे देश की विशेषता है - कुंभ मेला। कुंभ मेला tourism के आकर्षण का भी केंद्र बन सकता है। दुनिया के बहुत कम लोगों को मालूम होता है कि इतने लंबे समय तक नदी के तट पर करोड़ों-करोड़ों लोग आए। शांतचित्त शांतिपूर्ण वातावरण में अवसर संपन्न हो। ये घटनायें अपने आप में organisation की दृष्टि से, event management की दृष्टि से, जन भागीदारी की दृष्टि से बहुत बड़े नए मानक सिद्ध करने वाली होती हैं। पिछले दो दिन से मैं देख रहा हूँ कि कई लोग 'सिंहस्थ कुंभ' की तस्वीरें upload कर रहे हैं। मैं चाहूँगा कि भारत सरकार का tourism department, राज्य सरकार का tourism department इसकी competition करे 'photo competition'. और लोगों को कहे कि बढ़िया से बढ़िया photo निकाल करके आप upload कीजिए। कैसा एक दम से माहौल बन जायेगा और लोगों को भी पता चलेगा कि कुंभ मेले के हर कोने में कितनी विविधताओं से भरी हुई चीज़ें चल रही हैं। तो ज़रूर इसको किया जा सकता है। देखिये, ये बात सही है। मुझे बीच में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री जी मिले थे, वो बता रहे थे कि हमने स्वच्छता पर विशेष बल दिया है और स्वच्छता वहीं रहे, ऐसा नहीं, वहाँ से लोग स्वच्छता का संदेश भी ले के जाएँ। मैं मानता हूँ, ये 'कुंभ मेला' भले धार्मिक-आध्यात्मिक

मेला हो, लेकिन हम उसको एक सामाजिक अवसर भी बना सकते हैं। संस्कार का अवसर भी बना सकते हैं। वहाँ से अच्छे संकल्प, अच्छी आदतें लेकर के गाँव-गाँव पहुँचाने का एक कारण भी बन सकता है। हम कुंभ मेले से पानी के प्रति प्यार कैसे बढ़े, जल के प्रति आस्था कैसे बढ़े, जल-संचय का संदेश देने में कैसे इस 'कुंभ मेले' का भी उपयोग कर सकते हैं, हमें करना चाहिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, पंचायत-राज के इस महत्वपूर्ण दिवस पर, शाम को तो मैं आपको फिर से एक बार मिलूँगा ही मिलूँगा, आप सब का बहुत-बहुत धन्यवाद। और हर-हमेश की तरह आपके मन की बात ने मेरे मन की बात के साथ एक अटूट नाता जोड़ा है, इसका मुझे आनंद है। फिर एक बार बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/AK-2206

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

22-May-2016 11:32 IST

Text of PM's "Mann ki Baat" programme on All India Radio, on 22.05.2016

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। फिर एक बार मुझे 'मन की बात' करने का अवसर मिला है। मेरे लिए 'मन की बात' ये कर्मकाण्ड नहीं है। मैं स्वयं भी आपसे बातचीत करने के लिए बहुत ही उत्सुक रहता हूँ और मुझे खुशी है कि हिन्दुस्तान के हर कोने में मन की बातों के माध्यम से देश के सामान्यजनो से मैं जुड़ पाता हूँ। मैं आकाशवाणी का भी इसलिए भी आभारी हूँ कि उन्होंने इस 'मन की बात' को शाम को 8.00 बजे प्रादेशिक भाषाओं में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। और मुझे इस बात की भी खुशी है कि जो लोग मुझे सुनते हैं, वे बाद में पत्र के द्वारा, टेलीफोन के द्वारा, MyGov website के द्वारा, Narendra Modi App के द्वारा अपनी भावनाओं को मेरे तक पहुंचाते हैं। बहुत सी आपकी बातें मुझे सरकार के काम में मदद करती हैं। जनहित की दृष्टि से सरकार कितनी सक्रिय होनी चाहिए, जनहित के काम कितने प्राथमिक होने चाहिए, इन बातों के लिए आपके साथ का मेरा ये सम्वाद, ये नाता बहुत काम आता है। मैं आशा करता हूँ कि आप और अधिक सक्रिय हो करके लोक-भागीदारी से लोकतंत्र कैसे चले, इसको जरूर बल देंगे।

गर्मी बढ़ती ही चली जा रही है। आशा करते थे, कुछ कमी आयेगी, लेकिन अनुभव आया कि गर्मी बढ़ती ही जा रही है। बीच में ये भी खबर आ गयी कि शायद मानसून एक सप्ताह विलम्ब कर जाएगा, तो चिंता और बढ़ गयी। करीब-करीब देश का अधिकतम हिस्सा गर्मी की भीषण आग का अनुभव कर रहा है। पारा आसमान को छू रहा है। पशु हो, पक्षी हो, इंसान हो, हर कोई परेशान है। पर्यावरण के कारण ही तो ये समस्याएँ बढ़ती चली जा रही हैं। जंगल कम होते गए, पेड़ कटते गए और एक प्रकार से मानवजाति ने ही प्रकृति का विनाश करके स्वयं के विनाश का मार्ग प्रशस्त कर दिया। 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस है। पूरे विश्व में पर्यावरण के लिए चर्चाएँ होती हैं, चिंता होती है। इस बार United Nations ने विश्व पर्यावरण दिवस पर 'Zero Tolerance for illegal Wildlife Trade' इसको विषय रखा है। इसकी तो चर्चा होगी ही होगी, लेकिन हमें तो पेड़-पौधों की भी चर्चा करनी है, पानी की भी चर्चा करनी है, हमारे जंगल कैसे बढ़ें। क्योंकि आपने देखा होगा, पिछले दिनों उत्तराखण्ड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर - हिमालय की गोद में, जंगलों में जो आग लगी; आग का मूल कारण ये ही था कि सूखे पत्ते और कहीं थोड़ी सी भी लापरवाही बरती जाए, तो बहुत बड़ी आग में फैल जाती है और इसलिए जंगलों को बचाना, पानी को बचाना - ये हम सबका दायित्व बन जाता है। पिछले दिनों मुझे जिन राज्यों में अधिक सूखे की स्थिति है, ऐसे 11 राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ विस्तार से बातचीत करने का अवसर मिला। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा - वैसे तो सरकार की जैसे परम्परा रही है, मैं सभी सूखा प्रभावित राज्यों की एक meeting कर सकता था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। मैंने हर राज्य के साथ अलग meeting की। एक-एक राज्य के साथ करीब-करीब दो-दो, ढाई-ढाई घंटे बिताए। राज्यों को क्या कहना है, उनको बारीकी से सुना। आम तौर पर सरकार में, भारत सरकार से कितने पैसे गए और कितनों का खर्च हुआ - इससे ज्यादा बारीकी से बात नहीं होती है। हमारे भारत सरकार के भी अधिकारियों के लिए भी आश्चर्य था कि कई राज्यों ने बहुत ही उत्तम प्रयास किये हैं, पानी के संबंध में, पर्यावरण के संबंध में, सूखे की स्थिति को निपटने के लिये, पशुओं के लिये, असरग्रस्त मानवों के लिये और एक प्रकार से पूरे देश के हर कोने में, किसी भी दल की सरकार क्यों न हो, ये अनुभव आया कि इस समस्या की, लम्बी अवधि की परिस्थिति से, निपटने के लिए permanent solutions क्या हों, कायमी उपचार क्या हो, उस पर भी ध्यान था। एक प्रकार से मेरे लिए वो learning experience भी था और मैंने तो मेरे नीति आयोग को कहा है कि जो best practices हैं, उनको सभी राज्यों में कैसे लिया जाए, उस पर भी कोई काम होना चाहिए। कुछ राज्यों ने, खास करके आन्ध्र ने, गुजरात ने technology का भरपूर उपयोग किया है। मैं चाहूँगा कि आगे नीति आयोग के द्वारा राज्यों के जो विशेष सफल प्रयास हैं, उसको हम और राज्यों में भी पहुँचाएँ। ऐसी समस्याओं के

समाधान में जन-भागीदारी एक बहुत बड़ा सफलता का आधार होती है। और उसमें अगर perfect planning हो, उचित technology का उपयोग हो और समय-सीमा में व्यवस्थाओं को पूर्ण करने का प्रयास किया जाए; उत्तम परिणाम मिल सकते हैं, ऐसा मेरा विश्वास है। Drought Management को ले करके, water conservation को ले करके, बूँद-बूँद पानी बचाने के लिये, क्योंकि मैं हमेशा मानता हूँ, पानी - ये परमात्मा का प्रसाद है। जैसे हम मंदिर में जाते हैं, कोई प्रसाद दे और थोड़ा सा भी प्रसाद गिर जाता है, तो मन में क्षोभ होता है। उसको उठा लेते हैं और पाँच बार परमात्मा से माफी माँगते हैं। ये पानी भी परमात्मा का प्रसाद है। एक बूँद भी बर्बाद हो, तो हमें पीड़ा होनी चाहिए। और इसलिए जल-संचय का भी उतना ही महत्व है, जल-संरक्षण का भी उतना ही महत्व है, जल-सिंचन का भी उतना ही महत्व है और इसीलिये तो per drop-more crop, micro-irrigation, कम-से-कम पानी से होने वाली फसल। अब तो खुशी की बात है कि कई राज्यों में हमारे गन्ने के किसान भी micro-irrigation का उपयोग कर रहे हैं, कोई drip-irrigation का उपयोग कर रहा है, कोई sprinkler का कर रहा है। मैं राज्यों के साथ बैठा, तो कुछ राज्यों ने paddy के लिए भी, rice की जो खेती करते हैं, उन्होंने भी सफलतापूर्वक drip-irrigation का प्रयोग किया है और उसके कारण उनकी पैदावार भी ज्यादा हुई, पानी भी बचा और मजदूरी भी कम हुई। इन राज्यों से मैंने जब सुना, तो बहुत से राज्य ऐसे हैं कि जिन्होंने बहुत बड़े-बड़े target लिए हैं, खास करके महाराष्ट्र, आन्ध्र और गुजरात। तीन राज्यों ने drip-irrigation में बहुत बड़ा काम किया है और उनकी तो कोशिश है कि हर वर्ष दो-दो, तीन-तीन लाख हेक्टेयर micro-irrigation में जुड़ते जाएँ! ये अभियान अगर सभी राज्यों में चल पड़ा, तो खेती को भी बहुत लाभ होगा, पानी का भी संचय होगा। हमारे तेलंगाना के भाइयों ने 'मिशन भागीरथी' के द्वारा गोदावरी और कृष्णा नदी के पानी का बहुत ही उत्तम उपयोग करने का प्रयास किया है। आन्ध्र प्रदेश ने 'नीरू प्रगति मिशन' उसमें भी technology का उपयोग, ground water recharging का प्रयास। महाराष्ट्र ने जो जन-आंदोलन खड़ा किया है, उसमें लोग पसीना भी बहा रहे हैं, पैसे भी दे रहे हैं। 'जलयुक्त शिविर अभियान' - सचमुच में ये आन्दोलन महाराष्ट्र को भविष्य के संकट से बचाने के लिए बहुत काम आएगा, ऐसा मैं अनुभव करता हूँ। छत्तीसगढ़ ने 'लोकसुराज - जलसुराज अभियान' चलाया है। मध्य प्रदेश ने 'बलराम तालाब योजना' - करीब-करीब 22 हजार तालाब! ये छोटे आँकड़े नहीं हैं! इस पर काम चल रहा है। उनका 'कपिलधारा कूप योजना'। उत्तर प्रदेश से 'मुख्यमंत्री जल बचाओ अभियान'। कर्नाटक में 'कल्याणी योजना' के रूप में कुओं को फिर से जीवित करने की दिशा में काम आरम्भ किया है। राजस्थान और गुजरात जहाँ अधिक पुराने जमाने की बावड़ियाँ हैं, उनको जलमंदिर के रूप में पुनर्जीवित करने का एक बड़ा अभियान चलाया है। राजस्थान ने 'मुख्यमंत्री जल-स्वावलंबन अभियान' चलाया है। झारखंड वैसे तो जंगली इलाका है, लेकिन कुछ इलाके हैं, जहाँ पानी की दिक्कत है। उन्होंने 'Check Dam' का बहुत बड़ा अभियान चलाया है। उन्होंने पानी रोकने की दिशा में प्रयास चलाया है। कुछ राज्यों ने नदियों में ही छोटे-छोटे बाँध बना करके दस-दस, बीस-बीस किलोमीटर पानी रोकने की दिशा में अभियान चलाया है। ये बहुत ही सुखद अनुभव है। मैं देशवासियों को भी कहता हूँ कि ये जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर - हम तय करें, पानी की एक बूँद भी बर्बाद नहीं होने देंगे। अभी से प्रबंध करें, पानी बचाने की जगह क्या हो सकती है, पानी रोकने की जगह क्या हो सकती है। ईश्वर तो हमारी ज़रूरत के हिसाब से पानी देता ही है, प्रकृति हमारी आवश्यकता की पूर्ति करती ही है, लेकिन हम अगर बहुत पानी देख करके बेपरवाह हो जाएँ और जब पानी का मौसम समाप्त हो जाए, तो बिना पानी परेशान रहें, ये कैसे चल सकता है? और ये कोई पानी मतलब सिर्फ किसानों का विषय नहीं है जी! ये गाँव, गरीब, मजदूर, किसान, शहरी, ग्रामीण, अमीर-गरीब - हर किसी से जुड़ा हुआ विषय है और इसलिए बारिश का मौसम आ रहा है, तो पानी ये हमारी प्राथमिकता रहे और इस बार जब हम दीवाली मनाएँ, तो इस बात का आनंद भी लें कि हमने कितना पानी बचाया, कितना पानी रोका। आप देखिये, हमारी खुशियाँ अनेक गुना बढ़ जाएँगी। पानी में वो ताकत है, हम कितने ही थक करके आए हों, मुँह पर थोड़ा-सा भी पानी छिड़कते हैं, तो कितने fresh हो जाते हैं। हम कितने ही थक गए हों, लेकिन विशाल सरोवर देखें या सागर का पानी देखें, तो कैसी विराटता का अनुभव होता है। ये कैसा अनमोल खजाना है परमात्मा का दिया हुआ! जरा मन से उसके साथ जुड़ जाएँ, उसका संरक्षण करें, पानी का संवर्द्धन करें, जल-संचय भी करें, जल-सिंचन को भी आधुनिक बनाएँ। इस बात को मैं आज बड़े आग्रह से कह रहा हूँ। ये मौसम जाने नहीं देना है। आने वाले चार महीने बूँद-बूँद पानी के लिए 'जल बचाओ अभियान' के रूप में परिवर्तित करना है और ये सिर्फ सरकारों का नहीं, राजनेताओं का नहीं, ये जन-सामान्य का काम है। media ने पिछले दिनों पानी की मुसीबत का विस्तार से वृत्तांत दिया। मैं आशा करता हूँ कि media पानी बचाने की दिशा में लोगों का मार्गदर्शन करे, अभियान

चलाए और पानी के संकट से हमेशा की मुक्ति के लिए media भी भागीदार बने, मैं उनको भी निमंत्रित करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, हमें आधुनिक भारत बनाना है। हमें transparent भारत बनाना है। हमें बहुत सी व्यवस्थाओं को भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक समान रूप से पहुँचाना है, तो हमारी पुरानी आदतों को भी थोड़ा बदलना पड़ेगा। आज मैं एक ऐसे विषय पर स्पर्श करना चाहता हूँ, जिस पर अगर आप मेरी मदद करें, तो हम उस दिशा में सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकते हैं। हम सबको मालूम है, हमें स्कूल में पढ़ाया जाता था कि एक ज़माना था, जब सिक्के भी नहीं थे, नोट भी नहीं थे, barter system हुआ करता था कि आपको अगर सब्जी चाहिए, तो बदले में इतने गेहूँ दे दो। आपको नमक चाहिए, तो बदले में इतनी सब्जी दे दो। barter system से ही कारोबार चलता था। धीरे-धीरे करके मुद्रा आने लगी। coin आने लगे, सिक्के आने लगे, नोट आने लगे। लेकिन अब वक्त बदल चुका है। पूरी दुनिया cashless society की तरफ़ आगे बढ़ रही है। electronic technological व्यवस्था के द्वारा हम रुपये पा भी सकते हैं, रुपये दे भी सकते हैं। चीज़ खरीद भी सकते हैं, बिल चुकता भी कर सकते हैं। और इससे ज़ेब में से कभी बटुए की चोरी होने का तो सवाल ही नहीं उठेगा। हिसाब रखने की भी चिंता नहीं रहेगी, automatic हिसाब रहेगा। शुरुआत थोड़ी कठिन लगेगी, लेकिन एक बार आदत लगेगी, तो ये व्यवस्था सरल हो जायेगी। और ये संभावना इसलिए है कि हमने इन दिनों जो 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' का अभियान चलाया, देश के करीब-करीब सभी परिवारों के बैंक खाते खुल गए। दूसरी तरफ़ आधार नंबर भी मिल गया और मोबाइल तो करीब-करीब हिन्दुस्तान के हर हिन्दुस्तानी के हाथ में पहुँच गया है। तो 'जन-धन', 'आधार' और 'मोबाइल' - (JAM), 'J.A.M.' इसका तालमेल करते हुए हम इस cashless society की तरफ़ आगे बढ़ सकते हैं। आपने देखा होगा कि Jan-Dhan account के साथ RuPay Card दिया गया है। आने वाले दिनों में ये कार्ड credit और debit - दोनों की दृष्टि से काम आने वाला है। और आजकल तो एक बहुत छोटा सा Instrument भी आ गया है, जिसको कहते हैं point of sale - P.O.S. - 'POS'. उसकी मदद से आप, अपना आधार नंबर हो, RuPay Card हो, आप किसी को भी पैसा चुकता करना है, तो उससे दे सकते हैं। ज़ेब में से रुपये निकालने की, गिनने की, ज़रूरत ही नहीं है। साथ ले करके घूमने की ज़रूरत ही नहीं है। भारत सरकार ने जो कुछ initiative लिए हैं, उसमें एक 'POS' के द्वारा payment कैसे हो, कैसे कैसे लिए जाएँ। दूसरा काम हमने शुरू किया है 'Bank on Mobile' - Universal Payment interface banking transaction - 'UPI'. तरीके को बदल कर रख देगा। आपके मोबाइल फोन के द्वारा money transaction करना बहुत ही आसान हो जाएगा और खुशी की बात है कि N.P.C.I. और बैंक इस platform को mobile app के ज़रिये launch करने के लिए काम कर रहे हैं और अगर ये हुआ, तो शायद आपको RuPay Card को साथ रखने की भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। देश में करीब-करीब सवा-लाख banking correspondents के रूप में नौजवानों को भर्ती किया गया है। एक प्रकार से बैंक आपके द्वार पर - उस दिशा में काम किया है। Post Office को भी बैंकिंग सेवाओं के लिए सजग कर दिया गया है। इन व्यवस्थाओं का अगर हम उपयोग करना सीख लेंगे और आदत डालेंगे, तो फिर हमें ये currency की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, नोटों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, पैसों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, कारोबार अपने-आप चलेगा और उसके कारण एक transparency आएगी। दो-नंबरी कारोबार बंद हो जाएँगे। काले धन का तो प्रभाव ही कम होता जाएगा, तो मैं देशवासियों से आग्रह करता हूँ कि हम शुरू तो करें। देखिए, एक बार शुरू करेंगे, तो बहुत सरलता से हम आगे बढ़ेंगे। आज से बीस साल पहले किसने सोचा था कि इतने सारे मोबाइल हमारे हर हाथ में होंगे। धीरे-धीरे आदत हो गई, अब तो उसके बिना रह नहीं सकते। हो सकता है ये cashless society भी वैसा ही रूप धारण कर ले, लेकिन कम समय में होगा तो ज्यादा अच्छा होगा।

मेरे प्यारे देशवासियों, जब भी Olympic के खेल आते हैं और जब खेल शुरू हो जाते हैं, तो फिर हम सर पटक के बैठते हैं, हम Gold Medal में कितने पीछे रह गए, Silver मिला के नहीं मिला, Bronze से चलाए - न चलाए, ये रहता है। ये बात सही है कि खेल-कूद में हमारे सामने चुनौतियाँ बहुत हैं, लेकिन देश में एक माहौल बनना चाहिए। Rio Olympic के लिए जाने वाले हमारे खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने का, उनका हौसला बुलंद करने का, हर किसी ने अपने-अपने तरीके से। कोई गीत लिखे, कोई cartoon बनाए, कोई शुभकामनायें सन्देश दे, कोई किसी game को प्रोत्साहित करे, लेकिन पूरे देश को हमारे इन खिलाड़ियों के प्रति एक बड़ा ही सकारात्मक माहौल बनाना चाहिए। परिणाम जो आएगा - आएगा। खेल है - खेल है, जीत भी होती है, हार भी होती है, medal आते भी हैं, नहीं भी आते हैं, लेकिन हौसला बुलंद होना चाहिए और

ये जब मैं बात करता हूँ, तब मैं हमारे खेल मंत्री श्रीमान सर्बानन्द सोनोवाल को भी एक काम के लिए मुझे मन को छू गया, तो मैं आपको कहना चाहता हूँ। हम सब लोग गत सप्ताह चुनाव के नतीजे क्या आएँगे, असम में क्या पत्र परिणाम आएँगे, उसी में लगे थे और श्रीमान सर्बानन्द जी तो स्वयं असम के चुनाव का नेतृत्व कर रहे थे, मुख्यमंत्री के उम्मीदवार थे, लेकिन वो भारत सरकार के मंत्री भी थे और मुझे ये जब जानकारी मिली, तो बड़ी खुशी हुई कि वो असम चुनाव के result के पहले किसी को बताए बिना पटियाला पहुँच गए, पंजाब। आप सब को मालूम होगा Netaji Subhash National Institute of Sports (NIS), जहाँ पर Olympic में जाने वाले हमारे खिलाड़ियों की training होती है, वो सब वही हैं। वे अचानक वहाँ पहुँच गए, खिलाड़ियों के लिए भी surprise था और खेल जगत के लिए भी surprise था कि कोई मंत्री इस प्रकार से इतनी चिंता करे। खिलाड़ियों की क्या व्यवस्था है, खाने की व्यवस्था क्या है, आवश्यकता के अनुसार nutrition food मिल रहा है कि नहीं मिल रहा है, उनकी body के लिए जो आवश्यक trainer हैं, वो trainer हैं कि नहीं हैं। Training के सारे machines ठीक चल रहे हैं कि नहीं चल रहे हैं। सारी बातें उन्होंने बारीकी से देखीं। एक-एक खिलाड़ी के कमरे को जाकर के देखा। खिलाड़ियों से विस्तार से बातचीत की, management से बात की, trainer से बात की, खुद ने सब खिलाड़ियों के साथ खाना भी खाया। चुनाव नतीजे आने वाले हों, मुख्यमंत्री के नाते नये दायित्व की संभावना हो, लेकिन फिर भी अगर मेरा एक साथी खेल मंत्री के रूप में इस काम की इतनी चिंता करे, तो मुझे आनंद होता है। और मुझे विश्वास है, हम सब इसी प्रकार से खेल के महत्व को समझें। खेल जगत के लोगों को प्रोत्साहित करें, हमारे खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करें। ये अपने-आप में बहुत बड़ी ताकत बन जाती है जी, जब खिलाड़ी को लगता है कि सवा-सौ करोड़ देशवासी उसके साथ खड़े हैं, तो उसका हौसला बुलंद हो जाता है।

पिछली बार मैंने FIFA Under-17 World Cup के लिए बातें की थी और मुझे जो सुझाव आये देश भर से, और इन दिनों मैंने देखा है कि Football का एक माहौल पूरे देश में नज़र आने लगा है। कई लोग initiative लेकर अपनी-अपनी टीम बना रहे हैं। Narendra Modi Mobile App पर मुझे हजारों सुझाव मिले हैं। हो सकता है, बहुत लोग खेलते नहीं होंगे, लेकिन देश के हजारों-लाखों नौजवानों की खेल में इतनी रुचि है, ये अपने-आप में मेरे लिए सुखद अनुभव था। क्रिकेट और भारत का लगाव तो हम जानते हैं, लेकिन मैंने देखा Football में भी इतना लगाव। ये अपने-आप में बड़ा ही एक सुखद भविष्य का संकेत देता है। तो Rio Olympic के लिए पसंदगी के पात्र हमारे सभी खिलाड़ियों के प्रति हम लोग एक उमंग और उत्साह का माहौल बनाएँ आने वाले दिनों में। हर चीज़ को जीत और हार की कसौटी से न कसा जाये। sportsman spirit के साथ भारत दुनिया में अपनी पहचान बनाए। मैं देशवासियों से अपील करता हूँ कि हमारे खेल जगत से जुड़े साथियों के प्रति उत्साह और उमंग का माहौल बनाने में हम भी कुछ करें।

पिछले आठ-दस दिन से कहीं-न-कहीं से नये-नये result आ रहे हैं। मैं चुनाव के result की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं उन विद्यार्थियों की बात कर रहा हूँ, जिन्होंने साल भर कड़ी मेहनत की, exam दी, 10th के, 12th के, एक के बाद एक result आना शुरू हुआ है। ये तो साफ़ हो गया है कि हमारी बेटियाँ पराक्रम दिखा रही हैं। खुशी की बात है। इन परिणामों में जो सफल हुए हैं, उनको मेरी शुभकामना है, बधाई है। जो सफल नहीं हो पाए हैं, उनको मैं फिर से एक बार कहना चाहूँगा कि जिंदगी में करने के लिए बहुत-कुछ होता है। अगर हमारी इच्छा के मुताबिक परिणाम नहीं आया है, तो कोई जिंदगी अटक नहीं जाती है। विश्वास से जीना चाहिए, विश्वास से आगे बढ़ना चाहिए। लेकिन एक बड़े नए प्रकार का मेरे सामने प्रश्न आया है और मैंने वैसे इस विषय में कभी सोचा नहीं था। लेकिन मेरे MyGov पर एक e-mail आया, तो मेरा ध्यान गया। मध्य प्रदेश के कोई Mr. गौरव हैं, गौरव पटेल - उन्होंने एक बड़ी अपनी कठिनाई मेरे सामने प्रस्तुत की है। गौरव पटेल कह रहे हैं कि M.P. के board exam में मुझे 89.33 percent मिले हैं। तो ये पढ़ के मुझे तो लगा, वाह, क्या खुशी की बात है, लेकिन आगे वो अपने दुःख की कथा कह रहे हैं। गौरव पटेल कह रहे हैं कि साहब, 89.33 percent marks लेकर जब मैं घर पहुँचा, तो मैं सोच रहा था कि चारों तरफ़ से मुझे बधाइयाँ मिलेंगी, अभिनन्दन होगा; लेकिन मैं हैरान था, घर में हर किसी ने मुझे यही कहा, अरे यार, चार marks ज्यादा आते, तेरा 90 percent हो जाता। यानि, मेरे परिवार और मेरे मित्र, मेरे teacher - कोई भी मेरे 89.33 percent marks से प्रसन्न नहीं था। हर कोई मुझे कह रहा था, यार, चार marks के लिए तुम्हारा 90 percent रह गया। अब मैं इस बात को समझ नहीं पा रहा हूँ कि ऐसी स्थिति

को कैसे मैं handle करूँ। क्या ज़िंदगी में यही सब कुछ है क्या? क्या मैंने जो किया, वो अच्छा नहीं था क्या? क्या मैं भी कुछ कम पड़ गया क्या? पता नहीं, मेरे मन पर एक बोझ सा अनुभव होता है।

गौरव, आपकी चिट्ठी को मैंने बहुत ध्यान से पढ़ा है और मुझे लगता है, शायद ये वेदना आपकी ही नहीं, आपके जैसे लाखों-करोड़ों विद्यार्थियों की होगी, क्योंकि एक ऐसा माहौल बन गया है कि जो हुआ है, उसके प्रति संतोष के बजाय उसमें से असंतोष खोजना, ये नकारात्मकता का दूसरा रूप है। हर चीज़ में से असंतोष खोजने से समाज को संतोष की दिशा में हम कभी नहीं ले जा सकते हैं। अच्छा होता, आपके परिजनों ने, आपके साथियों ने, मित्रों ने आपके 89.33 percent को सराहा होता, तो आपको अपने-आप ही ज्यादा कुछ करने का मन कर जाता। मैं अभिभावकों से, आसपास के लोगों से ये आग्रह करता हूँ कि आपके बच्चे जो result लेकर आए हैं, उसको स्वीकार कीजिए, स्वागत कीजिए, संतोष व्यक्त कीजिए और उसको आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कीजिए, वरना हो सकता है, वो दिन ये भी आएगा कि आपको 100 percent आने के बाद आप कहें कि भई 100 आया, लेकिन फिर भी तुम कुछ ऐसा करते तो अच्छा होते, तो हर चीज़ की कुछ तो मर्यादा रहनी ही चाहिए।

मुझे जोधपुर से संतोष गिरि गोस्वामी - उन्होंने भी लिखा है, करीब-करीब इसी प्रकार से लिखा है। वे कहते हैं कि मेरे आस-पास के लोग हमारे परिणाम को स्वीकार ही नहीं कर रहे हैं। वो तो कहते हैं कि कुछ और अच्छा कर लेते, कुछ और अच्छा कर लेते। मुझे कविता पूरी याद नहीं है, लेकिन बहुत पहले मैंने पढ़ी थी, किसी कवि ने लिखी थी कि ज़िन्दगी के Canvas पर मैंने वेदना का चित्र बनाया। और जब उसकी प्रदर्शनी थी, लोग आए, हर किसी ने कहा, touch-up की ज़रूरत है, कोई कहता था कि नीले की बजाए पीला होता, तो अच्छा होता; कोई कहता था, ये रेखा यहाँ के बजाये उधर होती, तो अच्छा होता। काश, मेरी इस वेदना के चित्र पर किसी एकाध दर्शक ने भी तो आंसू बहाए होते। ये कविता के शब्द यही थे, ऐसा मुझे अब याद नहीं रहा, लेकिन बहुत पहले की कविता है तो, लेकिन भाव यही था। उस चित्र में से कोई वेदना नहीं समझ पाया, हर कोई touch-up की बात कर रहा था। संतोष गिरि जी, आप की चिंता भी वैसी है, जैसी गौरव की है और आप जैसे करोड़ों विद्यार्थियों की होगी। लोगों की अपेक्षाओं को पूर्ण करने के लिए आप पर बोझ बनता है। मैं तो आप से इतना ही कहूँगा कि ऐसी स्थिति में आप अपना संतुलन मत खोइए। हर कोई अपेक्षायें व्यक्त करता है, सुनते रहिये, लेकिन अपनी बात पर डटे रहिये और कुछ अधिक अच्छा करने का प्रयास भी करते रहिये। लेकिन जो मिला है, उस पर संतोष नहीं करोगे, तो फिर नयी इमारत कभी नहीं बना पाओगे। सफलता की मजबूत नींव ही बड़ी सफलता का आधार बनती है। सफलता में से भी पैदा हुआ असंतोष सफलता की सीढ़ी नहीं बना पाता, वो असफलता की guarantee बन जाता है। और इसलिए मैं आप से आग्रह करूँगा कि जितनी सफलता मिली है, उस सफलता को गुनगुनाओ, उसी में से नयी सफलता की संभावनायें पैदा होंगी। लेकिन ये बात मैं अड़ोस-पड़ोस और माँ-बाप और साथियों से ज्यादा कहना चाहता हूँ कि आप अपने बच्चों के साथ कृपा करके आपकी अपेक्षायें उन पर मत थोपिए। और दोस्तो, क्या कभी-कभी ज़िन्दगी में असफल हुए, तो क्या वो ज़िन्दगी ठहर जाती है क्या? जो कभी exam में अच्छे marks नहीं ला सकता, वो sports में बहुत आगे निकल जाता है, संगीत में आगे निकल जाता है, कलाकारीगरी में आगे निकल जाता है, व्यापार में आगे निकल जाता है। ईश्वर ने हर किसी को कोई-ना-कोई तो अद्भुत विधा दी ही होती है। बस, आप के अपने भीतर की शक्ति को पहचानिए, उस पर बल दीजिए, आप आगे निकल जाएँगे। और ये जीवन में हर जगह पर होता है। आप ने संतूर नाम के वाद्य को सुना होगा। एक ज़माना था, संतूर वाद्य कश्मीर की घाटी में folk music के साथ जुड़ा हुआ था। लेकिन एक पंडित शिव कुमार थे, जिन्होंने उसको हाथ लगाया और आज दुनिया का एक महत्वपूर्ण वाद्य बना दिया। शहनाई - शहनाई हमारे संगीत के पूरे क्षेत्र में सीमित जगह पर था। ज्यादातर राजा-महाराजाओं के जो दरबार हुआ करते थे, उसके gate पर उसका स्थान रहता था। लेकिन जब उस्ताद बिस्मिल्ला खां ने जब शहनाई को हाथ लगाया, तो आज विश्व का उत्तम सा वाद्य बन गया, उसकी एक पहचान बन गई है। और इसलिए आप के पास क्या है, कैसा है, इसकी चिंता छोड़िए, उस पर आप जुट जाइए, जुट जाइए। परिणाम मिलेगा ही मिलेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, कभी-कभी मैं देखता हूँ कि हमारे गरीब परिवारों का भी आरोग्य को लेकर के जो खर्च होता है, वो

जिन्दगी की पटरी को असंतुलित कर देता है। और ये सही है कि बीमार न होने का खर्चा बहुत कम होता है, लेकिन बीमार होने के बाद स्वस्थ होने का खर्चा बहुत ज्यादा होता है। हम ऐसी जिन्दगी क्यों न जियें, ताकि बीमारी आये ही नहीं, परिवार पर आर्थिक बोझ हो ही नहीं। एक तो स्वच्छता बीमारी से बचाने का सबसे बड़ा आधार है। गरीब की सबसे बड़ी सेवा अगर कोई कर सकता है, तो स्वच्छता कर सकती है। और दूसरा जिसके लिए मैं लगातार आग्रह करता हूँ, वो है योग। कुछ लोग उसको 'योगा' भी कहते हैं। 21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस है। पूरे विश्व में योग के प्रति एक आकर्षण भी है, श्रद्धा भी है और विश्व ने इसको स्वीकार किया है। हमारे पूर्वजों की हमें दी हुई एक अनमोल भेंट है, जो हमने विश्व को दी है। तनाव से ग्रस्त विश्व को संतुलित जीवन जीने की ताकत योग देता है। "Prevention is better than cure". योग से जुड़े हुये व्यक्ति के जीवन में स्वस्थ रहना, संतुलित रहना, मज़बूत इच्छा-शक्ति के धनी होना, अप्रतिम आत्मविश्वास से भरा जीवन होना, हर काम में एकाग्रता का होना - ये सहज उपलब्धियाँ होती हैं। 21 जून - योग दिवस, ये सिर्फ एक event नहीं है, इसका व्याप बढ़े, हर व्यक्ति के जीवन में उसका स्थान बने, हर व्यक्ति अपनी दिनचर्या में 20 मिनट, 25 मिनट, 30 मिनट योग के लिए खपाए। और इसके लिए 21 जून योग दिवस हमें प्रेरणा देता है। और कभी-कभी सामूहिक वातावरण व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाने का कारण बनता है। मैं आशा करता हूँ, 21 जून आप जहाँ भी रहते हों, आपके initiative के लिए अभी एक महीना है। आप भारत सरकार की website पर जाओगे, तो योग का जो इस बार का syllabus है, कौन-कौन से आसन करने हैं, किस प्रकार से करने हैं, इसका पूरा वर्णन है उसमें; उसको देखिये, आपके गाँव में करवाइए, आपके मोहल्ले में करवाइए, आपके शहर में करवाइए, आपके स्कूल में, institution में, even offices में भी। अभी से एक महीना शुरू कर दीजिये, देखिये, आप 21 जून को भागीदार बन जाएँगे। मैंने कई बार पढ़ा है कि कई offices में regularly सुबह मिलते ही योग और प्राणायाम सामूहिक होता है, तो पूरे office की efficiency इतनी बढ़ जाती है, पूरे office का culture बदल जाता है, environment बदल जाता है। क्या 21 जून का उपयोग हम अपने जीवन में योग लाने के लिए कर सकते हैं, अपने समाज जीवन में योग लाने के लिए कर सकते हैं, अपने आस-पास के परिसर में योग लाने के लिए कर सकते हैं? मैं इस बार चंडीगढ़ के कार्यक्रम में शरीक होने के लिए जाने वाला हूँ, 21 जून को चंडीगढ़ के लोगों के साथ मैं योग करने वाला हूँ। आप भी उस दिन अवश्य जुड़ें, पूरा विश्व योग करने वाला है। आप कहीं पीछे न रह जाएँ, ये मेरा आग्रह है। आप का स्वस्थ रहना भारत को स्वस्थ बनाने के लिए बहुत आवश्यक है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' के द्वारा आपसे मैं लगातार जुड़ता हूँ। मैंने बहुत पहले आप को एक mobile number दिया था। उस पर missed call करके आप 'मन की बात' सुन सकते थे, लेकिन अब उसको बहुत आसान कर दिया है। अब 'मन की बात' सुनने के लिए अब सिर्फ 4 ही अंक - उसके द्वारा missed call करके 'मन की बात' सुन सकते हैं। वो चार आँकड़ों का number है- 'उन्नीस सौ बाईस-1922-1922' - इस number पर missed call करने से आप जब चाहें, जहाँ चाहें, जिस भाषा में चाहें, 'मन की बात' सुन सकते हैं।

प्यारे देशवासियो, आप सब को फिर से नमस्कार। मेरी पानी की बात मत भूलना। याद रहेगी न? ठीक है। धन्यवाद। नमस्ते।

AKT/AK

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

26-June-2016 11:29 IST

Text of PM's "Mann ki Baat" programme on All India Radio on June 26, 2016

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सबको नमस्कार। गत वर्ष हमने गर्मी की भयंकर पीड़ा, पानी का अभाव, सूखे की स्थिति, न जाने कितनी-कितनी कसौटियों से गुजरना पड़ा। लेकिन पिछले दो हफ्ते से, अलग-अलग स्थानों से बारिश की खबरें आ रही हैं। बारिश की खबरों के साथ-साथ, एक ताजगी का अहसास भी हो रहा है। आप भी अनुभव करते होंगे और जैसे वैज्ञानिक बता रहे हैं, इस बार वर्षा अच्छी होगी, सर्वदूर होगी और वर्षा ऋतु के पूरे कालखण्ड दरम्यान होगी। ये अपने आप में एक नया उत्साह भरने वाली खबरें हैं। मैं सभी किसान भाइयों को भी अच्छी वर्षा ऋतु की बहुत-बहुत शुभकामनायें देता हूँ।

हमारे देश में जैसे किसान मेहनत करता है, हमारे वैज्ञानिक भी देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए बहुत सफलताएँ प्राप्त कर रहे हैं। और मेरा तो पहले से मत रहा है कि हमारी नई पीढ़ी वैज्ञानिक बनने के सपने देखे, विज्ञान में रुचि ले, आने वाली पीढ़ियों के लिये कुछ कर गुजरने की इच्छा के साथ हमारी युवा पीढ़ी आगे आए। मैं आज और भी एक खुशी की बात आपसे share करना चाहता हूँ। कल मैं पुणे गया था, Smart City Project की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वहाँ कार्यक्रम था और वहाँ मैंने पुणे के College of Engineering के जिन विद्यार्थियों ने स्वयं की मेहनत से, स्वयं उपग्रह बनाया और जिसे 22 जून को प्रक्षेपित किया गया, उनको मिलने के लिए बुलाया था। क्योंकि मेरा मन करता था कि मैं इन मेरे युवा साथियों को देखूँ तो सही! उनको मिलूँ तो सही! उनके भीतर जो ऊर्जा है, उत्साह है, उसका मैं भी तो अनुभव करूँ! पिछले कई वर्षों से अनेक विद्यार्थियों ने इस काम में अपना योगदान दिया। ये academic satellite एक प्रकार से युवा भारत के हौसले की उड़ान का जीता जागता नमूना है। और ये हमारे छात्रों ने बनाया। इन छोटे से satellite के पीछे जो सपने हैं, वो बहुत बड़े हैं। उसकी जो उड़ान है, बहुत ऊँची है और उसकी जो मेहनत है, वो बहुत गहरी है। जैसे पुणे के छात्रों ने किया, वैसे ही तमिलनाडु, चेन्नई की सत्यभामा यूनिवर्सिटी के students द्वारा भी एक satellite बनाया गया और वो SathyabamaSat को भी प्रक्षेपित किया गया। हम तो बचपन से ये बातें सुनते आये हैं और हर बालक के मन में आसमान को छूने और कुछ तारों को मुठ्ठी में कैद करने की ख्वाहिश हमेशा रहती है और इस लिहाज़ से। SRO द्वारा भेजे गये, छात्रों के द्वारा बनाये हुए दोनों satellite मेरी दृष्टि से बहुत अहम् हैं, बेहद खास हैं। ये सभी छात्र बधाई के पात्र हैं। मैं देशवासियों को भी बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूँ कि 22 जून को। SRO के हमारे वैज्ञानिकों ने एक साथ 20 satellite अन्तरिक्ष में भेजकर अपने ही पुराने रेकॉर्ड को तोड़ करके एक नया रिकॉर्ड बना दिया और ये भी खुशी की बात है कि भारत में ये जो 20 satellite launch किये गए, उसमें से 17 satellite अन्य देशों के हैं। अमेरिका सहित कई देशों के satellite launch करने का काम भारत की धरती से, भारत के वैज्ञानिकों के द्वारा हुआ और इनके साथ वही दो satellite , जो हमारे छात्रों ने बनाये थे, वे भी अन्तरिक्ष में पहुँचे। और ये भी विशेषता है कि ISRO ने कम लागत और सफलता की guarantee के चलते दुनिया में खास जगह बना ली है और उसके कारण विश्व के कई देश launching के लिए आज भारत की तरफ नज़र कर रहे हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' ये बात अब भारत में जन-जन के मन की बात बन गयी है। लेकिन कुछ घटनायें उसमें एक नई ज़िंदगी ले आती हैं, नये प्राण भर देती हैं। इस बार 10वीं-12वीं की परीक्षाओं के जो नतीजे आये हैं, हमारी बेटियाँ मैदान मार रही हैं और गर्व होता है। और मेरे देशवासियों हम सब गर्व करें, ऐसी एक और महत्वपूर्ण बात - 18 जून को भारतीय वायु सेना में पहली बार first batch of women fighter pilots in the Indian Air Force, भारतीय वायुसेना में महिला लड़ाकू pilot की पहली batch, ये सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं न! कितना गर्व होता है कि हमारे तीन Flying Officer बेटियाँ अवनि चतुर्वेदी, भावना कंठ और मोहना, जिन्होंने हमें गौरव दिलाया है। इन तीन बेटियों

की खास बात है। Flying Officer अवनि मध्य प्रदेश के रीवा से हैं, Flying Officer भावना बिहार में बेगूसराय से हैं और Flying Officer मोहना गुजरात के बड़ोदरा से हैं। आपने देखा होगा कि तीनों बेटियाँ हिन्दुस्तान के मेट्रो शहर से नहीं हैं। वे अपने-अपने राज्यों की राजधानी से भी नहीं हैं। ये छोटे शहरों से होने के बावजूद भी इन्होंने आसमान जैसे ऊंचे सपने देखे और उसे पूरा करके दिखाया। मैं अवनि, मोहना, भावना इन तीनों बेटियों को और उनके माँ-बाप को भी हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, कुछ दिन पूर्व पूरे विश्व ने 21 जून को 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' की वर्षगाँठ पर भव्य कार्यक्रम किये। एक भारतीय के नाते पूरा विश्व जब योग से जुड़ा है, तब हम अहसास करते हैं, जैसे दुनिया हमारे कल, आज और कल से जुड़ रही है। विश्व के साथ हमारा एक अनोखा नाता बन रहा है। भारत में भी एक लाख से अधिक स्थानों पर बहुत उमंग और उत्साह के साथ, भांति-भांति के रंग-रूप के साथ रंगारंग माहौल में अन्तर्राष्ट्रीय योग-पर्व मनाया गया। मुझे भी चंडीगढ़ में हजारों योग प्रेमियों के साथ उनके बीच योग करने का अवसर मिला। आबाल-वृद्ध सबका उत्साह देखने लायक था। आपने देखा होगा, पिछले सप्ताह भारत सरकार ने इस अन्तर्राष्ट्रीय योग-पर्व के निमित्त ही 'सूर्य नमस्कार' की डाक टिकट भी जारी की है। इस बार विश्व में 'Yoga Day' के साथ-साथ दो चीज़ों पर लोगों का विशेष ध्यान गया। एक तो अमेरिका के New York शहर में जहाँ संयुक्त राष्ट्र संघ की building है, उस building के ऊपर योगासन की भिन्न-भिन्न कृतियों का विशेष projection किया गया और वहाँ आते-जाते लोग उसकी फोटो लेते रहते थे और और दुनिया भर में वो फोटो प्रचलित हो गयी। ये बातें किस भारतीय को गौरव नहीं दिलाएँगी - ये बताइये न! और भी एक बात हुई, technology अपना काम कर रही है। Social media की अपनी एक पहचान बन गयी है और इस बार योग में Twitter ने Yoga images के साथ celebration का एक हल्का-फुल्का प्रयोग भी किया। hashtag 'Yoga Day' type करते ही Yoga वाले images का चित्र हमारे मोबाइल फोन पर आ जाता था और दुनिया भर में वो प्रचलित हो गया। योग का मतलब ही होता है जोड़ना। योग में पूरे जगत को जोड़ने की ताकत है। बस, ज़रूरत है, हम योग से जुड़ जाएँ।

मध्य प्रदेश के सतना से स्वाति श्रीवास्तव ने इस योग दिवस के बाद मुझे एक टेलीफोन किया और उसने मुझे एक message दिया है आप सबके लिए, लेकिन लगता है, शायद वो ज़्यादा मेरे लिए है: -

"मैं चाहती हूँ कि मेरा पूरा देश स्वस्थ रहे, उसका गरीब व्यक्ति भी निरोग रहे। इसके लिए मैं चाहती हूँ कि दूरदर्शन में हर एक सीरियल के बीच में जो सारे ads (advertisement) आते हैं, उसमें से किसी एक ad में योग के बारे में बताएँ। उसे कैसे करते हैं? उसके क्या लाभ होते हैं?" स्वाति जी, आपका सुझाव तो अच्छा है, लेकिन अगर आप थोड़ा ध्यान से देखोगे, तो आपके ध्यान में आएगा; न सिर्फ़ दूरदर्शन इन दिनों भारत और भारत बाहर, टी.वी. मीडिया के जगत में प्रतिदिन योग के प्रचार में भारत के और दुनिया के सभी टी.वी. चैनल कोई-न-कोई अपना योगदान दे रही हैं। हर एक के अलग-अलग समय हैं। लेकिन अगर आप ध्यान से देखोगी, तो योग के विषय में जानकारी पाने के लिए ये सब हो ही रहा है। और मैंने तो देखा है, दुनिया के कुछ देश ऐसे हैं कि जहाँ चौबीसों घंटे योग को समर्पित चैनल भी चलती हैं। और आपको पता होगा कि मैं जून महीने में 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' निमित्त प्रतिदिन Twitter और Facebook के माध्यम से हर दिन एक नये आसन का वीडियो शेयर करता था। अगर आप आयुष मंत्रालय की वेबसाइट पर जायेंगे, तो 40-45 मिनट का एक-के-बाद एक शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों के लिए किस प्रकार के योग कर सकते हैं, हर आयु के लोग कर सकते हैं, ऐसे सरल योगों का, योग का एक अच्छा वीडियो वेबसाइट पर उपलब्ध है। मैं आपको भी और आपके माध्यम से सभी योग के जिज्ञासुओं को कहूँगा कि वे ज़रूर इसके साथ जुड़ें।

मैंने इस बार एक आवाहन किया है कि जब हम कहते हैं कि योग रोग मुक्ति का माध्यम है, तो क्यों न हम सब मिल कर के जितने भी School of Thoughts हैं योग के सम्बन्ध में; हर एक के अपने-अपने तरीके हैं, हर एक के अपने-अपने priorities हैं, हर एक के अपने अलग-अलग अनुभव हैं, लेकिन सब का अंतिम लक्ष्य एक है। मैं इन जितने प्रकार के योग की विधायें चल रही हैं, जितने प्रकार के योग के institutions चल रही हैं, जितने प्रकार के योग गुरु हैं, सबसे मैंने आग्रह

किया है कि क्या हम पूरा ये वर्ष मधुमेह के खिलाफ, Diabetes के खिलाफ, योग के द्वारा एक सफल अभियान चला सकते हैं क्या? क्या योग से Diabetes को Control किया जा सकता है? कुछ लोगों को उसमें सफलता मिली है। हर-एक ने अपने-अपने तरीके से रास्ते खोजे हैं और हम जानते हैं कि Diabetes का वैसे कोई उपचार नहीं बताता है। दवाइयाँ ले कर के गुजारा करना पड़ता है और Diabetes ऐसा राज-रोग है कि जो बाकी सब रोगों का यजमान बन जाता है। भांति-भांति बीमारियों का वो entrance बन जाता है और इसलिए हर कोई Diabetes से बचना चाहता है। बहुत लोगों ने इस दिशा में काम भी किया है। कुछ Diabetic patients ने भी अपनी यौगिक practice के द्वारा उसको नियंत्रित किया है। क्यों न हम अपने अनुभवों को लोगों के बीच share करें। इसको एक momentum दें। साल भर एक माहौल बनाएँ। मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि 'Hashtag Yoga Fights Diabetes', मैं फिर से कह देता हूँ 'Hashtag Yoga Fights Diabetes' को use कर अपने अनुभव Social Media पर share करें या मुझे Narendra Modi App पर भेजें। देखें तो सही, किस के क्या अनुभव हैं, प्रयास तो करें। मैं आपको निमंत्रित करता हूँ "Hashtag Yoga Fights Diabetes" पर अपने अनुभवों को share करने के लिए। मेरे प्यारे देशवासियों, कभी-कभी मेरे 'मन की बात' की बड़ी मजाक भी उड़ाई जाती है, बहुत आलोचना भी की जाती है, लेकिन ये इसलिये संभव है, क्योंकि हम लोग लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्ध हैं। लेकिन आज जब 26 जून, मैं आपसे बात कर रहा हूँ तब, खासकर के नई पीढ़ी को कहना चाहता हूँ कि जिस लोकतंत्र का हम गर्व करते हैं, जिस लोकतंत्र ने हमें एक बहुत बड़ी ताकत दी है, हर नागरिक को बड़ी ताकत दी है; लेकिन 26 जून, 1975 वो भी एक दिन था। 25 जून की रात और 26 जून की सुबह हिंदुस्तान के लोकतंत्र के लिए एक ऐसी काली रात थी कि भारत में आपातकाल लागू किया गया। नागरिकों के सारे अधिकारों को खत्म कर दिया गया। देश को जेलखाना बना दिया गया। जयप्रकाश नारायण समेत देश के लाखों लोगों को, हजारों नेताओं को, अनेक संगठनों को, जेल के सलाखों के पीछे धकेल दिया गया। उस भयंकर काली घटना पर अनेक किताबें लिखी गई हैं। अनेक चर्चाएँ भी हुई हैं, लेकिन आज जब मैं 26 जून को आपसे बात कर रहा हूँ, तब इस बात को हम न भूलें कि हमारी ताकत लोकतंत्र है, हमारी ताकत लोक-शक्ति है, हमारी ताकत एक-एक नागरिक है। इस प्रतिबद्धता को हमें आगे बढ़ाना है, और ताकतवर बनाना है और भारत के लोगों की ये ताकत है कि उन्होंने लोकतंत्र को जी के दिखाया है। अखबारों पर ताले लगे हों, रेडियो एक ही भाषा बोलता हो, लेकिन दूसरी तरफ देश की जनता मौका पड़ते ही लोकतांत्रिक शक्तियों का परिचय करवा दे। ये बातें किसी देश के लिए बहुत बड़ी शक्ति का रूप हैं। भारत के सामान्य मानव की लोकतान्त्रिक शक्ति का उत्तम उदाहरण आपातकाल में प्रस्तुत हुआ है और लोकतान्त्रिक शक्ति का वो परिचय बार-बार देश को याद कराते रहना चाहिए। लोगों की शक्ति का एहसास करते रहना चाहिए और लोगों की शक्ति को बल मिले, इस प्रकार की हमारी हर प्रकार से प्रवृत्ति रहनी चाहिए और लोगों को जोड़ना चाहिए। मैं हमेशा कहता हूँ कि भाई, लोकतंत्र का मतलब ये नहीं होता कि लोग vote करें और पाँच साल के लिए आपको देश चलाने का contract दे दें। जी नहीं, vote करना तो लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण है, लेकिन और भी बहुत सारे पहलू हैं और सबसे बड़ा पहलू है जन-भागीदारी। जनता का मिजाज, जनता की सोच, और सरकारें जितनी जनता से ज्यादा जुड़ती हैं, उतनी देश की ताकत ज्यादा बढ़ती है। जनता और सरकारों के बीच की खाई ने ही हमारी बर्बादी को बल दिया है। मेरी हमेशा कोशिश है कि जन-भागीदारी से ही देश आगे बढ़ना चाहिए।

अभी-अभी जब मेरी सरकार के 2 साल पूरे हुए, तो कुछ आधुनिक विचार वाले नौजवानों ने मुझे सुझाव दिया कि आप इतनी बड़ी लोकतंत्र की बातें करते हैं, तो क्यों न आप अपनी सरकार का मूल्यांकन लोगों से करवाएँ। वैसे एक प्रकार से उनका चुनौती का ही स्वर था, सुझाव का भी स्वर था। लेकिन उन्होंने मेरे मन को झकझोर दिया। मैंने कुछ अपने वरिष्ठ साथियों के बीच में ये विषय रखा, तो प्रथम प्रतिक्रिया तो reaction ऐसा ही था कि नहीं-नहीं जी साहब, ये आप क्या करने जा रहे हो? आज तो technology इतनी बदल चुकी है कि अगर कोई इकट्ठे हो जाये, कोई गुट बन जाये और technology का दुरुपयोग कर गये, तो पता नहीं Survey कहाँ से कहाँ ले जाएंगे। उन्होंने चिंता जाहिर की। लेकिन मुझे लगा, नहीं-नहीं, risk लेना चाहिए, कोशिश करनी चाहिए। देखें, क्या होता है, और मेरे प्यारे देशवासियों, खुशी की बात है कि जब मैंने technology के माध्यम से अलग-अलग भाषाओं का उपयोग करते हुए जनता को मेरी सरकार का मूल्यांकन करने के लिए आवाहन किया। चुनाव के बाद भी तो बहुत survey होते हैं, चुनाव के दरम्यान भी survey होते हैं, कभी-कभी बीच में कुछ issues पर भी survey होते हैं, लोकप्रियता पर survey होते हैं, लेकिन उसकी sample size ज्यादा

नहीं होती है। आप में से बहुत लोगों ने 'Rate My Government-MyGov.in' पर अपना opinion दिया है। वैसे तो लाखों लोगों ने इसमें रुचि दिखाई लेकिन 3 लाख लोगों ने एक-एक सवाल का जवाब देने के लिए मेहनत की है, काफी समय निकाला है। मैं उन 3 लाख लोगों का बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने स्वयं सक्रियता दिखाई, सरकार का मूल्यांकन किया। मैं नतीजों की चर्चा नहीं करता हूँ, वो हमारे Media के लोग जरूर करेंगे। लेकिन एक अच्छा प्रयोग था, इतना तो मैं जरूर कहूँगा और मेरे लिए भी खुशी की बात थी कि हिंदुस्तान की सभी भाषाएँ बोलने वाले, हर कोने में रहने वाले, हर प्रकार के background वाले लोगों ने इसमें हिस्सा लिया और सबसे बड़ी मेरे लिए अचरज तो है ही है कि भारत सरकार की जो ग्रामीण रोजगार की योजना चलती है, उस योजना की जो Website है, उस Portal पर सब से ज्यादा लोगों ने बढ़-चढ़ कर के हिस्सा लिया। इसका मतलब कि ग्रामीण जीवन से जुड़े, गरीबी से जुड़े हुए लोगों का इसमें बहुत बड़ा सक्रिय योगदान था, ऐसा मैं प्राथमिक अनुमान लगाता हूँ। ये मुझे और ज्यादा अच्छा लगा। तो आपने देखा, एक वो भी दिन था, जब कुछ वर्ष पहले 26 जून को जनता की आवाज दबोच दी गई थी और ये भी वक्त है कि जब जनता खुद तय करती है, बीच-बचाव तय करती है कि देखें तो सही, सरकार ठीक कर रही है कि गलत कर रही है, अच्छा कर रही है, बुरा कर रही है। यही तो लोकतंत्र की ताकत है।

मेरे प्यारे देशवासियों, आज मैं एक बात के लिए विशेष आग्रह करना चाहता हूँ। एक ज़माना था, जब taxes इतने व्यापक हुआ करते थे कि tax में चोरी करना स्वभाव बन गया था। एक ज़माना था, विदेश की चीज़ों को लाने के सम्बन्ध में कई restriction थे, तो smuggling भी उतना ही बढ़ जाता था, लेकिन धीरे-धीरे वक्त बदलता गया है। अब करदाता को सरकार की कर-व्यवस्था से जोड़ना अधिक मुश्किल काम नहीं है, लेकिन फिर भी पुरानी आदतें जाती नहीं हैं। एक पीढ़ी को अभी भी लगता है कि भाई, सरकार से दूर रहना ज्यादा अच्छा है। मैं आज आपसे आग्रह करना चाहता हूँ कि नियमों से भाग कर के हम अपने सुख-चैन गवाँ देते हैं। कोई भी छोटा-मोटा व्यक्ति हमें परेशान कर सकता है। हम ऐसा क्यों होने दें? क्यों न हम स्वयं अपनी आय के सम्बन्ध में, अपनी संपत्ति के सम्बन्ध में, सरकार को अपना सही-सही ब्यौरा दे दें। एक बार पुराना जो कुछ भी पड़ा हो, उससे मुक्त हो जाइए। इस बोझ से मुक्त होने के लिए मैं देशवासियों को आग्रह करता हूँ। जिन लोगों के पास Undisclosed Income है, अघोषित आय है, उनके लिए भारत सरकार ने एक मौका दिया है कि आप अपनी अघोषित आय को घोषित कीजिये। सरकार ने 30 सितम्बर तक अघोषित आय को घोषित करने के लिए विशेष सुविधा देश के सामने प्रस्तुत की है। जुर्माना देकर के हम अनेक प्रकार के बोझ से मुक्त हो सकते हैं। मैंने ये भी वादा किया है कि स्वेच्छा से जो अपने मित्तिकयत के सम्बन्ध में, अघोषित आय के सम्बन्ध में सरकार को अपनी जानकारी दे देंगे, तो सरकार किसी भी प्रकार की जांच नहीं करेगी। इतना धन कहाँ से आया, कैसे आया - एक बार भी पूछा नहीं जाएगा और इसलिए मैं कहता हूँ कि अच्छा मौका है कि आप एक पारदर्शी व्यवस्था का हिस्सा बन जाइए। साथ-साथ मैं देशवासियों को कहना भी चाहता हूँ कि 30 सितम्बर तक की ये योजना है, इसको एक आखिरी मौका मान लीजिए। मैंने बीच में हमारे सांसदों को भी कहा था कि 30 सितम्बर के बाद अगर किसी नागरिक को तकलीफ हो, जो सरकारी नियमों से जुड़ना नहीं चाहता है, तो उनकी कोई मदद नहीं हो सकेगी। मैं देशवासियों को भी कहना चाहता हूँ कि हम 30 सितम्बर के बाद ऐसा कुछ भी ना हो, जिससे आपको कोई तकलीफ हो, इसलिए भी मैं कहता हूँ, अच्छा होगा 30 सितम्बर के पहले आप इस व्यवस्था का लाभ उठाएँ और 30 सितम्बर के बाद संभावित तकलीफों से अपने-आप को बचा लें।

मेरे देशवासियों, आज ये बात मुझे 'मन की बात' में इसलिए करनी पड़ी कि अभी मैंने हमारे जो Revenue विभाग - Income Tax, Custom, Excise - उनके सभी अधिकारियों के साथ मैंने एक दो-दिन का ज्ञान-संगम किया, बहुत विचार-विमर्श किया और मैंने उनको साफ-साफ शब्दों में कहा है कि हम नागरिकों को चोर न मानें। हम नागरिकों पर भरोसा करें, विश्वास करें, hand-holding करें। अगर वे नियमों से जुड़ना चाहते हैं, उनको प्रोत्साहित करके प्यार से साथ में ले आएँ। एक विश्वास का माहौल पैदा करना आवश्यक है। हमारे आचरण से हमें बदलाव लाना होगा। Taxpayer को विश्वास दिलाना होगा। मैंने बहुत आग्रह से इन बातों को उनसे कहा है और मैं देख रहा था कि उनको भी लग रहा है कि आज जब देश आगे बढ़ रहा है, तो हम सबने योगदान देना चाहिए। और इस ज्ञान-संगम में जब मैं जानकारी ले रहा था, तो एक

जानकारी मैं आपको भी बताना चाहता हूँ। आप में से कोई इस बात पर विश्वास नहीं करेगा कि सवा-सौ करोड़ के देश में सिर्फ और सिर्फ डेढ़ लाख लोग ही ऐसे हैं, जिनकी Taxable Income पचास लाख रुपये से ज्यादा है। ये बात किसी के गले उतरने वाली नहीं है। पचास लाख से ज्यादा Taxable Income वाले लोग बड़े-बड़े शहरों में लाखों की तादाद में दिखते हैं। एक-एक करोड़, दो-दो करोड़ के Bungalow देखते ही पता चलता है कि ये कैसे पचास लाख से कम आय के दायरे में हो सकते हैं। इसका मतलब कुछ तो गड़बड़ है, इस स्थिति को बदलना है और 30 सितम्बर के पहले बदलना है। सरकार को कोई कठोर कदम उठाने से पहले जनता-जनार्दन को अवसर देना चाहिए और इसलिए मेरे प्यारे भाइयो-बहनो, अघोषित आय को घोषित करने का एक स्वर्णिम अवसर है। दूसरे प्रकार से, 30 सितम्बर के बाद होने वाले संकटों से मुक्ति का एक मार्ग है। मैं देश की भलाई के लिये, देश के गरीबों के कल्याण के लिये आपको इस काम में आने के लिए आग्रह करता हूँ और मैं नहीं चाहता हूँ कि 30 सितम्बर के बाद आपको कोई तकलीफ हो।

मेरे प्यारे देशवासियो, इस देश का सामान्य मानव देश के लिए बहुत-कुछ करने के लिए अवसर खोजता रहता है। जब मैंने लोगों से कहा - रसोई गैस की subsidy छोड़ दीजिये, इस देश के एक करोड़ से ज्यादा परिवारों ने स्वेच्छा से subsidy छोड़ दी। मैं खास करके जिनके पास अघोषित आय है, उनके लिए एक खास उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता हूँ। मैं कल Smart City के कार्यक्रम के निमित्त पुणे जब गया था, तो वहाँ मुझे श्रीमान चन्द्रकान्त दामोदर कुलकर्णी और उनके परिवारजनों से मिलने का सौभाग्य मिला। मैंने उनको खास मिलने के लिए बुलाया था और कारण क्या है, जिसने कभी भी कर चोरी की होगी, उनको मेरी बात शायद प्रेरणा दे या ना दे, लेकिन श्रीमान चन्द्रकान्त कुलकर्णी की बात तो ज़रूर प्रेरणा देगी। आप जानते हैं, क्या कारण है? ये चन्द्रकान्त कुलकर्णी जी एक सामान्य मध्यम-वर्गीय परिवार के व्यक्ति हैं। सरकार में नौकरी करते थे, retire हो गए, 16 हजार रुपया उनको pension मिलती है। और मेरे प्यारे देशवासियो, आपको ताज्जुब होगा और जो कर-चोरी करने की आदत रखते हैं, उनको तो बड़ा सदमा लगेगा कि ये चन्द्रकान्त जी कुलकर्णी हैं, जिन्हें सिर्फ 16 हजार रुपये का pension मिलता है, लेकिन कुछ समय पहले उन्होंने मुझे चिट्ठी लिखी और कहा था कि मैं मेरे 16 हजार रुपये के pension में से हर महीने 5 हजार रुपया स्वच्छता अभियान के लिए donate करना चाहता हूँ और इतना ही नहीं, उन्होंने मुझे 52 Cheque, Fifty Two Cheque, post-dated, जो कि हर महीना एक-एक Cheque की date है, Cheque भेज दिए हैं। जिस देश का एक सरकारी मुलाज़िम निवृत्ति के बाद सिर्फ 16 हजार के pension में से 5 हजार रुपया स्वच्छता के अभियान के लिए दे देता हो, इस देश में कर चोरी करने का हमें हक नहीं बनता है। चन्द्रकान्त कुलकर्णी से बड़ा कोई हमारी प्रेरणा का कारण नहीं हो सकता है। और स्वच्छता अभियान से जुड़े हुये लोगों के लिए भी चन्द्रकान्त कुलकर्णी से बड़ा उत्तम उदाहरण नहीं हो सकता है। मैंने चन्द्रकान्त जी को रूबरू बुलाया, उनसे मिला, मेरे मन को उनका जीवन छू गया। उस परिवार को मैं बधाई देता हूँ और ऐसे तो अनगिनत लोग होंगे, शायद हो सकता है, मेरे पास उनकी जानकारी न हो, लेकिन यही तो लोग हैं, यही तो लोक-शक्ति है, यही तो ताकत है। 16 हजार की pension वाला व्यक्ति, दो लाख साठ हजार के Cheque advance में मुझे भेज दे, क्या ये छोटी बात है क्या? आओ, हम भी अपने मन को जरा टटोलें, हम भी सोचें कि सरकार ने हमारी आय को घोषित करने के लिये अवसर दिया है, हम भी चन्द्रकान्त जी को याद करके, हम भी जुड़ जाएँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल से संतोष नेगी जी ने phone करके अपना एक अनुभव share किया है। जल संचय की बात पर उन्होंने मुझे संदेश दिया है। उनका ये अनुभव देशवासियो, आपको भी काम आ सकता है: -

“हमने आपकी प्रेरणा से अपने विद्यालय में वर्षा जल ऋतु शुरू होने से पहले ही 4 फीट के छोटे-छोटे ढाई-सौ गड्ढे खेल के मैदान के किनारे-किनारे बना दिए थे, ताकि वर्षा जल उसमें समा सके। इस प्रक्रिया में खेल का मैदान भी खराब नहीं हुआ, बच्चों के डूबने का खतरा भी नहीं हुआ और करोड़ों लीटर पानी मैदान का हमने वर्षा जल सब बचाया है।”

संतोष जी, मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ कि आपने मुझे ये संदेश दिया और पौड़ी गढ़वाल, पहाड़ी इलाका और वहाँ भी आपने काम किया, आप बधाई के पात्र हैं। और मुझे विश्वास है कि देशवासी भी बारिश का तो मज़ा ज़रूर लें, लेकिन ये

परमात्मा का दिया हुआ प्रसाद है, ये अपरंपार संपत्ति है। एक-एक बूँद जल का बचाने के लिये हम कुछ-न-कुछ प्रयास करें। गाँव का पानी गाँव में, शहर का पानी शहर में हम कैसे रोक लें? ये पृथ्वी माता को फिर से एक बार recharge करने के लिये हम उस पानी को फिर से जमीन में वापस कैसे भेजें? जल है, तभी तो कल है, जल ही तो जीवन का आधार है। पूरे देश में एक माहौल तो बना है, पिछले दिनों हर राज्य में, जल संचय के अनेक प्रकल्प किये हैं। लेकिन, अब जब जल आया है, तो देखिये, कहीं चला तो न जाये। जितनी चिंता जीवन को बचाने की है, उतनी ही चिंता जल बचाने की होनी चाहिये।

मेरे प्यारे देशवासियो, आप तो जानते हैं, उन्नीस सौ बाईस नम्बर अब तो आपके याददाश्त का हिस्सा बन गया है। One Nine Two Two, उन्नीस सौ बाईस। ये उन्नीस सौ बाईस ऐसा नंबर है, जिस पर अगर आप missed call करें तो आप 'मन की बात' को अपनी पसंदगी की भाषा में सुन सकते हैं। अपने समय के अनुसार, अपनी भाषा में, मन की बात सुन करके देश की विकास यात्रा में योगदान देने का आप भी मन बना लें।

सभी देशवासियो को बहुत-बहुत नमस्कार। धन्यवाद।

AKT/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

31-जुलाई-2016 11:39 IST

31 जुलाई 2016 को आकाशवाणी पर प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। आज सुबह-सुबह मुझे दिल्ली के नौजवानों के साथ कुछ पल बिताने का अवसर मिला और मैं मानता हूँ कि आने वाले दिनों में पूरे देश में खेल का रंग हर नौजवान को उत्साह-उमंग के रंग से रंग देगा। हम सब जानते हैं कि कुछ ही दिनों में विश्व का सबसे बड़ा खेलों का महाकुम्भ होने जा रहा है। Rio हमारे कानों में बार-बार गूँजने वाला है। सारी दुनिया खेलती होगी, दुनिया का हर देश अपने खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर बारीकी से नज़र रखता होगा, आप भी रखेंगे। हमारी आशा-अपेक्षाएँ तो बहुत होती हैं, लेकिन Rio में जो खेलने के लिये गए हैं, उन खिलाड़ियों को, उनका हौसला बुलंद करने का काम भी सवा-सौ करोड़ देशवासियों का है। आज दिल्ली में भारत सरकार ने 'Run for Rio', 'खेलो और जिओ', 'खेलो और खिलो' - एक बड़ा अच्छा आयोजन किया। हम भी आने वाले दिनों में, जहाँ भी हों, हमारे खिलाड़ियों को प्रोत्साहन के लिये कुछ-न-कुछ करें। यहाँ तक जो खिलाड़ी पहुँचता है, वो बड़ी कड़ी मेहनत के बाद पहुँचता है। एक प्रकार की कठोर तपस्या करता है। खाने का कितना ही शौक क्यों न हो, सब कुछ छोड़ना पड़ता है। ठण्ड में नींद लेने का इरादा हो, तब भी बिस्तर छोड़ करके मैदान में भागना पड़ता है और न सिर्फ़ खिलाड़ी, उनके माँ-बाप भी, उतने ही मनोयोग से अपने बालकों के पीछे शक्ति खपाते हैं। खिलाड़ी रातों-रात नहीं बनते। एक बहुत बड़ी तपस्या के बाद बनते हैं। जीत और हार उतने महत्वपूर्ण हैं, लेकिन साथ-साथ इस खेल तक पहुँचना, वो भी उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है और इसीलिए हम सभी देशवासी Rio Olympic के लिए गए हुए हमारे सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएँ दें। आपकी तरफ़ से ये काम मैं भी करने के लिए तैयार हूँ। इन खिलाड़ियों को आपका सन्देश पहुँचाने के लिए देश का प्रधानमंत्री postman बनने को तैयार है।

आप मुझे 'NarendraModi App' पर खिलाड़ियों के नाम शुभकामनाएँ भेजिए, मैं आपकी शुभकामनाएँ उन तक पहुँचाऊंगा। मैं भी सवा-सौ करोड़ देशवासियों की तरह एक देशवासी, एक नागरिक के नाते हमारे इन खिलाड़ियों की हौसला अफ़ज़ाई के लिए आपके साथ रहूँगा। आइये, हम सब आने वाले दिनों में एक-एक खिलाड़ी को जितना गौरवान्वित कर सकते हैं, उसके प्रयासों को पुरस्कृत कर सकते हैं, करें और आज जब मैं Rio Olympic की बात कर रहा हूँ, तो एक कविता प्रेमी - पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थी सूरज प्रकाश उपाध्याय - उन्होंने एक कविता भेजी है। हो सकता है, और भी बहुत कवि होंगे, जिन्होंने कविताएँ लिखी होंगी, शायद कविताएँ लिखेंगे भी, कुछ लोग तो उसको स्वरबद्ध भी करेंगे, हर भाषा में करेंगे, लेकिन मुझे सूरज जी ने जो कविता भेजी है, मैं आपसे share करना चाहता हूँ: -

“शुरू हुई ललकार खेलों की,

शुरू हुई ललकार खेलों की, प्रतियोगिताओं के बहार की,

खेलों के इस महाकुम्भ में, Rio की रुम-झुम में,

खेलों के इस महाकुम्भ में, Rio की रुम-झुम में,

भारत की ऐसी शुरुआत हो,

भारत की ऐसी शुरुआत हो, सोने, चाँदी और काँसे की बरसात हो,

भारत की ऐसी शुरुआत हो, सोने, चाँदी और काँसे की बरसात हो,

अब हमारी भी बारी हो, ऐसी अपनी तैयारी हो,

हो निशाना सोने पे,

हो निशाना सोने पे, न हो निराश तुम खोने पे,

न हो निराश तुम खोने पे ॥

करोड़ों दिलों की शान हो, अपने खेलों की जान हो,

करोड़ों दिलों की शान हो, अपने खेलों की जान हो,

ऐसे कीर्तिमान बनाओ, Rio में ध्वज लहराओ,

Rio में ध्वज लहराओ ॥”

सूरज जी, आपके भावों को मैं इन सभी खिलाड़ियों को अर्पित करता हूँ और मेरी तरफ़ से, सवा-सौ करोड़ देशवासियों की तरफ़ से Rio में हिन्दुस्तान का झंडा फहराने के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें देता हूँ।

एक नौजवान कोई श्रीमान अंकित करके हैं, उन्होंने मुझे राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी की पुण्यतिथि का स्मरण करवाया है। गत सप्ताह अब्दुल कलाम जी की पुण्यतिथि पर देश और दुनिया ने श्रद्धांजलि दी, लेकिन जब भी अब्दुल कलाम जी का नाम आता है, तो science, technology, missile - एक भावी भारत के सामर्थ्य का चित्र हमारी आँखों के सामने अंकित हो जाता है और इसीलिए अंकित ने भी लिखा है कि आपकी सरकार अब्दुल कलाम जी के सपनों को साकार करने के लिए क्या कर रही है ? आपकी बात सही है। आने वाला युग technology driven है और technology सबसे ज़्यादा चंचल है। आये दिन technology बदलती है, आये दिन नया रूप धारण करती है, आये दिन नया प्रभाव पैदा करती है, वो बदलती रहती है। आप technology को पकड़ नहीं सकते, आप पकड़ने जाओगे, तब तक तो कहीं दूर नये रूप-रंग के साथ सज जाती है और उसको अगर हमने कदम मिलाने हैं और उससे आगे निकलना है, तो हमारे लिए भी research और innovation - ये technology के प्राण हैं। अगर research और innovation नहीं होंगे, तो जैसे ठहरा हुआ पानी गंदगी फैलाता है, technology भी बोझ बन जाती है। और अगर हम research और innovation के बिना पुरानी technology के भरोसे जीते रहेंगे, तो हम दुनिया में, बदलते हुए युग में कालबाह्य हो जाएँगे और इसलिए नयी पीढ़ी में विज्ञान के प्रति आकर्षण, technology के प्रति research और innovation और इसी के लिए सरकार ने भी कई कदम उठाए हैं। और इसलिए तो मैं कहता हूँ - let us aim to innovate और जब मैं let us aim to innovate कहता हूँ, तो मेरा AIM का मतलब है 'Atal Innovation Mission'। नीति आयोग के द्वारा 'Atal Innovation Mission' को बढ़ावा दिया जा रहा है। एक इरादा है कि इस AIM के द्वारा, 'Atal Innovation Mission' के द्वारा पूरे देश में एक eco-system तैयार हो, innovation, experiment, entrepreneurship, ये एक सिलसिला चले और उससे नये रोज़गार की सम्भावनायें भी बढ़ने वाली हैं। हमने next generation innovators अगर तैयार करने हैं, तो हमारे बालकों को उसके साथ जोड़ना पड़ेगा और इसलिए भारत सरकार ने एक 'Atal Tinkering Labs' का initiative लिया है। जहाँ-जहाँ भी स्कूलों में ऐसी Tinkering Lab establish होगी, उनको 10 लाख रुपये दिए जाएँगे और पाँच वर्ष दौरान रख-रखाव के लिये भी 10 लाख रुपये दिए जाएँगे। उसी प्रकार से, innovation के साथ सीधा-सीधा संबंध आता है Incubation Centre का। हमारे पास सशक्त और समृद्ध अगर Incubation Centre हैं, तो innovation के लिये, start ups के लिये, प्रयोग करने के लिये, उसको एक स्थिति पर लाने तक के लिये एक व्यवस्था मिलती है। नये Incubation Centre का निर्माण भी आवश्यक है और पुराने Incubation Centre को ताकत देने की भी आवश्यकता है। और जो मैं Atal Incubation Centre की बात करता हूँ, उसके लिये भी 10 करोड़ रुपये जैसी बहुत बड़ी रकम देने की दिशा में सरकार ने सोचा है। उसी प्रकार से भारत अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हमें समस्याएँ नज़र आती हैं। अब हमें technological solution ढूँढ़ने पड़ेंगे। हमने एक 'Atal Grand Challenges' देश की युवा पीढ़ी को आह्वान किया है कि आपको समस्या नज़र आती है, समाधान के लिए technology के रास्ते खोजिए, research कीजिये, innovation कीजिये और ले आइए। भारत सरकार हमारी समस्याओं के समाधान के लिये खोजी गयी technology को विशेष पुरस्कार देकर के बढ़ावा देना चाहती है। और मुझे खुशी है कि इन बातों में लोगों की रुचि है कि जब हमने Tinkering Lab की बात कही, करीब तेरह हज़ार से अधिक स्कूलों ने आवेदन किया और जब हमने Incubation Centre की बात की, academic और non-academic 4 हज़ार से ज़्यादा institutions Incubation Centre के लिए आगे आए। मुझे विश्वास है कि अब्दुल कलाम जी को सच्ची श्रद्धांजलि - research, innovation, हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी की समस्याओं के समाधान के लिए technology, हमारी कठिनाइयों से मुक्ति के लिए सरलीकरण - उस पर हमारी नयी पीढ़ी जितना काम करेगी, उनका योगदान 21वीं सदी के आधुनिक भारत के लिए अहम होगा और वही अब्दुल कलाम जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ समय पहले हम लोग अकाल की चिंता कर रहे थे और इन दिनों वर्षा का आनंद भी आ रहा है, तो बाढ़ की खबरें भी आ रही हैं। राज्य सरकार और केंद्र सरकार मिल कर के बाढ़-पीड़ितों की सहायता करने के लिये कंधे से कंधा मिला कर के भरपूर प्रयास कर रही हैं। वर्षा के कारण कुछ कठिनाइयाँ होने के बावजूद भी हर मन, हर मानवीय मन पुलकित हो जाता है, क्योंकि हमारी पूरी आर्थिक गतिविधि के केंद्र-बिंदु में वर्षा होती है, खेती होती है।

कभी-कभी ऐसी बीमारी आ जाती है कि हमें जीवन भर पछतावा रहता है। लेकिन अगर हम जागरूक रहें, सतर्क रहें, प्रयत्नरत रहें, तो इससे बचने के रास्ते भी बड़े आसान हैं। Dengue ही ले लीजिए। Dengue से बचा जा सकता है। थोड़ा स्वच्छता पर ध्यान रहे, थोड़े सतर्क रहें और सुरक्षित रहने का प्रयास करें, बच्चों पर विशेष ध्यान दें और ये जो सोच है न कि गरीब बस्ती में ही ऐसी बीमारी आती है, Dengue का case ऐसा नहीं है। Dengue सूखी-समृद्ध इलाके में सबसे पहले आता है और इसलिए इसे हम समझें। आप TV पर advertisement देखते ही होंगे, लेकिन कभी-कभी हम उस पर जागरूक action के संबंध में थोड़े उदासीन रहते हैं। सरकार, अस्पताल, डॉक्टर - वो तो अपना काम करेंगे ही, लेकिन हम भी, अपने घर में, अपने इलाके में, अपने परिवार में Dengue न प्रवेश करे और पानी के कारण होने वाली कोई बीमारी न आए, इसके लिए सतर्क रहें, यही मैं आपसे प्रार्थना करूँगा।

एक और मुसीबत की ओर मैं, प्यारे देशवासियो, आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। ज़िंदगी इतनी आपा-धापी वाली बन गई है, इतनी दौड़-धूप वाली बन गई है कि कभी-कभी हमें अपने लिये सोचने का समय नहीं होता है। बीमार हो गए, तो मन करता है, जल्दी से ठीक हो जाओ और इसलिए कोई भी antibiotic लेकर के डाल देते हैं शरीर में। तत्काल तो बीमारी से मुक्ति मिल जाती है, लेकिन मेरे प्यारे देशवासियो, ये रास्ते चलते-फिरते antibiotic लेने की आदतें बहुत गंभीर संकट पैदा कर सकती हैं। हो सकता है, आपको तो कुछ पल के लिए राहत मिल जाए, लेकिन डॉक्टरों की सलाह के बिना हम antibiotic लेना बंद करें। डॉक्टर जब तक लिख करके नहीं देते हैं, हम उससे बचें, हम ये short-cut के माध्यम से न चलें, क्योंकि इससे एक नई कठिनाइयाँ पैदा हो रही हैं, क्योंकि अनाप-शनाप antibiotic उपयोग करने के कारण patient को तो तत्कालीन लाभ हो जाता है, लेकिन इसके जो जीवाणु हैं, वे इन दवाइयों के आदी बन जाते हैं और फिर दवाइयाँ इन जीवाणुओं के लिए बेकार साबित हो जाती हैं और फिर इस लड़ाई को लड़ना, नई दवाइयाँ बनाना, वैज्ञानिक शोध करना, सालों बीत जाते हैं और तब तक ये बीमारियाँ नई मुसीबतें पैदा कर देती हैं और इसलिये इस पर जागरूक रहने की ज़रूरत है। एक और मुसीबत आई है कि डॉक्टर ने कहा हो कि भाई, ये antibiotic लीजिए और उसने कहा कि भाई, 15 गोली लेनी है, पाँच दिन में लेनी है; मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि डॉक्टर ने जितने दिन लेने के लिये कहा है, course पूरा कीजिए; आधा-अधूरा छोड़ दिया, तो भी वो जीवाणु के फ़ायदे में जाएगा, आवश्यकता से अधिक ले लिया, तो भी जीवाणु के फ़ायदे में जाएगा और इसलिये जितने दिन का, जितनी गोली का course तय हुआ हो, उसको पूरा करना भी उतना ही ज़रूरी है; तबीयत ठीक हो गई, इसलिये अब ज़रूरत नहीं है, ये अगर हमने किया, तो वो जीवाणु के फ़ायदे में चला जाता है और जीवाणु ताक़तवर बन जाता है। जो जीवाणु TB और Malaria फैलाते हैं, वो तेज़ गति से अपने अन्दर ऐसे बदलाव ला रहे हैं कि दवाइयों का कोई असर ही नहीं होता है। medical भाषा में इसे antibiotic resistance कहते हैं और इसलिए antibiotic का कैसे उपयोग हो, इसके नियमों का पालन भी उतना ही ज़रूरी है। सरकार antibiotic resistance को रोकने के लिए प्रतिबद्ध है और आपने देखा होगा, इन दिनों antibiotic की जो दवाइयाँ बिकती हैं, उसका जो पता रहता है, उसके ऊपर एक लाल लकीर से आपको सचेत किया जाता है, आप उस पर ज़रूर ध्यान दीजिए।

जब health की ही बात निकली है, तो मैं एक बात और भी जोड़ना चाहता हूँ। हमारे देश में गर्भावस्था में जो मातायें हैं, उनके जीवन की चिंता कभी-कभी बहुत सताती है। हमारे देश में हर वर्ष लगभग 3 करोड़ महिलायें गर्भावस्था धारण करती हैं, लेकिन कुछ मातायें प्रसूति के समय मरती हैं, कभी माँ मरती है, कभी बालक मरता है, कभी बालक और माँ दोनों मरते हैं। ये ठीक है कि पिछले एक दशक में माता की असमय मृत्यु की दर में कमी तो आई है, लेकिन फिर भी आज भी बहुत बड़ी मात्रा में गर्भवती माताओं का जीवन नहीं बचा पाते हैं। गर्भावस्था के दौरान या बाद में खून की कमी, प्रसव संबंधी संक्रमण, high BP - न जाने कौन सी तकलीफ़ कब उसकी ज़िंदगी को तबाह कर दे। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने पिछले कुछ महीनों से एक नया अभियान शुरू किया है - 'प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान'। इस अभियान के तहत हर महीने की 9 तारीख को सभी गर्भवती महिलाओं की सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों में निशुल्क जाँच की जायेगी। एक भी पैसे के खर्च के बिना सरकारी अस्पतालों में हर महीने की 9 तारीख को काम किया जाएगा। मैं हर गरीब परिवारों से आग्रह करूँगा कि सभी गर्भवती मातायें 9 तारीख को इस सेवा का लाभ उठाएँ, ताकि 9वें महीने तक पहुँचते-पहुँचते अगर कोई तकलीफ़ हो, तो पहले से ही उसका उपाय किया जा सके। माँ और बालक - दोनों की ज़िन्दगी बचाई जा सके और मैंने तो Gynecologist को खास कि क्या आप महीने में एक दिन 9 तारीख को गरीब माताओं के लिए मुफ्त में ये सेवा नहीं दे सकते हैं। क्या मेरे डॉक्टर भाई-बहन एक साल में बारह दिन गरीबों के लिये इस काम के लिये नहीं लगा सकते हैं ? पिछले दिनों मुझे कड़ियों ने चिठियाँ लिखी हैं। हज़ारों ऐसे डॉक्टर हैं, जिन्होंने मेरी बात को मान कर के आगे बढ़ाया है, लेकिन भारत इतना बड़ा देश है, लाखों डॉक्टरों ने इस अभियान में जुड़ना चाहिये। मुझे विश्वास है, आप ज़रूर

जुड़ेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज पूरा विश्व - climate change, global warming, पर्यावरण - इसकी बड़ी चिंता करता है। देश और दुनिया में सामूहिक रूप से इसकी चर्चा होती है। भारत में सदियों से इन बातों पर बल दिया गया है। कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में भी भगवान कृष्ण वृक्ष की चर्चा करते हैं, युद्ध के मैदान में भी वृक्ष की चर्चा चिंता करना मतलब कि इसका माहात्म्य कितना होगा, हम अंदाज़ कर सकते हैं। गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं - 'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां' अर्थात् सभी वृक्षों में मैं पीपल हूँ। शुक्राचार्य नीति में कहा गया है - 'नास्ति मूलं अनौषधं' - ऐसी कोई वनस्पति नहीं है, जिसमें कोई औषधीय गुण न हो। महाभारत का अनुशासन पर्व - उसमें तो बड़ी विस्तार से चर्चा की है और महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है - 'जो वृक्ष लगाता है, उसके लिए ये वृक्ष संतान रूप होता है, इसमें संशय नहीं है। जो वृक्ष का दान करता है, उसको वह वृक्ष संतान की भाँति परलोक में भी तार देते हैं।' इसलिये अपने कल्याण की इच्छा रखने वाले माता-पिता अच्छे वृक्ष लगाएँ और उनका संतानों के समान पालन करें। हमारे शास्त्र - गीता हो, शुक्राचार्य नीति हो, महाभारत का अनुशासन पर्व हो - लेकिन आज की पीढ़ी में भी कुछ लोग होते हैं, जो इन आदर्शों को जी कर के दिखाते हैं। कुछ दिन पहले मैंने, पुणे की एक बेटा सोनल का एक उदाहरण मेरे ध्यान में आया, वो मेरे मन को छू गया। महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा है न कि वृक्ष परलोक में भी संतान की ज़िम्मेवारी पूरी करता है। सोनल ने सिर्फ अपने माता-पिता की नहीं, समाज की इच्छाओं को पूर्ण करने का जैसे बीड़ा उठाया है। महाराष्ट्र में पुणे के जुन्नर तालुका में नारायणपुर गाँव के किसान खंडू मारुती महात्रे, उन्होंने अपनी पोती सोनल की शादी एक बड़े प्रेरक ढंग से की। महात्रे जी ने क्या किया, सोनल की शादी में जितने भी रिश्तेदार, दोस्त, मेहमान आए थे, उन सब को 'केसर आम' का एक पौधा भेंट किया, उपहार के रूप में दिया और जब मैंने social media में उसकी तस्वीर देखी, तो मैं हैरान था कि शादी में बराती नहीं दिख रहे थे, पौधे ही पौधे नज़र आ रहे थे। मन को छूने वाला ऐसा दृश्य उस तस्वीर में था। सोनल जो स्वयं एक agriculture graduate है, ये idea उसी को आया और शादी में आम के पौधे भेंट देना, देखिए, प्रकृति का प्रेम कितना उत्तम तरीके से प्रकट हुआ। एक प्रकार से सोनल की शादी प्रकृति प्रेम की अमर गाथा बन गई। मैं सोनल को और श्रीमान महात्रे जी को इस अभिनव प्रयास के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ। और ऐसे प्रयोग बहुत लोग करते हैं। मुझे स्मरण है, मैं जब गुजरात में मुख्यमंत्री था, तो वहाँ अम्बा जी के मंदिर में भाद्र महीने में बहुत बड़ी मात्रा में पदयात्री आते हैं, तो एक बार एक समाजसेवी संगठन ने तय किया कि मंदिर में जो आएँगे, उनको प्रसाद में पौधा देंगे और उनको कहेंगे कि देखिए, ये माता जी का प्रसाद है, इस पौधे को अपने गाँव-घर जाकर के ये बड़ा बने, माता आपको आशीर्वाद देती रहेगी, इसकी चिंता कीजिये। और लाखों पदयात्री आते थे और लाखों पौधे बाँटे थे उस वर्ष मंदिर भी इस वर्षा ऋतु में प्रसाद के बदले में पौधे देने की परंपरा प्रारम्भ कर सकते हैं। एक सहज जन-आन्दोलन बन सकता है वृक्षारोपण का। मैं किसान भाइयों को तो बार-बार कहता हूँ कि हमारे खेतों के किनारे पर जो हम बाड़ लगा करके हमारी जमीन बर्बाद करते हैं, क्यों न हम उस बाड़ की जगह पर टिम्बर की खेती करें। आज भारत को घर बनाने के लिए, furniture बनाने के लिये, अरबों-खरबों का टिम्बर विदेशों से लाना पड़ता है। अगर हम हमारे खेत के किनारे पर ऐसे वृक्ष लगा दें, जो furniture और घर काम में आएँ, तो पंद्रह-बीस साल के बाद सरकार की permission से उसको काट करके बेच भी सकते हैं आप और वो आपके आय का एक नया साधन भी बन सकता है और भारत को टिम्बर import करने से बच भी सकते हैं। पिछले दिनों कई राज्यों ने इस मौसम का उपयोग करते हुए काफ़ी अभियान चलाए हैं, भारत सरकार ने भी एक 'CAMPA' कानून अभी-अभी पारित किया, इसके कारण वृक्षारोपण के लिए करीब चालीस हजार करोड़ से भी ज्यादा राज्यों के पास जाने वाले हैं। मुझे बताया गया है कि महाराष्ट्र सरकार ने एक जुलाई को पूरे राज्य में करीब सवा-दो करोड़ पौधे लगाये हैं और अगले साल उन्होंने तीन करोड़ पौधे लगाने का संकल्प किया है। सरकार ने एक जन-आन्दोलन खड़ा कर दिया। राजस्थान, मरू-भूमि - इतना बड़ा वन-महोत्सव किया और पच्चीस लाख पौधे लगाने का संकल्प किया है। राजस्थान में पच्चीस लाख पौधे छोटी बात नहीं हैं। जो राजस्थान की धरती को जानते हैं, उनको मालूम है कि कितना बड़ा बीड़ा उठाया है। आंध्र प्रदेश ने भी Twenty Twenty-Nine (2029) तक अपना green cover fifty percent बढ़ाने का फ़ैसला किया है। केंद्र सरकार ने जो 'Green India Mission' चल रहा है, इसके तहत रेलवे ने इस काम को उठाया है। गुजरात में भी वन महोत्सव की एक बहुत बड़ी उज्ज्वल परंपरा है। इस वर्ष गुजरात ने आम्र वन, एकता वन, शहीद वन - ऐसे अनेक प्रकल्पों को वन महोत्सव के रूप में उठाया है और करोड़ों वृक्ष लगाने का अभियान चलाया है। मैं सभी राज्यों का उल्लेख नहीं कर पा रहा हूँ, लेकिन बधाई के पात्र हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, पिछले दिनों मुझे South Africa जाने का अवसर मिला। ये मेरी पहली यात्रा थी और जब विदेश यात्रा है, तो diplomacy होती है, trade की बातें होती हैं, सुरक्षा के संबंध में चर्चाएँ होती हैं, कई MoU होते हैं - ये तो सब होना ही है। लेकिन मेरे लिये South Africa की यात्रा एक प्रकार से तीर्थ यात्रा थी। जब South Africa को याद करते हैं, तो महात्मा गाँधी और Nelson Mandela की याद आना बहुत स्वाभाविक है। दुनिया में अहिंसा, प्रेम, क्षमा - ये शब्द जब कान पर पड़ते हैं, तो गाँधी और Mandela - इनके चेहरे हमारे सामने दिखाई देते हैं। मेरे South Africa के tour के दरमियान मैं Phoenix Settlement गया था, महात्मा गाँधी का निवास स्थान सर्वोदय के रूप में जाना जाता है। मुझे - महात्मा गाँधी ने जिस train में सफ़र किया था और जिस train की घटना ने एक मोहनदास को महात्मा गाँधी बनाने का बीजारोपण किया था, वो Pietermaritzburg Station - उस रेल यात्रा का भी मुझे सद्भाग्य प्राप्त हुआ। लेकिन मैं जो बात

बताना चाहता हूँ, मुझे इस बार ऐसे महानुभावों से मिलने का अवसर मिला, जिन्होंने समानता के लिये, समान अवसर के लिये, अपनी जवानी समाज के लिये खपा दी थी। Nelson Mandela के साथ कंधे से कंधा मिला करके वो लड़ाई लड़े थे, बीस-बीस, बाइस-बाइस साल तक जेलों में Nelson Mandela के साथ जिन्दगी गुजारी थी। एक प्रकार से पूरी जवानी उन्होंने आहुत कर दी थी और Nelson Mandela के करीब साथी श्रीमान अहमद कथाड़ा (Ahmed Kathrada), श्रीमान लालू चीबा (Laloo Chiba), श्रीमान जॉर्ज बेज़ोस (George Bizos), रॉनी कासरिल्स (Ronnie Kasrils) - इन महानुभावों के दर्शन करने का मुझे सौभाग्य मिला। मूल भारतीय, लेकिन जहाँ गए, वहाँ के हो गए। जिनके बीच जीते थे, उनके लिये जान लगाने के लिये तैयार हो गए। कितनी बड़ी ताकत, और मज़ा ये था, जब मैं उनसे बातें कर रहा था, उनके जेल के अनुभव सुन रहा था, किसी के प्रति कोई कटुता नहीं थी, द्वेष नहीं था। उनके चेहरे पर, इतनी बड़ी तपस्या करने के बाद भी लेना - पाना - बनना, कहीं पर भी नज़र नहीं आता था। एक प्रकार का अपना कर्तव्य भाव - गीता में जो कर्तव्य का लक्षण बताया है न, वो बिल्कुल साक्षात् रूप दिखाई देता था। मेरे मन को वो मुलाकात हमेशा-हमेशा याद रहेगी - समानता और समान अवसर। किसी भी समाज और सरकार के लिए इससे बड़ा कोई मंत्र नहीं हो सकता। सम-भाव और मम-भाव, यही तो रास्ते हैं, जो हमें उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाते हैं। हम सब बेहतर जिन्दगी चाहते हैं। बच्चों का अच्छा भविष्य चाहते हैं। हर किसी की ज़रूरतें भिन्न-भिन्न होंगी। priority भिन्न-भिन्न होगी, लेकिन रास्ता एक ही है और वो रास्ता है विकास का, समानता का, समान अवसर का, सम-भाव का, मम-भाव का। आइए, हमारे इन भारतीयों पर गर्व करें, जिन्होंने South Africa में भी हमारे जीवन के मूल मन्त्रों को जी करके दिखाया है।

मेरे प्यारे देशवासियों, मैं शिल्पी वर्मा का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे सन्देश दिया है और उनकी चिंता बहुत स्वाभाविक है। उन्होंने मुझे एक घटना से अवगत कराया है।

“प्रधानमंत्री जी, मैं शिल्पी वर्मा बोल रही हूँ, बेंगलुरु से और मैंने कुछ दिन पहले एक news में article पढ़ा था कि एक महिला ने fraud और cheat e-mail के धोखे में आ के ग्यारह लाख रुपये गँवाए और उन्होंने खुदकुशी कर ली। एक महिला होने के नाते मुझे उसके परिवार से काफ़ी अफ़सोस है। मैं जानना चाहूँगी कि ऐसे cheat और fraud e-mail के बारे में आपका क्या विचार है।”

और ये बातें आप सबके ध्यान में भी आती होंगी कि हमारे mobile phone पर, हमारी e-mail पर बड़ी लुभावनी बातें कभी-कभी हमें जानने को मिलती हैं, कोई message देता है कि आप को इतने रुपये का इनाम लगा है, आप इतने रुपये दे दीजिए और इतने पैसे ले लीजिए और कुछ लोग भ्रमित हो करके रुपयों के मोह में फंस जाते हैं। ये technology के माध्यम से लूटने के एक नये तरीके विश्व भर में फैल रहे हैं। और जैसे technology आर्थिक व्यवस्था में बहुत बड़ा role कर रही है, तो उसके दुरुपयोग करने वाले भी मैदान में आ जाते हैं। एक retired शख्स, जिन्हें अभी अपनी बैटी की शादी करनी थी और घर भी बनवाना था। एक दिन उनको एक SMS आया कि विदेश से उनके लिए एक कीमती उपहार आया है, जिसे पाने के लिए उनको custom duty के तौर पर 2 लाख रुपये एक bank के खाते में जमा करने हैं और ये सज्जन बिना कुछ सोचे-समझे अपनी जिन्दगी भर की मेहनत की कमाई में से 2 लाख रुपये निकाल करके अनजान आदमी को भेज दिए और वो भी एक SMS पर और कुछ ही पल में उनको समझ आया कि सब कुछ लूट चुका है। आप भी कभी-कभी भ्रमित हो जाते होंगे और वो इतना बढ़िया ढंग से आपको चिट्ठी लिखते हैं, जैसे लगता है, सही चिट्ठी है। कोई भी फ़र्जी letter pad बना करके भेज देते हैं, आपका credit card number, debit card number पा लेते हैं और technology के माध्यम से आपका खाता खाली हो जाता है। ये नये तरीके की धोखाधड़ी है, ये digital धोखाधड़ी है। मैं समझता हूँ कि इस मोह से बचना चाहिये, सजग रहना चाहिये और ऐसी कोई झूठी बातें आती हैं, तो अपने यार-दोस्तों को share करके उनको थोड़ा जागरूक करना चाहिए। मैं चाहूँगा कि शिल्पी वर्मा ने अच्छी बात मेरे ध्यान में लाई है। वैसे अनुभव तो आप सब करते होंगे, लेकिन शायद उतना गंभीरता से नहीं देखते होंगे, लेकिन मुझे लगता है कि देखने की आवश्यकता है।

मेरे प्यारे देशवासियों, इन दिनों Parliament का सत्र चल रहा है, तो संसद के सत्र के दरम्यान मुझे देश के बहुत सारे लोगों से मिलने का अवसर भी मिलता है। हमारे सांसद महोदय भी अपने-अपने इलाके से लोगों को लाते हैं, मिलवाते हैं, बातें बताते हैं, अपनी कठिनाइयाँ भी बताते हैं। लेकिन इन दिनों मुझे एक सुखद अनुभव हुआ। अलीगढ़ के कुछ छात्र मेरे पास आए थे। लड़के-लड़कियों का बड़ा उत्साह देखने को था और बहुत बड़ा album ले के आए थे और उनके चेहरे पर इतनी खुशी थी। और वहाँ के हमारे अलीगढ़ के सांसद उनको ले करके आए थे। उन्होंने मुझे तस्वीरें दिखाईं। उन्होंने अलीगढ़ रेलवे स्टेशन का सौन्दर्यकरण किया है। स्टेशन पर कलात्मक painting किये हैं। इतना ही नहीं, गाँव में जो प्लास्टिक की बोतलें या oil के can ऐसे ही कूड़े-कचरे में पड़े हुए, उसको उन्होंने खोज-खोज करके इकट्ठा किया और उनमें मिट्टी भर कर के, पौधे लगा कर के उन्होंने vertical garden बनाए। और रेलवे स्टेशन की तरफ प्लास्टिक बोतलों में ये vertical garden बना करके बिल्कुल उसको एक प्रकार से नया रूप दे दिया। आप भी कभी अलीगढ़ जाएँगे, तो ज़रूर स्टेशन को देखिए। हिन्दुस्तान के कई रेलवे स्टेशनों से आजकल मुझे ये खबरें आ रही हैं। स्थानीय लोग रेलवे स्टेशन की

दीवारों पर अपने इलाके की पहचान अपनी कला के द्वारा प्रस्तुत कर रहे हैं। एक नयापन महसूस हो रहा है। जन-भागीदारी से कैसा बदलाव लाया जा सकता है, इसका ये उदाहरण है। देश में इस प्रकार से काम करने वाले सबको बधाई, अलीगढ़ के मेरे साथियों को विशेष बधाई।

मेरे प्यारे देशवासियो, वर्षा की ऋतु के साथ-साथ हमारे देश में त्योहारों की भी ऋतु रहती है। आने वाले दिनों में सब दूर मेले लगे होंगे। मंदिरों में, पूजाघरों में उत्सव मनाए जाते होंगे और आप भी घर में भी, बाहर भी उत्सव में जुड़ जाते होंगे। रक्षाबंधन का त्योहार हमारे यहाँ एक विशेष महत्व का त्योहार है। पिछले साल की भाँति इस साल भी रक्षाबंधन के अवसर पर अपने देश की माताओं-बहनों को क्या आप प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना या जीवन ज्योति बीमा योजना भेंट नहीं कर सकते ? सोचिए, बहन को ऐसी भेंट दें, जो उसको जीवन में सचमुच में सुरक्षा दे। इतना ही नहीं, हमारे घर में खाना बनाने वाली महिला होगी, हमारे घर में साफ़-सफ़ाई करने वाली कोई महिला होगी, गरीब माँ की बेटी होगी यह रक्षाबंधन के त्योहार पर उनको भी तो सुरक्षा बीमा योजना या जीवन ज्योति बीमा योजना भेंट दे सकते हैं आप और यही तो सामाजिक सुरक्षा है, यही तो रक्षाबंधन का सही अर्थ है।

मेरे प्यारे देशवासियो, हम में से बहुत लोग हैं, जिनका जन्म आज़ादी के बाद हुआ है। और मैं देश का पहला ऐसा प्रधानमंत्री हूँ, जो आज़ाद हिंदुस्तान में पैदा हुआ हूँ। 8 August 'Quit India Movement' का प्रारंभ हुआ था। हिंद छोड़ो, भारत छोड़ो - इसे 75 साल हो रहे हैं। और 15 August को आज़ादी के 70 साल हो रहे हैं। हम आज़ादी का आनंद तो ले रहे हैं। स्वतंत्र नागरिक होने का गर्व भी अनुभव कर रहे हैं। लेकिन इस आज़ादी दिलाने वाले उन दीवानों को याद करने का ये अवसर है। हिंद छोड़ो के 75 साल और भारत की आज़ादी के 70 साल हमारे लिए नई प्रेरणा दे सकते हैं, नयी उमंग जगा सकते हैं, देश के लिये कुछ करने के लिये संकल्प का अवसर बन सकते हैं। पूरा देश आज़ादी के दीवानों के रंग से रंग जाए। चारों तरफ़ आज़ादी की खुशबू को फिर से एक बार महसूस करें। ये माहौल हम सब बनाएँ और आज़ादी का पर्व - ये सरकारी कार्यक्रम नहीं, ये देशवासियों का होना चाहिए। दीवाली की तरह हमारा अपना उत्सव होना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि आप भी देशभक्ति की प्रेरणा से जुड़ा कुछ-न-कुछ अच्छा करेंगे। उसकी तस्वीर 'NarendraModi App' पर जरूर भेजिए। देश में एक माहौल बनाइए।

प्यारे देशवासियो, 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से मुझे देश के साथ बात करने का एक सौभाग्य मिलता है, एक परंपरा है। आपके मन में भी कुछ बातें होंगी, जो आप चाहते होंगे कि आपकी बात भी लाल किले से उतनी ही प्रखरता से रखी जाए। मैं आपको निमंत्रण देता हूँ, आपके मन में जो विचार आते हों, जिसको लगता है कि आपके प्रतिनिधि के रूप में, आपके प्रधान सेवक के रूप में मुझे लाल किले से ये बात बतानी चाहिए, आप मुझे जरूर लिख करके भेजिए। सुझाव दीजिए, सलाह दीजिए, नया विचार दीजिए। मैं आपकी बात देशवासियों तक पहुँचाने का प्रयास करूँगा और मैं नहीं चाहता हूँ कि लाल किले की प्राचीर से जो बोला जाए, वो प्रधानमंत्री की बात हो; लाल किले की प्राचीर से जो बोला जाए, वो सवा-सौ करोड़ देशवासियों की बात हो। आप जरूर मुझे कुछ-न-कुछ भेजिए। 'NarendraModi App' पर भेज सकते हैं, MyGov.in पर भेज सकते हैं और आजकल तो technology के platform इतने आसान हैं कि आप आराम से चीज़ें मुझ तक पहुँचा सकते हैं। मैं आपको निमंत्रण देता हूँ, आइये, आज़ादी के दीवानों का पुण्य स्मरण करें। भारत के लिए ज़िंदगी खपाने वाले महापुरुषों को याद करें और देश के लिए कुछ करने का संकल्प ले कर के आगे बढ़ें। बहुत-बहुत शुभकामनायें। बहुत-बहुत धन्यवाद ।

AKT/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

28-अगस्त-2016 11:40 IST

28 अगस्त, 2016 को आकाशवाणी पर प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियों, नमस्कार,

कल 29 अगस्त को हॉकी के जादूगर ध्यान चंद जी की जन्मतिथि है। यह दिन पूरे देश में 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। मैं ध्यान चंद जी को श्रद्धांजलि देता हूँ और इस अवसर पर आप सभी को उनके योगदान की याद भी दिलाना चाहता हूँ। उन्होंने 1928 में, 1932 में, 1936 में, Olympic खेलों में भारत को hockey हॉकी का स्वर्ण पदक दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हम सभी क्रिकेट प्रेमी Bradman का नाम जानते हैं। उन्होंने ध्यान चंद जी के लिए कहा था - 'He scores goals like runs'. ध्यानचंद जी sportsman spirit और देशभक्ति की एक जीती-जागती मिसाल थे। एक बार कोलकाता में, एक मैच के दौरान, एक विपक्षी खिलाड़ी ने ध्यान चंद जी के सिर पर हॉकी मार दी। उस समय मैच खत्म होने में सिर्फ 10 मिनट बाकी था। और ध्यान चंद जी ने उन 10 मिनट में तीन गोल कर दिये और कहा कि मैंने चोट का बदला गोल से दे दिया।

मेरे प्यारे देशवासियों, वैसे जब भी 'मन की बात' का समय आता है, तो MyGov पर या NarendraModiApp पर अनेकों-अनेक सुझाव आते हैं। विविधता से भरे हुए होते हैं, लेकिन मैंने देखा कि इस बार तो ज्यादातर, हर किसी ने मुझे आग्रह किया कि Rio Olympic के संबंध में आप ज़रूर कुछ बातें करें। सामान्य नागरिक का Rio Olympic के प्रति इतना लगाव, इतनी जागरूकता और देश के प्रधानमंत्री पर दबाव करना कि इस पर कुछ बोलो, मैं इसको एक बहुत सकारात्मक देख रहा हूँ। क्रिकेट के बाहर भी भारत के नागरिकों में और खेलों के प्रति भी इतना प्यार है, इतनी जागरूकता है और उतनी जानकारीयों हैं। मेरे लिए तो यह संदेश पढ़ना, ये भी एक अपने आप में, बड़ा प्रेरणा का कारण बन गया। एक श्रीमान अजित सिंह ने NarendraModiApp पर लिखा है - "कृपया इस बार 'मन की बात' में बेटियों की शिक्षा और खेलों में उनकी भागीदारी पर ज़रूर बोलिए, क्योंकि Rio Olympic में medal जीतकर उन्होंने देश को गौरवान्वित किया है।" कोई श्रीमान सचिन लिखते हैं कि आपसे अनुरोध है कि इस बार के 'मन की बात' में सिंधु, साक्षी और दीपा कर्माकर का ज़िक्र ज़रूर कीजिए। हमें जो पदक मिले, बेटियों ने दिलाए। हमारी बेटियों ने एक बार फिर साबित किया कि वे किसी भी तरह से, किसी से भी कम नहीं हैं। इन बेटियों में एक उत्तर भारत से है, तो एक दक्षिण भारत से है, तो कोई पूर्व भारत से है, तो कोई हिन्दुस्तान के किसी और कोने से है। ऐसा लगता है, जैसे पूरे भारत की बेटियों ने देश का नाम रोशन करने का बीड़ा उठा लिया है।

MyGov पर शिखर ठाकुर ने लिखा है कि हम Olympic में और भी बेहतर कर सकते थे। उन्होंने लिखा है - "आदरणीय मोदी सर, सबसे पहले Rio में हमने जो दो medal जीते, उसके लिए बधाई। लेकिन मैं इस ओर आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ कि क्या हमारा प्रदर्शन वाकई अच्छा था? और जवाब है, नहीं। हमें खेलों में लम्बा सफ़र तय करने की ज़रूरत है। हमारे माता-पिता आज भी पढ़ाई और academics पर focus करने पर जोर देते हैं। समाज में अभी भी खेल को समय की बर्बादी माना जाता है। हमें इस सोच को बदलने की ज़रूरत है। समाज को motivation की ज़रूरत है। और ये काम आपसे अच्छी तरह कोई नहीं कर सकता।"

ऐसे ही कोई श्रीमान सत्यप्रकाश मेहरा जी ने NarendraModiApp पर लिखा है - "'मन की बात' में extra-curricular activities पर focus करने की ज़रूरत है। खास तौर से बच्चों और युवाओं को खेलों को ले करके।" एक प्रकार से यही भाव हजारों लोगों ने व्यक्त किया है। इस बात से तो इंकार नहीं किया जा सकता कि हमारी आशा के अनुरूप हम प्रदर्शन नहीं कर पाए। कुछ बातों में तो ऐसा भी हुआ कि जो हमारे खिलाड़ी भारत में प्रदर्शन करते थे, यहाँ के खेलों में जो प्रदर्शन करते थे, वो वहाँ पर, वहाँ तक भी नहीं पहुँच पाए और पदक तालिका में तो सिर्फ दो ही medal मिले हैं। लेकिन ये भी सही है कि पदक न मिलने के बावजूद भी अगर ज़रा गौर से देखें, तो कई विषयों में पहली बार भारत के खिलाड़ियों ने काफी अच्छा करतब भी दिखाया है। अब देखिये, Shooting के अन्दर हमारे अभिनव बिन्द्रा जी ने - वे चौथे स्थान पर रहे और बहुत ही थोड़े से अंतर से वो पदक चूक गये। Gymnastic में दीपा कर्माकर ने भी कमाल कर दी - वो चौथे स्थान पर रही। बहुत थोड़े अंतर के चलते medal से चूक गयी। लेकिन ये एक बात हम कैसे भूल सकते हैं कि वो Olympic के लिए

और Olympic Final के लिए qualify करने वाली पहली भारतीय बेटा है। कुछ ऐसा ही टेनिस में सानिया मिर्जा और रोहन बोपन्ना की जोड़ी के साथ हुआ। Athletics में हमने इस बार अच्छा प्रदर्शन किया। पी.टी. उषा के बाद, 32 साल में पहली बार ललिता बाबर ने track field finals के लिए qualify किया। आपको जान करके खुशी होगी, 36 साल के बाद महिला हॉकी टीम Olympic तक पहुँची। पिछले 36 साल में पहली बार Men's Hockey - knock out stage तक पहुँचने में कामयाब रही। हमारी टीम काफ़ी मज़बूत है और मज़ेदार बाद यह है कि Argentina, जिसने Gold जीता, वो पूरी tournament में एक ही match मैच हारी और हराने वाला कौन था! भारत के खिलाड़ी थे। आने वाला समय निश्चित रूप से हमारे लिए अच्छा होगा।

Boxing में विकास कृष्ण यादव quarter-final तक पहुँचे, लेकिन Bronze नहीं पा सके। कई खिलाड़ी, जैसे उदाहरण के लिए - अदिति अशोक, दत्त भोकनल, अतनु दास कई नाम हैं, जिनके प्रदर्शन अच्छे रहे। लेकिन मेरे प्यारे देशवासियों, हमें बहुत कुछ करना है। लेकिन जो करते आये हैं, वैसा ही करते रहेंगे, तो शायद हम फिर निराश होंगे। मैंने एक committee की घोषणा की है। भारत सरकार in house इसकी गहराई में जाएगी। दुनिया में क्या-क्या practices हो रही हैं, उसका अध्ययन करेगी। हम अच्छा क्या कर सकते हैं, उसका roadmap बनाएंगी। 2020, 2024, 2028 - एक दूर तक की सोच के साथ हमने योजना बनानी है। मैं राज्य सरकारों से भी आग्रह करता हूँ कि आप भी ऐसी कमेटीयाँ बनाएँ और खेल जगत के अन्दर हम क्या कर सकते हैं, हमारा एक-एक राज्य क्या कर सकता है, राज्य अपनी एक खेल, दो खेल पसंद करें - क्या ताकत दिखा सकता है!

मैं खेल जगत से जुड़े Association से भी आग्रह करता हूँ कि वे भी एक निष्पक्ष भाव से brain storming करें। और हिन्दुस्तान में हर नागरिक से भी मैं आग्रह करता हूँ कि जिसको भी उसमें रुचि है, वो मुझे NarendraModiApp पर सुझाव भेजें। सरकार को लिखें, Association चर्चा कर-करके अपना memorandum सरकार को दें। राज्य सरकारें चर्चाएँ कर-करके अपने सुझाव भेजें। लेकिन हम पूरी तरह तैयारी करें और मुझे विश्वास है कि हम ज़रूर सवा-सौ करोड़ देशवासी, 65 प्रतिशत युवा जनसंख्या वाला देश, खेल की दुनिया में भी बेहतरीन स्थिति प्राप्त करें, इस संकल्प के साथ आगे बढ़ना है।

मेरे प्यारे देशवासियों, 5 सितम्बर 'शिक्षक दिवस' है। मैं कई वर्षों से 'शिक्षक दिवस' पर विद्यार्थियों के साथ काफ़ी समय बिताता रहा। और एक विद्यार्थी की तरह बिताता था। इन छोटे-छोटे बालकों से भी मैं बहुत कुछ सीखता था। मेरे लिये, 5 सितम्बर 'शिक्षक दिवस' भी था और मेरे लिये, 'शिक्षा दिवस' भी था। लेकिन इस बार मुझे G-20 Summit के लिए जाना पड़ रहा है, तो मेरा मन कर गया कि आज 'मन की बात' में ही, मेरे इस भाव को, मैं प्रकट करूँ।

जीवन में जितना 'माँ' का स्थान होता है, उतना ही शिक्षक का स्थान होता है। और ऐसे भी शिक्षक हमने देखे हैं कि जिनको अपने से ज़्यादा, अपनों की चिंता होती है। वो अपने शिष्यों के लिए, अपने विद्यार्थियों के लिये, अपना जीवन खपा देते हैं। इन दिनों Rio Olympic के बाद, चारों तरफ, पुल्लेला गोपीचंद जी की चर्चा होती है। वे खिलाड़ी तो हैं, लेकिन उन्होंने एक अच्छा शिक्षक क्या होता है - उसकी मिसाल पेश की है। मैं आज गोपीचंद जी को एक खिलाड़ी से अतिरिक्त एक उत्तम शिक्षक के रूप में देख रहा हूँ। और शिक्षक दिवस पर, पुल्लेला गोपीचंद जी को, उनकी तपस्या को, खेल के प्रति उनके समर्पण को और अपने विद्यार्थियों की सफलता में आनंद पाने के उनके तरीके को salute करता हूँ। हम सबके जीवन में शिक्षक का योगदान हमेशा-हमेशा महसूस होता है। 5 सितम्बर, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्म दिन है और देश उसे 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाता है। वे जीवन में किसी भी स्थान पर पहुँचे, लेकिन अपने-आपको उन्होंने हमेशा शिक्षक के रूप में ही जीने का प्रयास किया। और इतना ही नहीं, वे हमेशा कहते थे - "अच्छा शिक्षक वही होता है, जिसके भीतर का छात्र कभी मरता नहीं है।" राष्ट्रपति का पद होने के बाद भी शिक्षक के रूप में जीना और शिक्षक मन के नाते, भीतर के छात्र को ज़िन्दा रखना, ये अद्भुत जीवन डॉ॰ राधाकृष्णन जी ने, जी करके दिखाया।

मैं भी कभी-कभी सोचता हूँ, तो मुझे तो मेरे शिक्षकों की इतनी कथायें याद हैं, क्योंकि हमारे छोटे से गाँव में तो वो ही हमारे Hero हुआ करते थे। लेकिन मैं आज खुशी से कह सकता हूँ कि मेरे एक शिक्षक - अब उनकी 90 साल की आयु हो गयी है - आज भी हर महीने उनकी मुझे चिट्ठी आती है। हाथ से लिखी हुई चिट्ठी आती है। महीने भर में उन्होंने जो किताबें पढ़ी हैं, उसका कहीं-न-कहीं ज़िक्र आता है, quotations आता है। महीने भर मैंने क्या किया, उनकी नज़र में वो ठीक था, नहीं था। जैसे आज भी मुझे class room में वो पढ़ाते हों। वे आज भी मुझे एक प्रकार से correspondence course करा रहे हैं। और 90 साल की आयु में भी उनकी जो handwriting है, मैं तो आज भी हैरान हूँ कि इस अवस्था में भी इतने सुन्दर अक्षरों से वो लिखते हैं और मेरे स्वयं के अक्षर बहुत ही खराब हैं, इसके कारण जब भी मैं किसी के अच्छे अक्षर देखता हूँ, तो मेरे मन में आदर बहुत ज़्यादा ही हो जाता है। जैसे मेरे अनुभव हैं, आपके भी अनुभव होंगे। आपके शिक्षकों से आपके जीवन में जो कुछ भी अच्छा हुआ है, अगर दुनिया को बताएँगे, तो शिक्षक के प्रति देखने के रवैये में बदलाव आएगा, एक गौरव होगा और समाज में हमारे शिक्षकों का गौरव बढ़ाना हम सबका दायित्व है। आप

NarendraModiApp पर, अपने शिक्षक के साथ फोटो हो, अपने शिक्षक के साथ की कोई घटना हो, अपने शिक्षक की कोई प्रेरक बात हो, आप जरूर share कीजिए। देखिए, देश में शिक्षक के योगदान को विद्यार्थियों की नज़र से देखना, यह भी अपने आप में बहुत मूल्यवान होता है।

मेरे प्यारे देशवासियों, कुछ ही दिनों में गणेश उत्सव आने वाला है। गणेश जी विघ्नहर्ता हैं और हम सब चाहें कि हमारा देश, हमारा समाज, हमारे परिवार, हमारा हर व्यक्ति, उसका जीवन निर्विघ्न रहे। लेकिन जब गणेश उत्सव की बात करते हैं, तो लोकमान्य तिलक जी की याद आना बहुत स्वाभाविक है। सार्वजनिक गणेश उत्सव की परंपरा - ये लोकमान्य तिलक जी की देन है। सार्वजनिक गणेश उत्सव के द्वारा उन्होंने इस धार्मिक अवसर को राष्ट्र जागरण का पर्व बना दिया। समाज संस्कार का पर्व बना दिया। और सार्वजनिक गणेश उत्सव के माध्यम से समाज-जीवन को स्पर्श करने वाले प्रश्नों की वृहत चर्चा हो। कार्यक्रमों की रचना ऐसी हो कि जिसके कारण समाज को नया ओज, नया तेज मिले। और साथ-साथ उन्होंने जो मन्त्र दिया था - "स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" - ये बात केंद्र में रहे। आज़ादी के आन्दोलन को ताकत मिले। आज भी, अब तो सिर्फ महाराष्ट्र नहीं, हिंदुस्तान के हर कोने में सार्वजनिक गणेश उत्सव होने लगे हैं। सारे नौजवान इसे करने के लिए काफ़ी तैयारियाँ भी करते हैं, उत्साह भी बहुत होता है। और कुछ लोगों ने अभी भी लोकमान्य तिलक जी ने जिस भावना को रखा था, उसका अनुसरण करने का भरपूर प्रयास भी किया है। सार्वजनिक विषयों पर वो चर्चाएँ रखते हैं, निबंध स्पर्धाएँ करते हैं, रंगोली स्पर्धाएँ करते हैं। उसकी जो झाँकियाँ होती हैं, उसमें भी समाज को स्पर्श करने वाले issues को बड़े कलात्मक ढंग से उजागर करते हैं। एक प्रकार से लोक शिक्षा का बड़ा अभियान सार्वजनिक गणेश उत्सव के द्वारा चलता है। लोकमान्य तिलक जी ने हमें "स्वराज हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है" ये प्रेरक मन्त्र दिया। लेकिन हम आज़ाद हिन्दुस्तान में हैं। क्या सार्वजनिक गणेश उत्सव 'सुराज हमारा अधिकार है' - अब हम सुराज की ओर आगे बढ़ें। सुराज हमारी प्राथमिकता हो, इस मन्त्र को लेकर के हम सार्वजनिक गणेश उत्सव से सन्देश नहीं दे सकते हैं क्या? आइए, मैं आपको निमंत्रण देता हूँ।

ये बात सही है कि उत्सव समाज की शक्ति होता है। उत्सव व्यक्ति और समाज के जीवन में नये प्राण भरता है। उत्सव के बिना जीवन असंभव होता है। लेकिन समय की माँग के अनुसार उसको ढालना भी पड़ता है। इस बार मैंने देखा है कि मुझे कई लोगों ने खास करके गणेशोत्सव और दुर्गा पूजा - उन चीजों पर काफ़ी लिखा है। और उनको चिंता हो रही है पर्यावरण की। कोई श्रीमान शंकर नारायण प्रशांत करके हैं, उन्होंने बड़े आग्रह से कहा है कि मोदी जी, आप 'मन की बात' में लोगों को समझाइए कि Plaster of Paris से बनी हुई गणेश जी की मूर्तियों का उपयोग न करें। क्यों न गाँव के तालाब की मिट्टी से बने हुए गणेश जी का उपयोग करें! POP की बनी हुई प्रतिमाएँ पर्यावरण के लिए अनुकूल नहीं होती हैं। उन्होंने तो बहुत पीड़ा व्यक्त की है, औरों ने भी की है। मैं भी आप सब से प्रार्थना करता हूँ, क्यों न हम मिट्टी का उपयोग करके गणेश की मूर्तियाँ, दुर्गा की मूर्तियाँ - हमारी उस पुरानी परंपरा पर वापस क्यों न आएँ। पर्यावरण की रक्षा, हमारे नदी-तालाबों की रक्षा, उसमें होने वाले प्रदूषण से इस पानी के छोटे-छोटे जीवों की रक्षा - ये भी ईश्वर की सेवा ही तो है। गणेश जी विघ्नहर्ता हैं। तो हमें ऐसे गणेश जी नहीं बनाने चाहिए, जो विघ्न पैदा करें। मैं नहीं जानता हूँ, मेरी इन बातों को आप किस रूप में लेंगे। लेकिन ये सिर्फ मैं नहीं कह रहा हूँ, कई लोग हैं और मैंने कड़ियों के विषय में कई बार सुना है - पुणे के एक मूर्तिकार श्रीमान अभिजीत धोंडफले, कोल्हापुर की संस्थाएँ निसर्ग-मित्र, विज्ञान प्रबोधिनी। विदर्भ क्षेत्र में निसर्ग-कट्टा, पुणे की ज्ञान प्रबोधिनी, मुंबई के गिरगाँवचा राजा। ऐसी अनेक-विद संस्थाएँ, व्यक्ति मिट्टी के गणेश के लिए बहुत मेहनत करते हैं, प्रचार भी करते हैं। Eco-friendly गणेशोत्सव - ये भी एक समाज सेवा का काम है। दुर्गा पूजा के बीच अभी समय है। अभी हम तय करें कि हमारे उन पुराने परिवार जिस मूर्तियाँ बनाते थे, उनको भी रोजगार मिलेगा और तालाब या नदी की मिट्टी से बनेगा, तो फिर से उसमें जा कर के मिल जाएगा, तो पर्यावरण की भी रक्षा होगी। आप सबको गणेश चतुर्थी की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, भारत रत्न मदर टेरेसा, 4 सितम्बर को मदर टेरेसा को संत की उपाधि से विभूषित किया जाएगा। मदर टेरेसा ने अपना पूरा जीवन भारत में गरीबों की सेवा के लिए लगा दिया था। उनका जन्म तो Albania में हुआ था। उनकी भाषा भी अंग्रेज़ी नहीं थी। लेकिन उन्होंने अपने जीवन को ढाला। गरीबों की सेवा के योग्य बनाने के लिये भरपूर प्रयास किए। जिन्होंने जीवन भर भारत के गरीबों की सेवा की हो, ऐसी मदर टेरेसा को जब संत की उपाधि प्राप्त होती है, तो सब भारतीयों को गर्व होना बड़ा स्वाभाविक है। 4 सितम्बर को ये जो समारोह होगा, उसमें सवा-सौ करोड़ देशवासियों की तरफ से भारत सरकार, हमारी विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की अगुवाई में, एक आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल भी वहाँ भेजेगी। संतों से, ऋषियों से, मुनियों से, महापुरुषों से हर पल हमें कुछ-न-कुछ सीखने को मिलता ही है। हम कुछ-न-कुछ पाते रहेंगे, सीखते रहेंगे और कुछ-न-कुछ अच्छा करते रहेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों, विकास जब जन-आंदोलन बन जाए, तो कितना बड़ा परिवर्तन आता है। जनशक्ति ईश्वर का ही रूप माना जाता है। भारत सरकार ने पिछले दिनों 5 राज्य सरकारों के सहयोग के साथ स्वच्छ गंगा के लिये, गंगा सफ़ाई के लिये, लोगों को जोड़ने का एक सफल प्रयास किया। इस महीने की 20 तारीख को इलाहाबाद में उन लोगों को निमंत्रित

किया गया कि जो गंगा के तट पर रहने वाले गाँवों के प्रधान थे। पुरुष भी थे, महिलायें भी थीं। वे इलाहाबाद आए और गंगा तट के गाँवों के प्रधानों ने माँ गंगा की साक्षी में शपथ ली कि वे गंगा तट के अपने गाँवों में खुले में शौच जाने की परंपरा को तत्काल बंद करवाएंगे, शौचालय बनाने का अभियान चलाएंगे और गंगा सफाई में गाँव पूरी तरह योगदान देगा कि गाँव गंगा को गंदा नहीं होने देगा। मैं इन प्रधानों को इस संकल्प के लिए इलाहाबाद आना, कोई उत्तराखण्ड से आया, कोई उत्तर प्रदेश से आया, कोई बिहार से आया, कोई झारखण्ड से आया, कोई पश्चिम बंगाल से आया, मैं उन सबको इस काम के लिए बधाई देता हूँ। मैं भारत सरकार के उन सभी मंत्रालयों को भी बधाई देता हूँ, उन मंत्रियों को भी बधाई देता हूँ कि जिन्होंने इस कल्पना को साकार किया। मैं उन सभी 5 राज्यों के मुख्यमंत्रियों को भी धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने जनशक्ति को जोड़ करके गंगा की सफाई में एक अहम कदम उठाया।

मेरे प्यारे देशवासियों, कुछ बातें मुझे कभी-कभी बहुत छू जाती हैं और जिनको इसकी कल्पना आती हो, उन लोगों के प्रति मेरे मन में एक विशेष आदर भी होता है। 15 जुलाई को छत्तीसगढ़ के कबीरधाम ज़िले में करीब सत्रह-सौ से ज्यादा स्कूलों के सवा-लाख से ज्यादा विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से अपने-अपने माता-पिता को चिट्ठी लिखी। किसी ने अंग्रेज़ी में लिख दिया, किसी ने हिंदी में लिखा, किसी ने छत्तीसगढ़ी में लिखा, उन्होंने अपने माँ-बाप से चिट्ठी लिख कर के कहा कि हमारे घर में Toilet होना चाहिए। Toilet बनाने की उन्होंने माँग की, कुछ बालकों ने तो ये भी लिख दिया कि इस साल मेरा जन्मदिन नहीं मनाओगे, तो चलेगा, लेकिन Toilet ज़रूर बनाओ। सात से सत्रह साल की उम्र के इन बच्चों ने इस काम को किया। और इसका इतना प्रभाव हुआ, इतना emotional impact हुआ कि चिट्ठी पाने के बाद जब दूसरे दिन school आया, तो माँ-बाप ने उसको एक चिट्ठी पकड़ा दी Teacher को देने के लिये और उसमें माँ-बाप ने वादा किया था कि फ़लानी तारीख तक वह Toilet बनवा देंगे। जिसको ये कल्पना आई, उनको भी अभिनन्दन, जिन्होंने ये प्रयास किया, उन विद्यार्थियों को भी अभिनन्दन और उन माता-पिता को विशेष अभिनन्दन कि जिन्होंने अपने बच्चे की चिट्ठी को गंभीर ले करके Toilet बनाने का काम करने का निर्णय कर लिया। यही तो है, जो हमें प्रेरणा देता है।

कर्नाटक के कोप्पाल ज़िला, इस ज़िले में सोलह साल की उम्र की एक बेटा मल्लम्मा - इस बेटे ने अपने परिवार के खिलाफ़ ही सत्याग्रह कर दिया। वो सत्याग्रह पर बैठ गई। कहते हैं कि उन्होंने खाना भी छोड़ दिया था और वो भी खुद के लिए कुछ माँगने के लिये नहीं, कोई अच्छे कपड़े लाने के लिये नहीं, कोई मिठाई खाने के लिये नहीं, बेटा मल्लम्मा की ज़िद ये थी कि हमारे घर में Toilet होना चाहिए। अब परिवार की आर्थिक स्थिति नहीं थी, बेटा ज़िद पर अड़ी हुई थी, वो अपना सत्याग्रह छोड़ने को तैयार नहीं थी। गाँव के प्रधान मोहम्मद शफी, उनको पता चला कि मल्लम्मा ने Toilet के लिए सत्याग्रह किया है, तो गाँव के प्रधान मोहम्मद शफी की भी विशेषता देखिए कि उन्होंने अठारह हजार रुपयों का इंतज़ाम किया और एक सप्ताह के भीतर-भीतर Toilet बनवा दिया। ये बेटा मल्लम्मा की ज़िद की ताकत देखिए और मोहम्मद शफी जैसे गाँव के प्रधान देखिए। समस्याओं के समाधान के लिए कैसे रास्ते खोले जाते हैं, यही तो जनशक्ति है।

मेरे प्यारे देशवासियों, 'स्वच्छ-भारत' ये हर भारतीय का सपना बन गया है। कुछ भारतीयों का संकल्प बन गया है। कुछ भारतीयों ने इसे अपना मकसद बना लिया है। लेकिन हर कोई किसी-न-किसी रूप में इससे जुड़ा है, हर कोई अपना योगदान दे रहा है। रोज़ ख़बरें आती रहती हैं, कैसे-कैसे नये प्रयास हो रहे हैं। भारत सरकार में एक विचार हुआ है और लोगों से आह्वान किया है कि आप दो मिनट, तीन मिनट की स्वच्छता की एक फ़िल्म बनाइए, ये Short Film भारत सरकार को भेज दीजिए, Website पर आपको इसकी जानकारियाँ मिल जाएंगी। उसकी स्पर्द्धा होगी और 2 अक्टूबर 'गाँधी जयंती' के दिन जो विजयी होंगे, उनको इनाम दिया जाएगा। मैं तो टी.वी. Channel वालों को भी कहता हूँ कि आप भी ऐसी फ़िल्मों के लिये आह्वान करके स्पर्द्धा करिए। Creativity भी स्वच्छता अभियान को एक ताकत दे सकती है, नये Slogan मिलेंगे, नए तरीक़े जानने को मिलेंगे, नयी प्रेरणा मिलेगी और ये सब कुछ जनता-जनार्दन की भागीदारी से, सामान्य कलाकारों से और ये ज़रूरी नहीं है कि फ़िल्म बनाने के लिये बड़ा Studio चाहिए और बड़ा Camera चाहिए; अरे, आजकल तो अपने Mobile Phone के Camera से भी आप फ़िल्म बना सकते हैं। आइए, आगे बढ़िए, आपको मेरा निमंत्रण है।

मेरे प्यारे देशवासियों, भारत की हमेशा-हमेशा ये कोशिश रही है कि हमारे पड़ोसियों के साथ हमारे संबंध गहरे हों, हमारे संबंध सहज हों, हमारे संबंध जीवंत हों। एक बहुत बड़ी महत्वपूर्ण बात पिछले दिनों हुई, हमारे राष्ट्रपति आदरणीय "प्रणब मुखर्जी" ने कोलकाता में एक नये कार्यक्रम की शुरुआत की "आकाशवाणी मैत्री चैनल"। अब कई लोगों को लगेगा कि राष्ट्रपति को क्या एक Radio के Channel का भी उद्घाटन करना चाहिये क्या? लेकिन ये सामान्य Radio की Channel नहीं है, एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण कदम है। हमारे पड़ोस में बांग्लादेश है। हम जानते हैं, बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल एक ही सांस्कृतिक विरासत को ले करके आज भी जी रहे हैं। तो इधर "आकाशवाणी मैत्री" और उधर "बांग्लादेश बेतार। वे आपस में content share करेंगे और दोनों तरफ़ बांग्लाभाषी लोग "आकाशवाणी" का मज़ा लेंगे। People to People Contact का "आकाशवाणी" का एक बहुत बड़ा योगदान है। राष्ट्रपति जी ने इसको launch किया। मैं बांग्लादेश का भी इसके लिये धन्यवाद करता हूँ कि इस काम के लिये हमारे साथ वे जुड़े। मैं आकाशवाणी के मित्रों को भी बधाई देता हूँ कि विदेश नीति

मैं भी वे अपना contribution दे रहे हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपने मुझे भले प्रधानमंत्री का काम दिया हो, लेकिन आखिर मैं भी तो आप ही के जैसा एक इंसान हूँ। और कभी-कभी भावुक घटनायें मुझे ज़रा ज़्यादा ही छू जाती हैं। ऐसी भावुक घटनायें नई-नई ऊर्जा भी देती हैं, नई प्रेरणा भी देती हैं और यही है, जो भारत के लोगों के लिये कुछ-न-कुछ कर गुज़रने के लिये प्रेरणा देती हैं। पिछले दिनों मुझे एक ऐसा पत्र मिला, मेरे मन को छू गया। करीब 84 साल की एक माँ, जो retired teacher हैं, उन्होंने मुझे ये चिट्ठी लिखी। अगर उन्होंने मुझे अपनी चिट्ठी में इस बात का मना न किया होता कि मेरा नाम घोषित मत करना कभी भी, तो मेरा मन तो था कि आज मैं उनको नाम दे करके आपसे बात करूँ और चिट्ठी उन्होंने ये लिखी कि आपने जब Gas Subsidy छोड़ने के लिए अपील की थी, तो मैंने Gas Subsidy छोड़ दी थी और बाद में मैं तो भूल भी गई थी। लेकिन पिछले दिनों आपका कोई व्यक्ति आया और आपकी मुझे एक चिट्ठी दे गया। इस give it up के लिए मुझे धन्यवाद पत्र मिला। मेरे लिए भारत के प्रधानमंत्री का पत्र एक पदमश्री से कम नहीं है।

देशवासियो, आपको पता होगा कि मैंने कोशिश की है कि जिन-जिन लोगों ने Gas Subsidy छोड़ दी, उनको एक पत्र भेजूँ और कोई-न-कोई मेरा प्रतिनिधि उनको रूबरू जा कर के पत्र दे। एक करोड़ से ज़्यादा लोगों को पत्र लिखने का मेरा प्रयास है। उसी योजना के तहत मेरा ये पत्र इस माँ के पास पहुँचा। उन्होंने मुझे पत्र लिखा कि आप अच्छा काम कर रहे हैं। गरीब माताओं को चूल्हे के धुएँ से मुक्ति का आपका अभियान और इसलिए मैं एक retired teacher हूँ, कुछ ही वर्षों में मेरी उम्र 90 साल हो जायेगी, मैं एक 50 हजार रुपये का donation आपको भेज रही हूँ, जिससे आप ऐसी गरीब माताओं को चूल्हे के धुएँ से मुक्त कराने के लिए काम में लगाना। आप कल्पना कर सकते हैं, एक सामान्य शिक्षक के नाते retired pension पर गुज़ारा करने वाली माँ, जब 50 हजार रुपये और गरीब माताओं-बहनों को चूल्हे के धुएँ से मुक्त कराने के लिए और gas connection देने के लिए देती हो। सवाल 50 हजार रुपये का नहीं है, सवाल उस माँ की भावना का है और ऐसी कोटि-कोटि माँ-बहनें उनके आशीर्वाद ही हैं, जिससे मेरा देश के भविष्य के लिए भरोसा और ताकतवर बन जाता है। और मुझे चिट्ठी भी उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में नहीं लिखी। सीधा-साधा पत्र लिखा - "मोदी भैया। उस माँ को मैं प्रणाम करता हूँ और भारत की इन कोटि-कोटि माताओं को भी प्रणाम करता हूँ कि जो खुद कष्ट झेल करके हमेशा कुछ-न-कुछ किसी का भला करने के लिए करती रहती हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, पिछले वर्ष अकाल के कारण हम परेशान थे, लेकिन ये अगस्त महीना लगातार बाढ़ की कठिनाइयों से भरा रहा। देश के कुछ हिस्सों में बार-बार बाढ़ आई। राज्य सरकारों ने, केंद्र सरकार ने, स्थानीय स्वराज संस्था की इकाइयों ने, सामाजिक संस्थाओं ने, नागरिकों ने, जितना भी कर सकते हैं, करने का पूरा प्रयास किया। लेकिन इन बाढ़ की खबरों के बीच भी, कुछ ऐसी खबरें भी रही, जिसका ज़्यादा स्मरण होना ज़रूरी था। एकता की ताकत क्या होती है, साथ मिल कर के चलें, तो कितना बड़ा परिणाम मिल सकता है ? ये इस वर्ष का अगस्त महीना याद रहेगा। अगस्त, 2016 में घोर राजनैतिक विरोध रखने वाले दल, एक-दूसरे के खिलाफ़ एक भी मौका न छोड़ने वाले दल, और पूरे देश में करीब-करीब 90 दल, संसद में भी ढेर सारे दल, सभी दलों ने मिल कर के GST का क़ानून पारित किया। इसका credit सभी दलों को जाता है। और सब दल मिल करके एक दिशा में चलें, तो कितना बड़ा काम होता है, उसका ये उदाहरण है। उसी प्रकार से कश्मीर में जो कुछ भी हुआ, उस कश्मीर की स्थिति के संबंध में, देश के सभी राजनैतिक दलों ने मिल करके एक स्वर से कश्मीर की बात रखी। दुनिया को भी संदेश दिया, अलगाववादी तत्वों को भी संदेश दिया और कश्मीर के नागरिकों के प्रति हमारी संवेदनाओं को भी व्यक्त किया। और कश्मीर के संबंध में मेरा सभी दलों से जितना interaction हुआ, हर किसी की बात में से एक बात ज़रूर जागृत होती थी। अगर उसको मैंने कम शब्दों में समेटना हो, तो मैं कहूँगा कि एकता और ममता, ये दो बातें मूल मंत्र में रहीं। और हम सभी का मत है, सवा-सौ करोड़ देशवासियों का मत है, गाँव के प्रधान से लेकर प्रधानमंत्री तक का मत है कि कश्मीर में अगर कोई भी जान जाती है, चाहे वह किसी नौजवान की हो या किसी सुरक्षाकर्मी की हो, ये नुकसान हमारा ही है, अपनों का ही है, अपने देश का ही है। जो लोग इन छोटे-छोटे बालकों को आगे करके कश्मीर में अशांति पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं, कभी-न-कभी उनको इन निर्दोष बालकों को भी जवाब देना पड़ेगा।

मेरे प्यारे देशवासियों, देश बहुत बड़ा है। विविधताओं से भरा हुआ है। विविधताओं से भरे हुए देश को एकता के बंधन में बनाए रखने के लिये नागरिक के नाते, समाज के नाते, सरकार के नाते, हम सबका दायित्व है कि हम एकता को बल देने वाली बातों को ज़्यादा ताकत दें, ज़्यादा उजागर करें और तभी जा करके देश अपना उज्ज्वल भविष्य बना सकता है, और बनेगा। मेरा सवा-सौ करोड़ देशवासियों की शक्ति पर भरोसा है। आज बस इतना ही, बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-सितम्बर-2016 11:39 IST

25 सितम्बर, 2016 को आकाशवाणी पर प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सबको नमस्कार। बीते दिनों जम्मू-कश्मीर के उरी सेक्टर में, एक आतंकी हमले में, हमारे देश के 18 वीर सपूतों को हमने खो दिया। मैं इन सभी बहादुर सैनिकों को नमन करता हूँ और उन्हें श्रद्धांजलि देता हूँ। इस कायराना घटना पूरे देश को झकझोरने के लिए काफी थी। देश में शोक भी है, आक्रोश भी है और ये क्षति सिर्फ़ उन परिवारों की नहीं है, जिन्होंने अपना बेटा खोया, भाई खोया, पति खोया। ये क्षति पूरे राष्ट्र की है। और इसलिए मैं देशवासियों को आज इतना ही कहूँगा और जो मैंने उसी दिन कहा था, मैं आज उसको फिर से दोहराना चाहता हूँ कि दोषी सज़ा पा करके ही रहेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमें हमारी सेना पर भरोसा है। वे अपने पराक्रम से ऐसी हर साज़िश को नाकाम करेंगे और देश के सवा-सौ करोड़ देशवासी सुख-चैन की ज़िंदगी जी सकें, इसके लिए वो पराक्रम की पराकाष्ठा करने वाले लोग हैं। हमारी सेना पर हमें नाज़ है। हम नागरिकों के लिए, राजनेताओं के लिए, बोलने के कई अवसर होते हैं। हम बोलते भी हैं। लेकिन सेना बोलती नहीं है। सेना पराक्रम करती है।

मैं आज कश्मीर के नागरिकों से भी विशेष रूप से बात करना चाहता हूँ। कश्मीर के नागरिक देश-विरोधी ताकतों को भली-भाँति समझने लगे हैं। और जैसे-जैसे सच्चाई समझने लगे हैं, वे ऐसे तत्वों से अपने-आप को अलग करके शांति के मार्ग पर चल पड़े हैं। हर माँ-बाप की इच्छा है कि जल्द से जल्द स्कूल-कॉलेज पूरी तरह काम करें। किसानों को भी लग रहा है कि उनकी जो फ़सल, फल वगैरह तैयार हुए हैं, वो हिन्दुस्तान भर के market में पहुँचें। आर्थिक कारोबार भी ठीक ढंग से चले। और पिछले कुछ दिनों से कारोबार सुचारु रूप से चलना शुरू भी हुआ है। हम सब जानते हैं - शान्ति, एकता और सद्भावना ही हमारी समस्याओं का समाधान का रास्ता भी है, हमारी प्रगति का रास्ता भी है, हमारे विकास का भी रास्ता है। हमारी भावी पीढ़ियों के लिये हमने विकास की नई ऊँचाइयों को पार करना है। मुझे विश्वास है कि हर समस्या का समाधान हम मिल-बैठ करके खोजेंगे, रास्ते निकालेंगे और साथ-साथ कश्मीर की भावी पीढ़ी के लिये उत्तम मार्ग भी प्रशस्त करेंगे। कश्मीर के नागरिकों की सुरक्षा, ये शासन की जिम्मेवारी होती है। कानून और व्यवस्था बनाने के लिये शासन को कुछ क़दम उठाने पड़ते हैं। मैं सुरक्षा बलों को भी कहूँगा कि हमारे पास जो सामर्थ्य है, शक्ति है, कानून है, नियम हैं; उनका उपयोग कानून और व्यवस्था के लिये है, कश्मीर के सामान्य नागरिकों को सुख-चैन की ज़िन्दगी देने के लिये है और उसका हम भली-भाँति पालन करेंगे। कभी-कभार हम जो सोचते हैं, उससे अलग सोचने वाले भी लोग नये-नये विचार रखते हैं। social media में इन दिनों मुझे बहुत-कुछ जानने का अवसर मिलता है; हिन्दुस्तान के हर कोने से, हर प्रकार के लोगों के भावों को, जानने-समझने का अवसर मिलता है और ये लोकतंत्र की ताकत को बढ़ावा देता है। पिछले दिनों 11वीं कक्षा के हर्षवर्द्धन नाम के एक नौजवान ने मेरे सामने एक अलग प्रकार का विचार रखा। उसने लिखा है - "उरी आतंकवादी हमले के बाद मैं बहुत विचलित था। कुछ कर गुज़रने की तीव्र लालसा थी। लेकिन करने का कुछ रास्ता नहीं सूझ रहा था। और मुझ जैसा एक छोटा-सा विद्यार्थी क्या कर सकता है। तो मेरे मन में आया कि मैं भी देश-हित के लिए काम कैसे आऊँ। और मैंने संकल्प किया कि मैं रोज़ 3 घंटे अधिक पढ़ाई करूँगा। देश के काम आ सकूँ, ऐसा योग्य नागरिक बनूँगा।"

भाई हर्षवर्द्धन, आक्रोश के इस माहौल में इतनी छोटी उम्र में, आप स्वस्थता से सोच सकते हो, यही मेरे लिए खुशी की बात है। लेकिन हर्षवर्द्धन, मैं ये भी कहूँगा कि देश के नागरिकों के मन में जो आक्रोश है, उसका एक बहुत-बड़ा मूल्य है। ये राष्ट्र की चेतना का प्रतीक है। ये आक्रोश भी कुछ कर गुज़रने के इरादों वाला है। हाँ, आपने एक constructive approach से उसको प्रस्तुत किया। लेकिन आपको पता होगा, जब 1965 की लड़ाई हुई, लाल बहादुर शास्त्री जी हमारा नेतृत्व कर रहे थे और पूरे देश में ऐसा ही एक जज़्बा था, आक्रोश था, देशभक्ति का ज्वार था, हर कोई, कुछ-न-कुछ हो, ऐसा चाहता था, कुछ-न-कुछ करने का इरादा रखता था। तब लाल बहादुर शास्त्री जी ने बहुत ही उत्तम तरीके से देश के इस भाव-विश्व को स्पर्श करने का बड़ा ही प्रयास किया था। और उन्होंने 'जय जवान - जय किसान' मंत्र देकर के देश के सामान्य मानव को देश के लिए कार्य कैसे करना है, उसकी प्रेरणा दी थी। बम-बन्दूक की आवाज़ के बीच देशभक्ति को प्रकट करने का और भी एक रास्ता हर नागरिक के लिये होता है, ये लालबहादुर शास्त्री जी ने प्रस्तुत किया था। महात्मा

गाँधी भी, जब आज़ादी का आन्दोलन चलाते थे, आन्दोलन जब तीव्रता पर होता था और आन्दोलन में एक पड़ाव की जरूरत होती थी, तो वे आन्दोलन की उस तीव्रता को समाज के अन्दर रचनात्मक कामों की ओर प्रेरित करने के लिए बड़े सफल प्रयोग करते थे। हम सब - सेना अपनी जिम्मेवारी निभाए, शासन बैठे हुए लोग अपना कर्तव्य निभाएँ और हम देशवासी, हर नागरिक, इस देशभक्ति के जज़्बे के साथ, हम भी कोई-न-कोई रचनात्मक योगदान दें, तो देश अवश्य नई ऊँचाइयों को पार करेगा।

मेरे प्यारे देशवासियों, श्रीमान टी. एस. कार्तिक ने मुझे NarendraModiApp पर लिखा कि Paralympics में जो athletes गए थे, उन्होंने इतिहास रचा और उनका प्रदर्शन human spirit की जीत है। श्रीमान वरुण विश्वनाथन ने भी NarendraModiApp पर लिखा कि हमारे athletes ने बहुत ही अच्छा काम किया। आपको 'मन की बात' में उसका ज़िक्र करना चाहिये। आप दो नहीं, देश के हर व्यक्ति को Paralympics में हमारे खिलाड़ियों के प्रति एक emotional attachment हुआ है। शायद खेल से भी बढ़कर इस Paralympics ने और हमारे खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने, मानवता के दृष्टिकोण को, दिव्यांग के प्रति देखने के दृष्टिकोण को, पूरी तरह बदल दिया है। और मैं, हमारी विजेता बहन दीपा मलिक की इस बात को कभी नहीं भूल पाऊंगा। जब उसने medal प्राप्त किया, तो उसने ये कहा - "इस medal से मैंने विकलांगता को ही पराजित कर दिया है।" इस वाक्य में बहुत बड़ी ताकत है। इस बार Paralympics में हमारे देश से 3 महिलाओं समेत 19 athletes ने हिस्सा लिया। बाकी खेलों की तुलना में जब दिव्यांग खेलते हैं, तो शारीरिक क्षमता, खेल का कौशल्य, इस सबसे भी बड़ी बात होती है - इच्छा शक्ति, संकल्प शक्ति।

आपको ये जानकर के सुखद आश्चर्य होगा कि हमारे खिलाड़ियों ने अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 4 पदक हासिल किए हैं - 2 स्वर्ण, 1 रजत, 1 काँस्य पदक शामिल हैं। Gold Medal प्राप्त करने वाले भाई देवेन्द्र झाझरिया - 'भाला फेंक' में वो दुबारा Gold Medal लाए और 12 साल के बाद दुबारा ले आए। 12 साल में उम्र बढ़ जाती है। एक बार Gold Medal मिलने के बाद कुछ ज़ब्बा भी कम हो जाता है, लेकिन देवेन्द्र ने दिखा दिया कि शरीर की अवस्था, उम्र का बढ़ना, उनके संकल्प को कभी भी ढीला नहीं कर पाया और 12 साल के बाद दोबारा Gold Medal ले आए। और वे जन्म से दिव्यांग नहीं थे। बिजली का current लगने के कारण उनको अपना एक हाथ गँवाना पड़ा था। आप सोचिए, जो इंसान 23 साल की उम्र में पहला Gold Medal प्राप्त करे और 35 साल की उम्र में दूसरा Gold Medal प्राप्त करे, उन्होंने जीवन में कितनी बड़ी साधना की होगी। मरियप्पन थन्गावेलु - 'High Jump' में स्वर्ण पदक जीता। और थन्गावेलु ने सिर्फ 5 साल की उम्र में अपना दाहिना पैर खो दिया था। गरीबी भी उनके संकल्प के आड़े नहीं आई। न वो बड़े शहर के रहने वाले हैं, न मध्यमवर्गीय अमीर परिवार से हैं। 21 साल की उम्र में कठिनाइयों भरी ज़िंदगी से गुज़रने के बावजूद भी, शारीरिक कठिनाइयों के बावजूद भी संकल्प के सामर्थ्य से देश को medal दिलवा दिया। Athlete दीपा मलिक के नाम पर तो कई प्रकार के विजयपताकार्ये फहराने का उनके नाम के साथ जुड़ चुका है।

वरुण सी. भाटी ने 'ऊँची कूद' में 'काँस्य पदक' हासिल किया। Paralympics के medal, उसका माहात्म्य तो है ही है, हमारे देश में, हमारे समाज में, हमारे अड़ोस-पड़ोस में, हमारे जो दिव्यांग भाई-बहन हैं, उनकी तरफ़ देखने के लिये इन मेडलों ने बहुत बड़ा काम किया है। हमारी संवेदनाओं को तो जगाया है, लेकिन इन दिव्यांगजनों के प्रति देखने के दृष्टिकोण को भी बदला है। बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि इस बार के Paralympics में ये दिव्यांगजनों ने कैसा पराक्रम किया है। कुछ ही दिनों पहले, उसी स्थान पर Olympics स्पर्धा हुई। कोई सोच सकता है कि General Olympics के record को दिव्यांग लोगों ने भी break कर दिया, तोड़ दिया। इस बार हुआ है। 1500 मीटर की जो दौड़ होती है, उसमें जो Olympics स्पर्धा थी, उसमें Gold Medal प्राप्त करने वाले ने जो record बनाया था, उससे दिव्यांग की स्पर्धा में अल्जीरिया के Abdellatif Baka ने 1.7 second कम समय में, 1500 मीटर दौड़ में, एक नया record बना दिया। इतना ही नहीं, मुझे ताज्जुब तो तब हुआ कि दिव्यांगजनों में जिसका चौथा नंबर आया धावक के नाते, कोई medal नहीं मिला, वो general धावकों में Gold Medal पाने वाले से भी कम समय में दौड़ा था। मैं फिर एक बार, हमारे इन सभी खिलाड़ियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और आने वाले दिनों में भारत Paralympics के लिये भी, उसके विकास के लिये भी, एक सुचारु योजना बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियों, पिछले सप्ताह मुझे गुजरात के नवसारी में कई अद्भुत अनुभव हुए। बड़ा emotional पल था मेरे लिये। दिव्यांगजनों के लिये एक Mega Camp भारत सरकार का लगाया गया था और कई सारे world record हो गए उस दिन। और वहाँ मुझे एक छोटी-सी बिटिया, जो दुनिया देख नहीं सकती है - गौरी शार्दूल, और वो भी डांग ज़िले के दूर-सुदूर जंगलों से आई हुई और बहुत छोटी बच्ची थी। उसने मुझे काव्यमय पठन के द्वारा पूरी रामायण उसको मुख-पाठ है। उसने मुझे कुछ अंश सुनाए भी, और वो मैंने वहाँ, लोगों के सामने भी प्रस्तुत किया, तो लोग हैरान थे। उस दिन मुझे एक किताब का लोकार्पण करने का अवसर मिला। उन्होंने कुछ दिव्यांगजनों के जीवन की सफल गाथाओं को संग्रहित किया था। बड़ी प्रेरक घटनायें थीं। भारत सरकार ने नवसारी की धरती पर विश्व रिकॉर्ड किया, जो महत्वपूर्ण मैं मानता हूँ। आठ घंटे के भीतर-भीतर छह-सौ दिव्यांगजन, जो सुन नहीं पाते थे, उनको सुनने के लिए मशीनें feed करने का सफल प्रयोग किया।

Guinness Book of World Record में उसको स्थान मिला। एक ही दिन में दिव्यांगों के द्वारा तीन-तीन world record होना हम देशवासियों के लिए गौरव की बात है।

मेरे प्यारे देशवासियो, दो साल पहले, 2 अक्टूबर को पूज्य बापू की जन्म जयंती पर 'स्वच्छ भारत मिशन' को हमने प्रारंभ किया था। और उस दिन भी मैंने कहा था कि स्वच्छता - ये स्वभाव बनना चाहिए, हर नागरिक का कर्तव्य बनना चाहिए, गंदगी के प्रति नफ़रत का माहौल बनना चाहिए। अब 2 अक्टूबर को जब दो वर्ष हो रहे हैं, तब मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि देश के सवा-सौ करोड़ देशवासियों के दिल में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है। और मैंने कहा था - 'एक कदम स्वच्छता की ओर' और आज हम सब कह सकते हैं कि हर किसी ने एक कदम आगे बढ़ने का प्रयास किया ही है। मतलब कि देश सवा-सौ करोड़ कदम, स्वच्छता की ओर आगे बढ़ा है। ये भी पक्का हो चुका है, दिशा सही है, फल कितने अच्छे होते हैं, थोड़े से प्रयास से क्या होता है, वो भी नज़र आया है और इसलिए हर कोई चाहे सामान्य नागरिक हो, चाहे शासक हो, चाहे सरकार के कार्यालय हों या सड़क हो, बस-अड्डे हों या रेल हो, स्कूल या कॉलेज हो, धार्मिक स्थान हो, अस्पताल हो, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, गाँव गरीब, किसान महिलाएँ, सब कोई, स्वच्छता के अन्दर कुछ-न-कुछ योगदान दे रहे हैं। media के मित्रों ने भी एक सकारात्मक भूमिका निभाई है। मैं भी चाहूँगा कि हमें अभी भी और बहुत आगे बढ़ना है। लेकिन शुरुआत अच्छी हुई है, प्रयास भरपूर हुए हैं, और हम कामयाब होंगे, ये विश्वास भी पैदा हुआ है। ये भी तो ज़रूरी होता है और तभी तो ग्रामीण भारत की बात करें, तो अब तक दो करोड़ अड़तालीस लाख, यानि करीब-करीब ढाई-करोड़ शौचालय का निर्माण हुआ है और आने वाले एक साल में डेढ़ करोड़ और शौचालय बनाने का इरादा है। आरोग्य के लिये, नागरिकों के सम्मान के लिये, खास करके माताओं-बहनों के सम्मान के लिये, खुले में शौच जाने की आदत बंद होनी ही चाहिए और इसलिये Open Defecation Free (ODF) 'खुले में शौच जाने की आदतों से मुक्ति', उसका एक अभियान चल पड़ा है। राज्यों-राज्यों के बीच, ज़िले-ज़िले के बीच, गाँव-गाँव के बीच, एक स्वस्थ स्पर्धा चल पड़ी है। आंध्र प्रदेश, गुजरात और केरल खुले में शौच जाने की आदत से मुक्ति की दिशा में बहुत ही निकट भविष्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। मैं अभी गुजरात गया था, तो मुझे अफ़सरों ने बताया कि पोरबंदर, जोकि महात्मा गाँधी का जन्म स्थान है, इस 2 अक्टूबर को पोरबंदर पूरी तरह ODF का लक्ष्य सिद्ध कर लेगा। जिन्होंने इस काम को किया है, उनको बधाई, जो करने का प्रयास कर रहे हैं, उनको शुभकामनायें और देशवासियों से मेरा आग्रह है कि माँ-बहनों के सम्मान के लिये, छोटे-छोटे बच्चों के स्वास्थ्य के लिये, इस समस्या से हमें देश को मुक्त करना है। आओ, हम संकल्प ले करके आगे बढ़ें। खासकर के मैं नौजवान मित्र, जो कि आजकल technology का भरपूर उपयोग करते हैं, उनके लिये एक योजना प्रस्तुत करना चाहता हूँ। स्वच्छता मिशन का आपके शहर में क्या हाल है? ये जानने का हक़ हर किसी को है और इसके लिये भारत सरकार ने एक टेलीफ़ोन नंबर दिया है - 1969। हम जानते हैं, 1869 में महात्मा गाँधी का जन्म हुआ था। 1969 में हमने महात्मा गाँधी की शताब्दी मनाई थी। और 2019 में महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती मनाने वाले हैं। ये 1969 नंबर - उस पर आप फ़ोन करके न सिर्फ़ अपने शहर में शौचालयों के निर्माण की स्थिति जान पाएँगे, बल्कि शौचालय बनवाने के लिए आवेदन भी कर पाएँगे। आप ज़रूर उसका लाभ उठाएँ। इतना ही नहीं, सफ़ाई से जुड़ी शिकायतों और उन शिकायतों के समाधान की स्थिति जानने के लिये एक स्वच्छता App की शुरुआत की है। आप इसका भरपूर फायदा उठाएँ, खासकर के young generation फायदा उठाए। भारत सरकार ने corporate world को भी appeal की है कि वे आगे आएँ। स्वच्छता के लिये काम करना जो चाहते हैं, ऐसे young professionals को sponsor करें। ज़िलों के अन्दर 'स्वच्छ भारत Fellows' के रूप में उनको भेजा जा सकता है।

ये स्वच्छता अभियान सिर्फ़ संस्कारों तक सीमित रहने से भी बात बनती नहीं है। स्वच्छता स्वभाव बन जाए, इतने से ही काफी नहीं है। आज के युग में स्वच्छता के साथ स्वास्थ्य जैसे जुड़ता है, वैसे स्वच्छता के साथ revenue model भी अनिवार्य है। 'Waste to Wealth' ये भी उसका एक अंग होना ज़रूरी है और इसलिये स्वच्छता मिशन के साथ-साथ 'Waste to Compost' की तरफ़ हमें आगे बढ़ना है। solid waste की processing हो। Compost में बदलने के लिये काम हो, और इसके लिये सरकार की तरफ़ से policy intervention की भी शुरुआत की गई है। Fertilizer कंपनियों को कहा है कि वे waste में से जो Compost तैयार होता है, उसको ख़रीदें। जो किसान organic farming में जाना चाहते हैं, उनको ये मुहैया कराएँ। जो लोग अपनी ज़मीन का स्वास्थ्य सुधारना चाहते हैं, धरती की तबीयत की फ़िक्र करते हैं, जो chemical fertilizer के कारण काफी नुकसान हो चुका है, उनको अगर कुछ मात्रा में इस प्रकार की खाद की ज़रूरत है, तो वो मुहैया कराएँ। और श्रीमान अमिताभ बच्चन जी Brand Ambassador के रूप में इस काम में काफी योगदान दे रहे हैं। मैं नौजवानों को 'Waste to Wealth' इस movement में नये-नये start-up के लिए भी निमंत्रित करता हूँ। वैसे साधन विकसित करें, वैसी technology विकसित करें, सस्ते में उसके mass production का काम करें। ये करने जैसा काम है। बहुत बड़ा रोज़गार का भी अवसर है। बहुत बड़ी आर्थिक गतिविधि का भी अवसर है। और waste में से wealth creation - ये सफल होता है। इसी वर्ष 25 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक एक विशेष कार्यक्रम 'INDOSAN', India Sanitation Conference आयोजित हो रही है। देश भर से मंत्री, मुख्यमंत्री, महानगरों के Mayor, Commissioner - ये सब मिल करके सिर्फ़ और सिर्फ़ 'स्वच्छता' - इसी पर गहन चिंतन-मनन करने वाले हैं। Technology में क्या हो सकता है? Financial model क्या हो सकता है? जन-भागीदारी कैसे हो सकती है? रोज़गार के अवसर इसमें कैसे बढ़ाये जा सकते हैं?

सब विषयों पर चर्चा होने वाली है। और मैं तो देख रहा हूँ कि लगातार स्वच्छता के लिये नई-नई खबरें आती रहती हैं। अभी एक दिन मैंने अखबार में पढ़ा कि Gujarat Technology University के विद्यार्थियों ने 107 गाँवों में जाकर शौचालय निर्माण के लिये जागरण अभियान चलाया। स्वयं ने श्रम किया और करीब-करीब 9 हजार शौचालय बनाने में उन्होंने अपना योगदान दिया। पिछले दिनों आपने देखा होगा, Wing Commander परमवीर सिंह की अगुवाई में एक टीम ने तो गंगा में देवप्रयाग से ले करके गंगा सागर तक, 2800 किलोमीटर की यात्रा तैर करके की और स्वच्छता का संदेश दिया। भारत सरकार ने भी अपने-अपने विभागों ने, एक साल-भर का calendar बनाया है। हर department 15 दिन विशेष रूप से स्वच्छता पर focus करता है। आने वाले अक्टूबर महीने में 1 से 15 अक्टूबर तक Drinking Water and Sanitation Department, Panchayati Raj Department, Rural Development Department - ये तीनों मिल करके अपने-अपने क्षेत्र में स्वच्छता का road-map बना करके काम करने वाले हैं। और अक्टूबर महीने के last two week, 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर, तीन और department Agriculture and Farmer Welfare - कृषि और किसान कल्याण विभाग, Food Processing Industries, Consumer Affairs - ये department 15 दिन अपने साथ संबंधित जो क्षेत्र हैं, वहाँ पर सफाई अभियान चलाने वाले हैं। मेरा नागरिकों से भी अनुरोध है कि ये विभागों के द्वारा जो काम चलता है, उसमें आपका कहीं संबंध आता है, तो आप भी जुड़ जाइए। आपने देखा होगा, इन दिनों स्वच्छता का survey अभियान भी चलता है। पहले एक बार 73 शहरों के survey करके स्वच्छता की क्या स्थिति है, उसको देश की जनता के सामने प्रस्तुत किया था। अब 1 लाख से ऊपर जनसंख्या वाले जो 500 के करीब शहर हैं, उनकी बारी है और इसके कारण हर शहर के अन्दर एक विश्वास पैदा होता है कि चलो भाई, हम पीछे रह गए, अब अगली बार हम कुछ अच्छा करेंगे। एक स्वच्छता की स्पर्द्धा का माहौल बना है। मैं आशा करता हूँ कि हम सभी नागरिक इस अभियान में जितना योगदान दे सकते हैं, देना चाहिए। आने वाली 2 अक्टूबर, महात्मा गाँधी और लाल बहादुर शास्त्री जी की जन्म जयंती है। 'स्वच्छ भारत मिशन' को 2 वर्ष हो रहे हैं। मैं गाँधी जयंती से दीवाली तक, खादी का कुछ-न-कुछ खरीदने के लिये तो आग्रह करता ही रहता हूँ। इस बार भी मेरा आग्रह है कि हर परिवार में कोई-न-कोई खादी की चीज़ होनी चाहिये, ताकि गरीब के घर में दीवाली का दिया जल सके। इस 2 अक्टूबर को, जबकि रविवार है, एक नागरिक के नाते हम स्वयं स्वच्छता में कहीं-न-कहीं जुड़ सकते हैं क्या? 2 घंटे, 4 घंटे physically आप सफाई के काम में अपने-आप को जोड़िये और मैं आपसे कहता हूँ कि आप जो सफाई अभियान में जुड़े, उसकी एक photo मुझे 'NarendraModiApp' पर आप share कीजिए। video हो, तो video share कीजिए। देखिए, पूरे देश में हम लोगों के प्रयास से फिर एक बार इस आंदोलन को नई ताकत मिल जाएगी, नई गति मिल जाएगी। महात्मा गाँधी और लाल बहादुर शास्त्री को पुण्य स्मरण करते हुए हम देश के लिए कुछ-न-कुछ करने का संकल्प करें।

मेरे प्यारे देशवासियों, जीवन में देने का अपने-आप में एक आनंद होता है। कोई उसे recognize करे या ना करे। देने की खुशी अद्भुत होती है। और मैंने तो देखा पिछले दिनों, जब gas subsidy छोड़ने के लिए मैंने कहा और देशवासियों ने जो उसको respond किया, वो अपने-आप में ही एक बहुत बड़ी प्रेरक घटना है भारत के राष्ट्रीय जीवन की। इन दिनों हमारे देश में कई नौजवान, छोटे-मोटे संगठन, corporate जगत के लोग, स्कूलों के लोग, कुछ NGO, ये सब मिल करके 2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर कई शहरों में 'Joy of Giving Week' मनाने वाले हैं। ज़रूरतमंद लोगों को खाने का सामान, कपड़े, ये सब एकत्र कर-कर के वो पहुँचाने का उनका अभियान है। मैं जब गुजरात में था, तो हमारे सारे कार्यकर्ता गलियों में निकलते थे और परिवारों के पास जो पुराने खिलौने होते थे, उसका दान में मांग करते थे और जो खिलौने आते थे, वो गरीब बस्ती की जो आंगनबाड़ी होती थी, उसमें भेंट दे देते थे। उन गरीब बालकों के लिए वो खिलौने, इनका अद्भुत आनंद देख कर के ऐसा लगता था कि वाह! मैं समझता हूँ कि ये जो 'Joy of Giving Week' है, जिन शहरों में होने वाला है, ये नौजवानों के उत्साह को हमने प्रोत्साहन देना चाहिये, उनको मदद करनी चाहिये। एक प्रकार का ये दान उत्सव है। जो नौजवान इस काम में लगे हैं, उनको मैं हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, आज 25 सितम्बर है, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्म जयंती का आज अवसर है और आज से उनके जन्म के शताब्दी वर्ष का प्रारंभ हो रहा है। मेरे जैसे लाखों कार्यकर्ता जिस राजनैतिक विचारधारा को लेकर के काम कर रहे हैं, उस राजनैतिक विचारधारा को व्याख्यायित करने का काम, भारत की जड़ों से जुड़ी हुई राजनीति के पक्षकार, भारत की सांस्कृतिक विरासत को पुरस्कृत करने के प्रयास वाली विचारधारा के साथ, जिन्होंने अपना एक राजनैतिक दर्शन दिया, एकात्म-मानव दर्शन दिया, वैसे पंडित दीनदयाल जी की शताब्दी का वर्ष आज प्रारंभ हो रहा है। 'सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय' अन्त्योदय का सिद्धांत - ये उनकी देन रही है। महात्मा गाँधी भी आखिरी छोर के व्यक्ति के कल्याण की बात करते थे। विकास का फल गरीब से गरीब व्यक्ति को कैसे मिले? 'हर हाथ को काम हर खेत को पानी', दो ही शब्दों में पूरा आर्थिक agenda उन्होंने प्रस्तुत किया था। देश उनके जन्म-शताब्दी वर्ष को 'गरीब कल्याण वर्ष' के रूप में मनाए। समाज का, सरकारों का, हर किसी का ध्यान, विकास के लाभ गरीब को कैसे मिलें, उस पर केन्द्रित हो और तभी जाकर के देश को हम गरीबी से मुक्ति दिला सकते हैं। मैं पिछले दिनों जहाँ प्रधानमंत्री का निवास स्थान है, जो अब तक अंग्रेज़ों के जमाने से 'रेस-कोर्स रोड' के रूप में जाना जाता था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष निमित्त प्रधानमंत्री के निवास स्थान वाले उस मार्ग का नाम 'लोक कल्याण मार्ग' कर दिया गया है। वो उसी शताब्दी वर्ष के 'गरीब कल्याण वर्ष'

का ही एक प्रतीकात्मक स्वरूप है। हम सब के प्रेरणा पुरुष, हमारी वैचारिक धरोहर के धनी श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी को आदरपूर्वक नमन करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, विजयादशमी के दिन ही 2 साल पहले 'मन की बात' की मैंने शुरुआत की थी। इस विजयादशमी के पर्व पर 2 वर्ष पूर्ण हो जाएँगे। मेरी ये प्रामाणिक कोशिश रही थी कि 'मन की बात' - ये सरकारी कामों के गुणगान करने का कार्यक्रम नहीं बनना चाहिए। ये 'मन की बात' राजनैतिक छिंटकशी का कार्यक्रम नहीं बनना चाहिए। ये 'मन की बात' आरोप-प्रत्यारोप का कार्यक्रम नहीं बनना चाहिए। 2 साल तक भाँति-भाँति के दबावों के बावजूद भी - कभी-कभी तो मन लालायित हो जाए, इस प्रकार के प्रलोभनात्मक वातावरण के बावजूद भी - कभी-कभी नाराज़गी के साथ कुछ बात बताने का मन कर जाए, यहाँ तक दबाव पैदा हुए - लेकिन आप सब के आशीर्वाद से 'मन की बात' को उन सब से बचाए रख कर के सामान्य मानव से जुड़ने का मेरा प्रयास रहा। इस देश का सामान्य मानव मुझे किस प्रकार से प्रेरणा देता रहता है। इस देश के सामान्य मानव की आशा-आकांक्षाएँ क्या हैं? और मेरे दिलो-दिमाग पर जो देश का सामान्य नागरिक छाया रहता है, वो ही 'मन की बात' में हमेशा-हमेशा प्रकट होता रहा। देशवासियों के लिये 'मन की बात' जानकारीयों का अवसर हो सकता है, मेरे लिये 'मन की बात' मेरे सवा-सौ करोड़ देशवासियों की शक्ति का एहसास करना, मेरे देश के सवा-सौ करोड़ देशवासियों के सामर्थ्य को बार-बार स्मरण करना और उसी से कार्य की प्रेरणा पाना, यही मेरे लिये ये कार्यक्रम बना। मैं आज 2 वर्ष इस सप्ताह जब पूर्ण हो रहे हैं, तब 'मन की बात' को आपने जिस प्रकार से सराहा, जिस प्रकार से संवारा, जिस प्रकार से आशीर्वाद दिए, मैं इसके लिए भी सभी श्रोताजनों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मैं आकाशवाणी का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मेरी इन बातों को न सिर्फ प्रसारित किया, लेकिन उसको सभी भाषाओं में पहुँचाने के लिए भरसक प्रयास किया। मैं उन देशवासियों का भी आभारी हूँ कि जिन्होंने 'मन की बात' के बाद चिट्ठियाँ लिख करके, सुझाव दे करके, सरकार के दरवाज़ों को खटखटाया, सरकार की कमियों को उजागर किया और आकाशवाणी ने ऐसे पत्रों पर विशेष कार्यक्रम करके, सरकार के लोगों को बुला करके, समस्याओं के समाधान के लिये platform प्रदान किया। तो 'मन की बात' सिर्फ 15-20 मिनट का संवाद नहीं, समाज-परिवर्तन का एक नया अवसर बन गया। किसी के भी लिये इससे बड़ा संतोष का कारण क्या हो सकता है और इसलिए इसको सफल बनाने में जुड़े हुए हर किसी को भी मैं धन्यवाद देता हूँ, उनका आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, अगले सप्ताह नवरात्रि और दुर्गा-पूजा का पर्व, विजयादशमी का पर्व, दीपावली की तैयारियाँ, एक प्रकार से एक अलग सा ही माहौल पूरे देश में होता है। ये शक्ति-उपासना का पर्व होता है। समाज की एकता ही देश की शक्ति होती है। चाहे नवरात्रि हो या दुर्गा-पूजा हो, ये शक्ति की उपासना, समाज की एकता की उपासना का पर्व कैसे बने? जन-जन को जोड़ने वाला पर्व कैसे बने? और वही सच्ची शक्ति की साधना हो और तभी जाकर कर के हम मिल कर के विजय का पर्व मना सकते हैं। आओ, शक्ति की साधना करें। एकता के मन्त्र को लेकर के चलें। राष्ट्र को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिये शांति, एकता, सद्भावना के साथ नवरात्रि और दुर्गा-पूजा का पर्व मनाएँ, विजयादशमी की विजय मनाएँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

30-अक्टूबर-2016 12:09 IST

30 अक्टूबर 2016 को आकाशवाणी पर प्रधानमंत्री के 'मन की बात' संबोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सबको दीपावली की बहुत-बहुत शुभकामनायें। भारत के हर कोने में उत्साह और उमंग के साथ दीपावली का पर्व मनाया जाता है। भारत एक ऐसा देश है कि 365 दिन, देश के किसी-न-किसी कोने में, कोई-न-कोई उत्सव नज़र आता है। दूर से देखने वाले को तो कभी यही लगेगा कि जैसे भारतीय जन-जीवन, ये उत्सव का दूसरा नाम है, और ये स्वाभाविक भी है। वेद-काल से आज तक भारत में जो उत्सवों की परम्परा रही है, वे समयानुकूल परिवर्तन वाले उत्सव रहे हैं, कालबाह्य उत्सवों की परम्परा को समाप्त करने की हिम्मत हमने देखी है और समय और समाज की माँग के अनुसार उत्सवों में बदलाव भी सहज रूप से स्वीकार किया गया है। लेकिन इन सबमें एक बात हम भली-भाँति देख सकते हैं कि भारत के उत्सवों की ये पूरी यात्रा, उसका व्याप, उसकी गहराई, जन-जन में उसकी पैठ, एक मूल-मन्त्र से जुड़ी हुई है - स्व को समष्टि की ओर ले जाना। व्यक्ति और व्यक्तित्व का विस्तार हो, अपने सीमित सोच के दायरे को, समाज से ब्रह्माण्ड तक विस्तृत करने का प्रयास हो और ये उत्सवों के माध्यम से करना। भारत के उत्सव कभी खान-पान की महफ़िल जैसे दिखते हैं। लेकिन उसमें भी, मौसम कैसा है, किस मौसम में क्या खाना चाहिये। किसानों की कौन सी पैदावार है, उस पैदावार को उत्सव में कैसे पलटना। आरोग्य की दृष्टि से क्या संस्कार हों। ये सारी बातें, हमारे पूर्वजों ने बड़े वैज्ञानिक तरीके से, उत्सव में समेट ली हैं। आज पूरा विश्व environment की चर्चा करता है। प्रकृति-विनाश चिंता का विषय बना है। भारत की उत्सव परम्परा, प्रकृति-प्रेम को बलवान बनाने वाली, बालक से लेकर के हर व्यक्ति को संस्कारित करने वाली रही है। पेड़ हो, पौधे हों, नदी हो, पशु हो, पर्वत हो, पक्षी हो, हर एक के प्रति दायित्व भाव जगाने वाले उत्सव रहे हैं। आजकल तो हम लोग Sunday को छुट्टी मनाते हैं, लेकिन जो पुरानी पीढ़ी के लोग हैं, मज़दूरी करने वाला वर्ग हो, मछुआरे हों, आपने देखा होगा सदियों से हमारे यहाँ परम्परा थी - पूर्णिमा और अमावस्या को छुट्टी मनाने की। और विज्ञान ने इस बात को सिद्ध किया है कि पूर्णिमा और अमावस को, समुद्र के जल में किस प्रकार से परिवर्तन आता है, प्रकृति पर किन-किन चीज़ों का प्रभाव होता है। और वो मानव-मन पर भी प्रभाव होता है। यानि यहाँ तक हमारे यहाँ छुट्टी भी ब्रह्माण्ड और विज्ञान के साथ जोड़ करके मनाने की परम्परा विकसित हुई थी। आज जब हम दीपावली का पर्व मनाते हैं तब, जैसा मैंने कहा, हमारा हर पर्व एक शिक्षादायक होता है, शिक्षा का बोध लेकर के आता है। ये दीपावली का पर्व 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' - अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का एक सन्देश देता है। और अन्धकार, वो प्रकाश के अभाव का ही अन्धकार वाला अन्धकार नहीं है, अंध-श्रद्धा का भी अन्धकार है, अशिक्षा का भी अन्धकार है, गरीबी का भी अन्धकार है, सामाजिक बुराईयों का भी अन्धकार है। दीपावली का दिया जला कर के, समाज दोष-रूपी जो अन्धकार छाया हुआ है, व्यक्ति दोष-रूपी जो अन्धकार छाया हुआ है, उससे भी मुक्ति और वही तो दिवाली का दिया जला कर के, प्रकाश पहुँचाने का पर्व बनता है।

एक बात हम सब भली-भाँति जानते हैं, हिन्दुस्तान के किसी भी कोने में चले जाइए, अमीर-से-अमीर के घर में चले जाइए, गरीब-से-गरीब की झोपड़ी में चले जाइए, दिवाली के त्योहार में, हर परिवार में स्वच्छता का अभियान चलता दिखता है। घर के हर कोने की सफ़ाई होती है। गरीब अपने मिट्टी के बर्तन होंगे, तो मिट्टी के बर्तन भी ऐसे साफ़ करते हैं, जैसे बस ये दिवाली आयी है। दिवाली एक स्वच्छता का अभियान भी है। लेकिन, समय की माँग है कि सिर्फ़ घर में सफ़ाई नहीं, पूरे परिसर की सफ़ाई, पूरे मोहल्ले की सफ़ाई, पूरे गाँव की सफ़ाई, हमने हमारे इस स्वभाव और परम्परा को विस्तृत करना है, विस्तार देना है। दीपावली का पर्व अब भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं रहा है। विश्व के सभी देशों में किसी-न-किसी रूप में दीपावली के पर्व को याद किया जाता है, मनाया जाता है। दुनिया की कई सरकारें भी, वहाँ की संसद भी, वहाँ के शासक भी, दीपावली के पर्व के हिस्से बनते जा रहे हैं। चाहे देश पूर्व के हों या पश्चिम के, चाहे विकसित देश हों या विकासमान देश हों, चाहे Africa हो, चाहे Ireland हो, सब दूर दिवाली की धूम-धाम नज़र आती है। आप लोगों को पता होगा, America की US Postal Service, उन्होंने इस बार दीपावली का postage stamp जारी किया है। Canada के प्रधानमंत्री जी ने दीपावली के अवसर पर दिया जलाते हुए अपनी तस्वीर Twitter पर share की है।

Britain की प्रधानमंत्री ने London में दीपावली के निमित्त, सभी समाजों को जोड़ता हुआ एक Reception का कार्यक्रम आयोजित किया, स्वयं ने हिस्सा लिया और शायद U.K. में तो कोई ऐसा शहर नहीं होगा, कि जहाँ पर बड़े ताम-झाम के साथ दिवाली न मनाई जाती हो। Singapore के प्रधानमंत्री जी ने Instagram पर तस्वीर रखी है और उस तस्वीर को

उन्होंने दुनिया के साथ share किया है और बड़े गौरव के साथ किया है। और तस्वीर क्या है। Singapore Parliament की 16 महिला MPs भारतीय साड़ी पहन करके Parliament के बाहर खड़ी हैं और ये photo viral हुई है। और ये सब दिवाली के निमित्त किया गया है। Singapore के तो हर गली-मोहल्ले में इन दिनों दिवाली का जश्न मनाया जा रहा है। Australia के प्रधानमंत्री ने भारतीय समुदाय को दीपावली की शुभकामनाएँ और Australia के विभिन्न शहरों में दीपावली के पर्व में हर समाज को जुड़ने के लिए आह्वान किया है। अभी New Zealand के प्रधानमंत्री आए थे, उन्होंने मुझे कहा कि मुझे जल्दी इसलिए वापस जाना है कि मुझे वहाँ दिवाली के समारोह में शामिल होना है। कहने का मेरा तात्पर्य यह है कि दीपावली, ये प्रकाश का पर्व, विश्व समुदाय को भी अंधकार से प्रकाश की ओर लाए जाने का एक प्रेरणा उत्सव बन रहा है।

दीपावली के पर्व पर अच्छे कपड़े, अच्छे खान-पान के साथ-साथ पटाखों की भी बड़ी धूम मची रहती है। और बालकों को, युवकों को बड़ा आनंद आता है। लेकिन कभी-कभी बच्चे दुस्साहस भी कर देते हैं। कई पटाखों को इकट्ठा कर-कर के बड़ी आवाज़ करने की कोशिश में एक बहुत बड़े अकस्मात को निमंत्रण दे देते हैं। कभी ये भी ध्यान नहीं रहता है कि आसपास में क्या चीजें हैं, कहीं आग तो नहीं लग जाएगी। दीपावली के दिनों में अकस्मात की खबरें, आग की खबरें, अपमृत्यु की खबरें, बड़ी चिंता कराती हैं। और एक मुसीबत ये भी हो जाती है कि दिवाली के दिनों में डॉक्टर भी बड़ी संख्या में अपने परिवार के साथ दिवाली मनाने चले गए होते हैं, तो संकट में और एक संकट जुड़ जाता है। मेरा खास कर के माता-पिताओं को, parents को, guardians को खास आग्रह है कि बच्चे जब पटाखे चलाते हों, बड़ों को साथ खड़े रहना चाहिए, कोई गलती न हो जाए, उसकी चिंता करनी चाहिए और दुर्घटना से बचना चाहिए। हमारे देश में दीपावली का पर्व बहुत लम्बा चलता है। वो सिर्फ एक दिन का नहीं होता है। वो गोवर्धन पूजा कहो, भाई दूज कहो, लाभ पंचमी कहो, और कार्तिक पूर्णिमा के प्रकाश-पर्व तक ले जाइए, तो एक प्रकार से एक लंबे कालखंड चलता है। इसके साथ-साथ हम दीपावली का त्योहार भी मनाते हैं और छठ-पूजा की तैयारी भी करते हैं। भारत के पूर्वी इलाके में छठ-पूजा का त्योहार, एक बहुत बड़ा त्योहार होता है। एक प्रकार से महापर्व होता है, चार दिन तक चलता है, लेकिन इसकी एक विशेषता है - समाज को एक बड़ा गहरा संदेश देता है। भगवान सूर्य हमें जो देते हैं, उससे हमें सब कुछ प्राप्त होता है। प्रत्यक्ष और परोक्ष, भगवान सूर्य देवता से जो मिलता है, उसका हिसाब अभी लगाना ये हमारे लिये कठिन है, इतना कुछ मिलता है और छठ-पूजा, सूर्य की उपासना का भी पर्व है। लेकिन कहावत तो ये हो जाती है कि भई, दुनिया में लोग उगते सूरज की पूजा करते हैं। छठ-पूजा एक ऐसा उत्सव है, जिसमें ढलते सूरज की भी पूजा होती है। एक बहुत बड़ा सामाजिक संदेश है उसमें।

में दीपावली के पर्व की बात कहूँ, छठ-पूजा की बात कहूँ - ये समय है आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देने का, लेकिन साथ-साथ मेरे लिये समय और भी है, खासकर के देशवासियों का धन्यवाद करना है, आभार व्यक्त करना है। पिछले कुछ महीनों से, जो घटनाएँ आकार ले रही हैं, हमारे सुख-चैन के लिये हमारे सेना के जवान अपना सब कुछ लुटा रहे हैं। मेरे भाव-विश्व पर सेना के जवानों की, सुरक्षा बलों के जवानों की, ये त्याग, तपस्या, परिश्रम, मेरे दिल-दिमाग पर छाया हुआ रहता है। और उसी में से एक बात मन में कर गई थी कि यह दिवाली सुरक्षा बलों के नाम पर समर्पित हो। मैंने देशवासियों को 'Sandesh to Soldiers' एक अभियान के लिए निमंत्रित किया। लेकिन मैं आज सिर झुका कर के कहना चाहता हूँ, हिंदुस्तान का कोई ऐसा इन्सान नहीं होगा, जिसके दिल में देश के जवानों के प्रति जो अप्रतिम प्यार है, सेना के प्रति गौरव है, सुरक्षा-बलों के प्रति गौरव है। जिस प्रकार से उसकी अभिव्यक्ति हुई है, ये हर देशवासी को ताकत देने वाली है। सुरक्षा-बल के जवानों को तो हम कल्पना नहीं कर सकते, इतना हौसला बुलंद करने वाला, आपका एक संदेश ताकत के रूप में प्रकट हुआ है। स्कूल हो, कॉलेज हो, छात्र हो, गाँव हो, गरीब हो, व्यापारी हो, दुकानदार हो, राजनेता हो, खिलाड़ी हो, सिने-जगत हो - शायद ही कोई बचा होगा, जिसने देश के जवानों के लिए दिया न जलाया हो, देश के जवानों के लिए संदेश न दिया हो। मीडिया ने भी इस दीपोत्सव को सेना के प्रति आभार व्यक्त करने के अवसर में पलट दिया और क्यों न करें, चाहे BSF हो, CRPF हो, Indo-Tibetan Police हो, Assam Rifles हो, जल-सेना हो, थल-सेना हो, नभ-सेना हो, Coast Guard हो, मैं सब के नाम बोल नहीं पाता हूँ, अनगिनत। ये हमारे जवान किस-किस प्रकार से कष्ट झेलते हैं - हम जब दिवाली मना रहे हैं, कोई रेगिस्तान में खड़ा है, कोई हिमालय की चोटियों पर, कोई उद्योग की रक्षा कर रहा है, तो कोई airport की रक्षा कर रहा है। कितनी-कितनी जिम्मेदारियाँ निभा रहे हैं। हम जब उत्सव के मूड में हों, उसी समय उसको याद करें, तो उस याद में भी एक नई ताकत आ जाती है। एक संदेश में सामर्थ्य बढ़ जाता है और देश ने कर के दिखाया। मैं सचमुच में देशवासियों का आभार प्रकट करता हूँ। कड़्यों ने, जिसके पास कला थी, कला के माध्यम से किया। कुछ लोगों ने चित्र बनाए, रंगोली बनाई, cartoon बनाए, जो सरस्वती की जिन पर कृपा थी, उन्होंने कविताएँ बनाई। कड़्यों ने अच्छे नारे प्रकट किये। ऐसा मुझे लग रहा है, कि जैसे मेरा Narendra Modi App या मेरा My Gov, जैसे उसमें भावनाओं का सागर उमड़ पड़ा है - शब्द के रूप में, पिंछी के रूप में, कलम के रूप में, रंग के रूप में, अनगिनत प्रकार की भावनाएँ, मैं कल्पना कर सकता हूँ, मेरे देश के जवानों के लिये कितना गर्व का एक पल है। 'Sandesh to Soldiers' इस Hashtag पर इतनी सारी चीज़ें-इतनी सारी चीज़ें आई हैं, प्रतीकात्मक रूप में।

में श्रीमान अश्विनी कुमार चौहान ने एक कविता भेजी है, उसे पढ़ना पसंद करूँगा।

अश्विनी जी ने लिखा है -

“मैं त्योहार मनाता हूँ, खुश होता हूँ, मुस्कुराता हूँ,
मैं त्योहार मनाता हूँ, खुश होता हूँ, मुस्कुराता हूँ,
ये सब है, क्योंकि, तुम हो, ये तुमको आज बताता हूँ,
मेरी आज़ादी का कारण तुम, खुशियों की सौगात हो,
मैं चैन से सोता हूँ, क्योंकि,
मैं चैन से सोता हूँ, क्योंकि तुम सरहद पर तैनात हो,
शीश झुकाएँ पर्वत अम्बर और भारत का चमन तुम्हें, शीश झुकाएँ पर्वत अम्बर और भारत का चमन तुम्हें,
उसी तरह सेनानी मेरा भी है शत-शत नमन तुम्हें, उसी तरह सेनानी मेरा भी है शत-शत नमन तुम्हें ॥ ”

मेरे प्यारे देशवासियों, जिसका मायका भी सेना के जवानों से भरा हुआ है और जिसका ससुराल भी सेना के जवानों से भरा हुआ है, ऐसी एक बहन शिवानी ने मुझे एक टेलीफोन message दिया। आइए, हम सुनते हैं, फ़ौजी परिवार क्या कहता है:

“नमस्कार प्रधानमंत्री जी, मैं शिवानी मोहन बोल रही हूँ। इस दीपावली पर जो ‘Sandesh to Soldiers’ अभियान शुरू किया गया है, उससे हमारे फ़ौजी भाइयों को बहुत ही प्रोत्साहन मिल रहा है। मैं एक Army Family से हूँ। मेरे पति भी Army ऑफिसर हैं। मेरे Father और Father-in-law, दोनों Army Officers रह चुके हैं। तो हमारी तो पूरी family soldiers से भरी हुई है और सीमा पर हमारे कई ऐसे Officers हैं, जिनको इतने अच्छे संदेश मिल रहे हैं और बहुत प्रोत्साहन मिल रहा है Army Circle में सभी को। और मैं कहना चाहूँगी कि Army Officers और Soldiers के साथ उनके परिवार, उनकी पत्नियाँ भी काफ़ी sacrifices करती हैं। तो एक तरह से पूरी Army Community को बहुत अच्छा संदेश मिल रहा है और मैं आपको भी Happy Diwali कहना चाहूँगी। Thank You .”

मेरे प्यारे देशवासियों, ये बात सही है कि सेना के जवान सिर्फ़ सीमा पर नहीं, जीवन के हर मोर्चे पर खड़े हुए पाए जाते हैं। प्राकृतिक आपदा हो, कभी क़ानूनी व्यवस्था के संकट हों, कभी दुश्मनों से भिड़ना हो, कभी ग़लत राह पर चल पड़े नौजवानों को वापिस लाने के लिये साहस दिखाना हो - हमारे जवान ज़िदगी के हर मोड़ पर राष्ट्र भावना से प्रेरित हो करके काम करते रहते हैं।

एक घटना मेरे ध्यान में लाई गई - मैं भी आपको बताना चाहता हूँ। अब मैं इसलिए बताना चाहता हूँ कि सफलता के मूल में कैसी-कैसी बातें एक बहुत बड़ी ताक़त बन जाती हैं। आप ने सुना होगा, हिमाचल प्रदेश खुले में शौच से मुक्त हुआ, Open Defecation Free हुआ। पहले सिक्किम प्रान्त हुआ था, अब हिमाचल भी हुआ, 1 नवम्बर को केरल भी होने जा रहा है। लेकिन ये सफलता क्यों होती है ? कारण मैं बताता हूँ, देखिए, सुरक्षाबलों में हमारा एक ITBP का जवान, श्री विकास ठाकुर - वो मूलतः हिमाचल के सिरमौर ज़िले के एक छोटे से गाँव से हैं। उनके गाँव का नाम है बंधाना। ये हिमाचल के सिरमौर ज़िले से हैं। अब ये हमारे ITBP के जवान अपनी इयूटी पर से छुट्टियों में गाँव गए थे। तो गाँव में वो उस समय शायद कहीं ग्राम-सभा होने वाली थी, तो वहाँ पहुँच गए और गाँव की सभा में चर्चा हो रही थी, शौचालय बनाने की और पाया गया कि कुछ परिवार पैसों के अभाव में शौचालय नहीं बना पा रहे हैं। ये विकास ठाकुर देशभक्ति से भरा हुआ एक हमारा ITBP का जवान, उसको लगा - नहीं-नहीं, ये कलंक मिटाना चाहिये। और उसकी देशभक्ति देखिए, सिर्फ़ दुश्मनों पर गोलियाँ चलाने के लिये वो देश की सेवा करता है, ऐसा नहीं है। उसने फटाक से अपनी Cheque Book से सत्तावन हज़ार रुपया निकाला और उसने गाँव के पंचायत प्रधान को दे दिया कि जिन 57 घरों में शौचालय नहीं बना है, मेरी तरफ से हर परिवार को एक-एक हज़ार रुपया दे दीजिए, 57 शौचालय बना दीजिए और अपने बंधाना गाँव को Open Defecation Free बना दीजिए। विकास ठाकुर ने करके दिखाया। 57 परिवारों को एक-एक हज़ार रुपया अपनी जेब से दे करके स्वच्छता के अभियान को एक ताक़त दी। और तभी तो हिमाचल प्रदेश Open Defecation Free करने की ताक़त आई। वैसा ही केरल में, मैं सचमुच में, नौजवानों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। मेरे ध्यान में आया, केरल के दूर-सुदूर जंगलों में, जहाँ कोई रास्ता भी नहीं है, पूरे दिन भर पैदल चलने के बाद मुश्किल से उस गाँव पहुँचा जा सकता है, ऐसी एक जनजातीय पंचायत इडमालाकुडी, पहुँचना भी बड़ा मुश्किल है। लोग कभी जाते नहीं। उसके नज़दीक में, शहरी इलाके में, Engineering के छात्रों के ध्यान में आया कि इस गाँव में शौचालय बनाने हैं। NCC के cadet, NSS के लोग, Engineering के छात्र, सबने मिलकर के तय किया कि हम शौचालय बनाएँगे। शौचालय बनाने के लिए जो सामान ले जाना था, ईंटें हो, सीमेंट हो, सारे सामान इन नौजवानों ने अपने कंधे पर उठा करके, पूरा दिन भर पैदल चल के उन जंगलों में गए। खुद ने परिश्रम करके उस गाँव में शौचालय बनाए और इन नौजवानों ने दूर-सुदूर जंगलों में एक छोटे से गाँव को Open Defecation Free किया। उसी का तो कारण है कि केरल Open Defecation Free हो रहा है। गुजरात

ने भी, सभी नगरपालिका-महानगरपालिकायें, शायद 150 से ज्यादा में, Open Defecation Free घोषित किया है। 10 जिले भी Open Defecation Free किए गए हैं। हरियाणा से भी खुशखबरी आई है, हरियाणा भी 1 नवम्बर को उनकी अपनी Golden Jubilee मनाने जा रहा है और उनका फ़ैसला है कि वो कुछ ही महीनों में पूरे राज्य को Open Defecation Free कर देंगे। अभी उन्होंने सात जिले पूरे कर दिए हैं। सभी राज्यों में बहुत तेज़ गति से काम चल रहा है। मैंने कुछ का उल्लेख किया है। मैं इन सभी राज्यों के नागरिकों को इस महान कार्य के अन्दर जुड़ने के लिये देश से गन्दगी रूपी अन्धकार मिटाने के काम में योगदान देने के लिये हृदय से बहुत-बहुत अभिनन्दन देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, सरकार में योजनायें तो बहुत होती हैं। और पहली योजना के बाद, उसी के अनुरूप दूसरी अच्छी योजना आए, तो पहली योजना छोड़नी होती है। लेकिन आम तौर पर इन चीज़ों पर कोई ध्यान नहीं देता है। पुरानी वाली योजना भी चलती रहती है, नयी वाली भी योजना चलती रहती है और आने वाली योजना का इंतज़ार भी होता रहता है, ये चलता रहता है। हमारे देश में जिन घरों में गैस का चूल्हा हो, जिन घरों में बिजली हो, ऐसे घरों को Kerosene की ज़रूरत नहीं है। लेकिन सरकार में कौन पूछता है, Kerosene भी जा रहा है, गैस भी जा रहा है, बिजली भी जा रही है और फिर बिचौलियों को तो मलाई खाने का मौका मिल जाता है। मैं हरियाणा प्रदेश का अभिनन्दन करना चाहता हूँ कि उन्होंने एक बीड़ा उठाया है। हरियाणा प्रदेश को Kerosene मुक्त करने का। जिन-जिन परिवारों में गैस का चूल्हा है, जिन-जिन परिवारों में बिजली है, 'आधार' नंबर से उन्होंने verify किया और अब तक मैंने सुना है कि सात या आठ जिले Kerosene free कर दिए, Kerosene मुक्त कर दिए। जिस प्रकार से उन्होंने इस काम को हाथ में लिया है, पूरा राज्य, मुझे विश्वास है कि बहुत ही जल्द Kerosene free हो जायेगा। कितना बड़ा बदलाव आयेगा, चोरी भी रुकेगी, पर्यावरण का भी लाभ होगा, हमारी foreign exchange की भी बचत होगी और लोगों की सुविधा भी बढ़ेगी। हाँ, तकलीफ़ होगी, तो बिचौलियों को होगी, बेईमानों को होगी।

मेरे प्यारे देशवासियों, महात्मा गाँधी हम सब के लिए हमेशा-हमेशा मार्गदर्शक हैं। उनकी हर बात आज भी देश कहाँ जाना चाहिए, कैसे जाना चाहिए, इसके लिये मानक तय करती है। गाँधी जी कहते थे, आप जब भी कोई योजना बनाएँ, तो आप सबसे पहले उस ग़रीब और कमज़ोर का चेहरा याद कीजिए और फिर तय कीजिए कि आप जो करने जा रहे हैं, उससे उस ग़रीब को कोई लाभ होगा कि नहीं होगा। कहीं उसका नुक़सान तो नहीं हो जाएगा। इस मानक के आधार पर आप फ़ैसले कीजिए। समय की माँग है कि हमें अब, देश के ग़रीबों का जो aspirations जगा है, उसको address करना ही पड़ेगा। मुसीबतों से मुक्ति मिले, उसके लिए हमें एक-के-बाद एक कदम उठाने ही पड़ेंगे। हमारी पुरानी सोच कुछ भी क्यों न हो, लेकिन समाज को बेटे-बेटी के भेद से मुक्त करना ही होगा। अब स्कूलों में बच्चियों के लिये भी toilet हैं, बच्चों के लिये भी toilet हैं। हमारी बेटियों के लिये भेदभाव-मुक्त भारत की अनुभूति का ये अवसर है।

सरकार की तरफ़ से टीकाकरण तो होता ही है, लेकिन फिर भी लाखों बच्चे टीकाकरण से छूट जाते हैं। बीमारी के शिकार हो जाते हैं। 'मिशन इन्द्रधनुष' टीकाकरण का एक ऐसा अभियान, जो छूट गए हुए बच्चों को भी समेटने के लिए लगा है, जो बच्चों को गंभीर रोगों से मुक्ति के लिए ताक़त देता है। 21वीं सदी हो और गाँव में अंधेरा हो, अब नहीं चल सकता और इसलिये गाँवों को अंधकार से मुक्त करने के लिये, गाँव बिजली पहुँचाने का बड़ा अभियान सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है। समय सीमा में आगे बढ़ रहा है। आज़ादी के इतने सालों के बाद, ग़रीब माँ, लकड़ी के चूल्हे पर खाना पका करके दिन में 400 सिगरेट का धुआँ अपने शरीर में ले जाए, उसके स्वास्थ्य का क्या होगा। कोशिश है 5 करोड़ परिवारों को धुएँ से मुक्त ज़िंदगी देने के लिये। सफलता की ओर आगे बढ़ रहे हैं।

छोटा व्यापारी, छोटा कारोबारी, सब्जी बेचनेवाला, दूध बेचनेवाला, नाई की दुकान चलानेवाला, साहूकारों के ब्याज के चक्कर में ऐसा फँसा रहता था - ऐसा फँसा रहता था। मुद्रा योजना, stand up योजना, जन-धन account, ये ब्याजखोरों से मुक्ति का एक सफल अभियान है। 'आधार' के द्वारा बैंकों में सीधे पैसे जमा कराना। हक़दार को, लाभार्थी को सीधे पैसे मिलें। सामान्य मानव के ज़िंदगी में ये बिचौलियों से मुक्ति का अवसर है। एक ऐसा अभियान चलाना है, जिसमें सिर्फ़ सुधार और परिवर्तन नहीं, समस्या से मुक्ति तक का मार्ग पक्का करना है और हो रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियों, कल 31 अक्टूबर, इस देश के महापुरुष - भारत की एकता को ही जिन्होंने अपने जीवन का मंत्र बनाया, जी के दिखाया - ऐसे सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म-जयंती का पर्व है। 31 अक्टूबर, एक तरफ़ सरदार साहब की जयंती का पर्व है, देश की एकता का जीता-जागता महापुरुष, तो दूसरी तरफ़, श्रीमती गाँधी की पुण्यतिथि भी है। महापुरुषों को पुण्य स्मरण तो हम करते ही हैं, करना भी चाहिए। लेकिन पंजाब के एक सज्जन का फ़ोन, उनकी पीड़ा, मुझे भी छू गई: -

"प्रधानमंत्री जी, नमस्कार, सर, मैं जसदीप बोल रहा हूँ पंजाब से। सर, जैसा कि आप जानते हैं कि 31 तारीख को सरदार पटेल जी का जनमदिन है। सरदार पटेल ओ शख़्सियत हैं, जिनाने अपनी सारी ज़िंदगी देश नु जोड़न दी बिता दिती and

ओ उस मुहिम विच, I think, सफल भी होये, he brought everybody together. और we call it irony or we call it, एक बुरी किस्मत कहें देश की कि उसी दिन इंदिरा गाँधी जी की हत्या भी हो गई। and जैसा हम सबको पता है कि उनकी हत्या के बाद देश में कैसे events हुए। सर, मैं ये कहना चाहता था कि हम ऐसे दुर्भाग्यपूर्ण जो events होते हैं, जो घटनायें होती हैं, इनको कैसे रोक सकते हैं। ”

मेरे प्यारे देशवासियो, ये पीड़ा एक व्यक्ति की नहीं है। एक सरदार, सरदार वल्लभ भाई पटेल, इतिहास इस बात का गवाह है कि चाणक्य के बाद, देश को एक करने का भगीरथ काम, सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया। आज़ाद हिंदुस्तान को, एक इंडे के नीचे लाने का सफल प्रयास, इतना बड़ा भगीरथ काम जिस महापुरुष ने किया, उस महापुरुष को शत-शत नमन। लेकिन यह भी तो पीड़ा है कि सरदार साहब एकता के लिए जिए, एकता के लिए जूझते रहे; एकता की उनकी प्राथमिकता के कारण, कड़्यों की नाराज़गी के शिकार भी रहे, लेकिन एकता के मार्ग को कभी छोड़ा नहीं; लेकिन, उसी सरदार की जन्म-जयंती पर हज़ारों सरदारों को, हज़ारों सरदारों के परिवारों को श्रीमती गाँधी की हत्या के बाद मौत के घाट उतार दिया गया। एकता के लिये जीवन-भर जीने वाले उस महापुरुष के जन्मदिन पर ही और सरदार के ही जन्मदिन पर सरदारों के साथ जुलूम, इतिहास का एक पन्ना, हम सब को पीड़ा देता है।

लेकिन, इन संकटों के बीच मैं भी, एकता के मंत्र को ले करके आगे बढ़ना है। विविधता में एकता यही देश की ताकत है। भाषायें अनेक हों, जातियाँ अनेक हों, पहनावे अनेक हों, खान-पान अनेक हों, लेकिन अनेकता में एकता, ये भारत की ताकत है, भारत की विशेषता है। हर पीढ़ी का एक दायित्व है। हर सरकारों की ज़िम्मेवारी है कि हम देश के हर कोने में एकता के अवसर खोजें, एकता के तत्व को उभारें। बिखराव वाली सोच, बिखराव वाली प्रवृत्ति से हम भी बचें, देश को भी बचाएँ। सरदार साहब ने हमें एक भारत दिया, हम सब का दायित्व है श्रेष्ठ भारत बनाना। एकता का मूल-मंत्र ही श्रेष्ठ भारत की मज़बूत नींव बनाता है।

सरदार साहब की जीवन यात्रा का प्रारम्भ किसानों के संघर्ष से हुआ था। किसान के बेटे थे। आज़ादी के आंदोलन को किसानों तक पहुँचाने में सरदार साहब की बहुत बड़ी अहम भूमिका रही। आज़ादी के आंदोलन को गाँव में ताकत का रूप बनाना सरदार साहब का सफल प्रयास था। उनके संगठन शक्ति और कौशल का परिणाम था। लेकिन सरदार साहब सिर्फ संघर्ष के व्यक्ति थे, ऐसा नहीं, वह संरचना के भी व्यक्ति थे। आज कभी-कभी हम बहुत लोग 'अमूल' का नाम सुनते हैं। 'अमूल' के हर product से आज हिंदुस्तान और हिंदुस्तान के बाहर भी लोग परिचित हैं। लेकिन बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि सरदार साहब की दिव्यदृष्टि थी कि उन्होंने co-operative milk producers के union की कल्पना की थी। और खेड़ा district, उस समय केरा district बोला जाता था, और 1942 में इस विचार को उन्होंने बल दिया था, वो साकार रूप, आज का 'अमूल' किसानों के सुख-समृद्धि की संरचना सरदार साहब ने कैसे की थी, उसका एक जीता-जागता उदाहरण हमारे सामने है। मैं सरदार साहब को आदरपूर्वक अंजलि देता हूँ और इस एकता दिवस पर 31 अक्टूबर को हम जहाँ हों, सरदार साहब को स्मरण करें, एकता का संकल्प करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, इन दीवाली की श्रृंखला में कार्तिक पूर्णिमा - ये प्रकाश उत्सव का भी पर्व है। गुरु नानक देव, उनकी शिक्षा-दीक्षा पूरी मानव-जाति के लिये, न सिर्फ हिंदुस्तान के लिये, पूरी मानव-जाति के लिए, आज भी दिशादर्शक है। सेवा, सच्चाई और 'सरबत दा भला', यही तो गुरु नानक देव का संदेश था। शांति, एकता और सद्भावना यही तो मूल-मंत्र था। भेदभाव हो, अंधविश्वास हो, कुरीतियाँ हों, उससे समाज को मुक्ति दिलाने का वो अभियान ही तो था गुरु नानक देव की हर बात में। जब हमारे यहाँ स्पृश्य-अस्पृश्य, जाति-प्रथा, ऊँच-नीच, इसकी विकृति की चरम सीमा पर थी, तब गुरु नानक देव ने भाई लालो को अपना सहयोगी चुना। आइए, हम भी, गुरु नानक देव ने जो हमें ज्ञान का प्रकाश दिया है, जो हमें भेदभाव छोड़ने के लिए प्रेरणा देता है, भेदभाव के खिलाफ कुछ करने के लिए आदेश करता है, 'सबका साथ सबका विकास' इसी मंत्र को ले करके अगर आगे चलना है, तो गुरु नानक देव से बढ़िया हमारा मार्गदर्शक कौन हो सकता है। मैं गुरु नानक देव को भी, इस 'प्रकाश-उत्सव' आ रहा है, तब अन्तर्मन से प्रणाम करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, फिर एक बार, देश के जवानों के नाम ये दीवाली, इस दीवाली पर आपको भी बहुत-बहुत शुभकामनायें। आपके सपने, आपके संकल्प हर प्रकार से सफल हों। आपका जीवन सुख-चैन की ज़िंदगी वाला बने, यही आप सबको शुभकामनायें देता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/ हिमांशु सिंह

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

27-नवंबर-2016 11:44 IST

27 नवंबर, 2016 को आकाशवाणी पर प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियों, नमस्कार। पिछले महीने हम सब दिवाली का आनंद ले रहे थे। हर वर्ष की तरह इस बार दिवाली के मौके पर, मैं फिर एक बार जवानों के साथ दिवाली मनाने के लिये, चीन की सीमा पर, सरहद पर गया था। ITBP के जवान, सेना के जवान - उन सबके साथ हिमालय की उंचाइयों में दिवाली मनाई। मैं हर बार जाता हूँ, लेकिन इस दिवाली का अनुभव कुछ और था। देश के सवा-सौ करोड़ देशवासियों ने, जिस अनूठे अंदाज़ में, यह दिवाली सेना के जवानों को समर्पित की, सुरक्षा बलों को समर्पित की, इसका असर वहाँ हर जवानों के चेहरे पर अभिव्यक्त होता था। वो भावनाओं से भरे-भरे दिखते थे और इतना ही नहीं, देशवासियों ने जो शुभकामनायें-सन्देश भेजे, अपनी खुशियों में देश के सुरक्षा बलों को शामिल किया, एक अद्भुत response था। और लोगों ने सिर्फ सन्देश भेजे, ऐसा नहीं, मन से जुड़ गए थे; किसी ने कविता लिखी, किसी ने चित्र बनाए, किसी ने कार्टून बनाए, किसी ने वीडियो बनाए, यानि न जाने हर घर सेनानियों की जैसे चौकी बन गया था। और जब भी ये चिट्ठियाँ मैं देखता था, तो मुझे भी बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि कितनी कल्पकता है, कितनी भावनायें भरी हैं और उसी में से MyGov को विचार आया कि कुछ चुनिन्दा चीज़ें निकाल करके उसकी एक Coffee Table Book बनाई जाए। काम चल रहा है, आप सबके योगदान से, देश के सेना के जवानों की भावनाओं को आप सबकी कल्पकता से, देश के सुरक्षा बलों के प्रति आपका जो भाव-विश्व है, वह इस ग्रन्थ में संकलित होगा।

सेना के एक जवान ने मुझे लिखा - प्रधानमंत्री जी, हम सैनिकों के लिये होली, दिवाली हर त्योहार सरहद पर ही होता है, हर वक्त देश की हिफाज़त में डूबे रहते हैं। हाँ, फिर भी त्योहारों के समय घर की याद आ ही जाती है। लेकिन सच कहूँ, इस बार ऐसा नहीं लगा। ऐसा कतई feel नहीं हुआ कि त्योहार है और मैं घर नहीं हूँ। ऐसा महसूस हुआ मानो हम भी, सवा-सौ करोड़ भारतवासियों के साथ दिवाली मना रहे हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों, जो अहसास इस दिवाली, इस माहौल में जो अनुभूति, हमारे देश के सुरक्षा बलों के बीच, जवानों के बीच जगा है, क्या ये सिर्फ कुछ मौकों पर ही सीमित रहना चाहिये? मेरी आपसे appeal है कि हम, एक समाज के रूप में, राष्ट्र के रूप में, अपना स्वभाव बनाएँ, हमारी प्रकृति बनाएँ। कोई भी उत्सव हो, त्योहार हो, खुशी का माहौल हो, हमारे देश के सेना के जवानों को हम किसी-न-किसी रूप में ज़रूर याद करें। जब सारा राष्ट्र सेना के साथ खड़ा होता है, तो सेना की ताकत 125 करोड़ गुना बढ़ जाती है।

कुछ समय पहले मुझे जम्मू-कश्मीर से, वहाँ के गाँव के सारे प्रधान मिलने आये थे। Jammu-Kashmir Panchayat Conference के ये लोग थे। कश्मीर घाटी से अलग-अलग गाँवों से आए थे। करीब 40-50 प्रधान थे। काफी देर तक उनसे मुझे बातें करने का अवसर मिला। वे अपने गाँव के विकास की कुछ बातें लेकर के आए थे, कुछ माँगें लेकर के आए थे, लेकिन जब बात का दौर चल पड़ा, तो स्वाभाविक था, घाटी के हालात, कानून व्यवस्था, बच्चों का भविष्य, ये सारी बातें निकलना बड़ा स्वाभाविक था। और इतने प्यार से, इतने खुलेपन से, गाँव के इन प्रधानों ने बातें की, हर चीज़ मेरे दिल को छूने वाली थी। बातों-बातों में, कश्मीर में जो स्कूलें जलाई जाती थीं, उसकी चर्चा भी हुई और मैंने देखा कि जितना दुःख हम देशवासियों को होता है, इन प्रधानों को भी इतनी ही पीड़ा थी और वो भी मानते थे कि स्कूल नहीं, बच्चों का भविष्य जलाया गया है। मैंने उनसे आग्रह किया था कि आप जाकर के इन बच्चों के भविष्य पर अपना ध्यान केन्द्रित करें। आज मुझे खुशी हो रही है कि कश्मीर घाटी से आए हुए इन सभी प्रधानों ने मुझे जो वचन दिया था, उसको भली-भाँति निभाया; गाँव में जाकर के सब दूर लोगों को जागृत किया। अभी कुछ दिन पहले जब Board की exam हुई, तो कश्मीर के बेटे और बेटियों ने करीब 95%, पचानबे फ़ीसदी कश्मीर के छात्र-छात्राओं ने Board की परीक्षा में हिस्सा लिया। Board की परीक्षाओं में इतनी बड़ी तादाद में छात्रों का सम्मिलित होना, इस बात की ओर इशारा करता है कि जम्मू-कश्मीर के हमारे बच्चे उज्ज्वल भविष्य के लिये, शिक्षा के माध्यम से - विकास की नई उँचाइयों को पाने के लिये कृतसंकल्प हैं। उनके इस उत्साह के लिये, मैं छात्रों को तो अभिनन्दन करता हूँ, लेकिन उनके माता-पिता को, उनके परिजनों को, उनके शिक्षकों को और सभी ग्राम प्रधानों को भी हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

प्यारे भाइयों और बहनों, इस बार जब मैंने 'मन की बात' के लिये लोगों के सुझाव मांगे, तो मैं कह सकता हूँ कि एकतरफ़ा ही सबके सुझाव आए। सब कहते थे कि 500/- और 1000/- वाले नोटों पर और विस्तार से बातें करें। वैसे 8 नवम्बर, रात 8 बजे राष्ट्र के नाम संबोधन करते हुए, देश में सुधार लाने के एक महाभियान का आरम्भ करने की मैंने चर्चा की थी।

जिस समय मैंने ये निर्णय किया था, आपके सामने प्रस्तुत रखा था, तब भी मैंने सबके सामने कहा था कि निर्णय सामान्य नहीं है, कठिनाइयों से भरा हुआ है। लेकिन निर्णय जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही उस निर्णय को लागू करना है। और मुझे ये भी अंदाज़ था कि हमारे सामान्य जीवन में अनेक प्रकार की नयी-नयी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। और तब भी मैंने कहा था कि निर्णय इतना बड़ा है, इसके प्रभाव में से बाहर निकलने में 50 दिन तो लग ही जाएंगे। और तब जाकर के normal अवस्था की ओर हम कदम बढ़ा पाएंगे। 70 साल से जिस बीमारियों को हम झेल रहे हैं उस बीमारियों से मुक्ति का अभियान सरल नहीं हो सकता है। आपकी कठिनाइयों को मैं भली-भांति समझ सकता हूँ। लेकिन जब मैं आपका समर्थन देखता हूँ, आपका सहयोग देखता हूँ, आपको भ्रमित करने के लिये ढेर सारे प्रयास चल रहे हैं, उसके बावजूद भी, कभी-कभी मन को विचलित करने वाली घटनायें सामने आते हुए भी, आपने सच्चाई के इस मार्ग को भली-भांति समझा है, देशहित की इस बात को भली-भांति आपने स्वीकार किया है।

पाँच सौ और हज़ार के नोट और इतना बड़ा देश, इतनी करेंसियों की भरमार, अरबों-खरबों नोटें और ये निर्णय - पूरा विश्व बहुत बारीकी से देख रहा है, हर कोई अर्थशास्त्री इसका बहुत analysis कर रहा है, मूल्यांकन कर रहा है। पूरा विश्व इस बात को देख रहा है कि हिन्दुस्तान के सवा-सौ करोड़ देशवासी कठिनाइयाँ झेल करके भी सफलता प्राप्त करेंगे क्या! विश्व के मन में शायद प्रश्न-चिन्ह हो सकता है! भारत को भारत के सवा-सौ करोड़ देशवासियों के प्रति, सिर्फ श्रद्धा ही श्रद्धा है, विश्वास ही विश्वास है कि सवा-सौ करोड़ देशवासी संकल्प पूर्ण करके ही रहेंगे। और हमारा देश, सोने की तरह हर प्रकार से तप करके, निखर करके निकलेगा और उसका कारण इस देश का नागरिक है, उसका कारण आप हैं, इस सफलता का मार्ग भी आपके कारण ही संभव हुआ है।

पूरे देश में केंद्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय स्वराज संस्थाओं की सारी इकाइयाँ, एक लाख तीस हज़ार bank branch, लाखों बैंक कर्मचारी, डेढ़ लाख से ज्यादा पोस्ट ऑफिस, एक लाख से ज्यादा बैंक-मित्र - दिन-रात इस काम में जुटे हुए हैं, समर्पित भाव से जुटे हुए हैं। भाँति-भाँति के तनाव के बीच, ये सभी लोग बहुत ही शांत-चित रूप से, इसे देश-सेवा का एक यज्ञ मान करके, एक महान परिवर्तन का प्रयास मान करके कार्यरत हैं। सुबह शुरू करते हैं, रात कब पूरा होगा, पता तक नहीं रहता है, लेकिन सब कर रहे हैं। और उसी का कारण है कि भारत इसमें सफल होगा, ये स्पष्ट दिखाई दे रहा है। और मैंने देखा है कि इतनी कठिनाइयों के बीच बैंक के, पोस्ट ऑफिस के सभी लोग काम कर रहे हैं। और जब मानवता के मुद्दे की बात आ जाए, तो वो दो कदम आगे दिखाई देते हैं। किसी ने मुझे कहा कि खंडवा में एक बुजुर्ग इंसान का accident हो गया। अचानक पैसों की ज़रूरत पड़ गई। वहाँ स्थानीय बैंक के कर्मचारी के ध्यान में आया और मुझे ये जान करके खुशी हुई कि खुद जाकर के उनके घर, उस बुजुर्ग को उन्होंने पैसे पहुँचाए, ताकि इलाज़ में मदद हो जाए। ऐसे तो अनगिनत किस्से हर दिन टी.वी. में, मीडिया में, अखबारों में, बातचीत में सामने आते हैं। इस महायज्ञ के अन्दर परिश्रम करने वाले, पुरुषार्थ करने वाले इन सभी साथियों का भी मैं हृदय से धन्यवाद करता हूँ। शक्ति की पहचान तो तब होती है, जब कसौटी से पार उतरते हैं। मुझे बराबर याद है, जब प्रधानमंत्री के द्वारा जन-धन योजना का अभियान चल रहा था और बैंक के कर्मचारियों ने जिस प्रकार से उसको अपने कंधे पर उठाया था और जो काम 70 साल में नहीं हुआ था, उन्होंने करके दिखाया था। उनके सामर्थ्य का परिचय हुआ। आज फिर एक बार, उस चुनौती को उन्होंने लिया है और मुझे विश्वास है कि सवा-सौ करोड़ देशवासियों का संकल्प, सबका सामूहिक पुरुषार्थ, इस राष्ट्र को एक नई ताकत बना करके प्रशस्त करेगा।

लेकिन बुराइयाँ इतनी फैली हुई हैं कि आज भी कुछ लोगों की बुराइयों की आदत जाती नहीं है। अभी भी कुछ लोगों को लगता है कि ये भ्रष्टाचार के पैसे, ये काले धन, ये बेहिसाबी पैसे, ये बेनामी पैसे, कोई-न-कोई रास्ता खोज करके व्यवस्था में फिर से ला दूँ। वो अपने पैसे बचाने के फ़िराक में गैर-कानूनी रास्ते ढूँढ़ रहे हैं। दुःख की बात ये है कि इसमें भी उन्होंने गरीबों का उपयोग करने का रास्ता चुनने का पसंद किया है। गरीबों को भ्रमित कर, लालच या प्रलोभन की बातें करके, उनके खातों में पैसे डाल करके या उनसे कोई काम करवा करके, पैसे बचाने की कुछ लोग कोशिश कर रहे हैं। मैं ऐसे लोगों से आज कहना चाहता हूँ - सुधरना, न सुधरना आपकी मर्जी, कानून का पालन करना, न करना आपकी मर्जी, वो कानून देखेगा क्या करना? लेकिन, मेहरबानी करके आप गरीबों की ज़िंदगी के साथ मत खेलिए। आप ऐसा कुछ न करें कि record

पर गरीब का नाम आ जाए और बाद में जब जाँच हो, तब मेरा प्यारा गरीब आपके पाप के कारण मुसीबत में फँस जाए। और बेनामी संपत्ति का इतना कठोर कानून बना है, जो इसमें लागू हो रहा है, कितनी कठिनाई आएगी। और सरकार नहीं चाहती है कि हमारे देशवासियों को कोई कठिनाई आए।

मध्य प्रदेश के कोई श्रीमान आशीष ने इस पाँच सौ और हजार के माध्यम से भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ जो लड़ाई छेड़ी गयी है, उन्होंने मुझे टेलीफोन किया है, उसे सराहा है: -

“सर नमस्ते, मेरा नाम आशीष पारे है। मैं ग्राम तिराली, तहसील तिराली, ज़िला हरदा, मध्य प्रदेश का एक आम नागरिक हूँ। आप के द्वारा जो मुद्रा हजार-पाँच सौ के नोट बंद किए गए हैं, यह बहुत ही सराहनीय है। मैं चाहता हूँ कि ‘मन की बात’ में कई उदाहरण लोगों को बताइए कि लोगों ने असुविधा सहन करने के बावजूद भी उन्होंने राष्ट्र उन्नति के लिये यह कड़ा कदम के लिए स्वागत किया है, जिससे लोग एक तरह से उत्साहवर्द्धित होंगे और राष्ट्र निर्माण के लिए cashless प्रणाली बहुत आवश्यक है और मैं पूरे देश के साथ हूँ और मैं बहुत खुश हूँ कि आपने हजार-पाँच सौ के नोट बंद करा दिए।”

वैसा ही मुझे एक फ़ोन कर्नाटक के श्रीमान येलप्पा वेलान्कर जी की तरफ से आया है: -

‘मोदी जी नमस्ते, मैं कर्नाटक का कोप्पल डिस्ट्रिक्ट का इस गाँव से येलप्पा वेलान्कर बात कर रहा हूँ। आपको मन से मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ, क्योंकि आपने कहा था कि अच्छे दिन आएँगे, लेकिन किसी ने भी नहीं सोचा कि ऐसा बड़ा कदम आप उठाएँगे। पाँच सौ का और हजार का नोट, ये सब देखकर के काला धन और भ्रष्टाचारियों को सबक सिखाया। हर एक भारत के नागरिक को इससे अच्छे दिन कभी नहीं आएँगे। इसी के लिए मैं आपको मनपूर्ण धन्यवाद करना चाहता हूँ।’

कुछ बातें मीडिया के माध्यम से, लोगों के माध्यम से, सरकारी सूत्रों के माध्यम से जानने को मिलती हैं, तो काम करने का उत्साह भी बहुत बढ़ जाता है। इतना आनंद होता है, इतना गर्व होता है कि मेरे देश में सामान्य मानव का क्या अद्भुत सामर्थ्य है। महाराष्ट्र के अकोला में National Highway NH-6 वहाँ कोई एक restaurant है। उन्होंने एक बहुत बड़ा board लगाया है कि अगर आप की जेब में पुराने नोट हैं और आप खाना खाना चाहते हैं, तो आप पैसों की चिंता न करें, यहाँ से भूखा मत जाइए, खाना खा के ही जाइए और फिर कभी इस रास्ते से गुजरने का आ जाए आपको मौका, तो ज़रूर पैसे दे कर के जाना। और लोग वहाँ जाते हैं, खाना खाते हैं और 2-4-6 दिन के बाद जब वहाँ से फिर से गुजरते हैं, तो फिर से पैसे भी लौटा देते हैं। ये है मेरे देश की ताकत, जिसमें सेवा-भाव, त्याग-भाव भी है और प्रामाणिकता भी है।

मैं चुनाव में चाय पर चर्चा करता था और सारे विश्व में ये बात पहुँच गई थी। दुनिया के कई देश के लोग चाय पर चर्चा शब्द भी बोलना सीख गए थे। लेकिन मुझे पता नहीं कि चाय पर चर्चा में, शादी भी होती है। मुझे पता चला कि 17 नवम्बर को सूरत में, एक ऐसी शादी हुई, जो शादी चाय पर चर्चा के साथ हुई। गुजरात में सूरत में एक बेटी ने अपने यहाँ शादी में जो लोग आए, उनको सिर्फ चाय पिलाई और कोई जलसा नहीं किया, न कोई खाने का कार्यक्रम, कुछ नहीं - क्योंकि नोटबंदी के कारण कुछ कठिनाई आई थी पैसों की। बारातियों ने भी उसे इतना ही सम्मान माना। सूरत के भरत मारु और दक्षा परमार - उन्होंने अपनी शादी के माध्यम से भ्रष्टाचार के खिलाफ, काले धन के खिलाफ, ये जो लड़ाई चल रही है, उसमें जो योगदान किया है, ये अपने आप में प्रेरक है। नवपरिणीत भरत और दक्षा को मैं बहुत-बहुत आशीर्वाद भी देता हूँ और शादी के मौके को भी इस महान यज्ञ में परिवर्तित करके एक नये अवसर में पलट देने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। और जब ऐसे संकट आते हैं, लोग रास्ते भी बढ़िया खोज लेते हैं।

मैंने एक बार टीवी न्यूज़ में देखा, रात देर से आया था, तो देख रहा था। असम में धेकियाजुली करके एक छोटा सा गाँव है। Tea-worker रहते हैं और Tea-worker को साप्ताहिक रूप से पैसे मिलते हैं। अब 2000 रुपये का नोट मिला, तो उन्होंने क्या किया? चार अड़ोस-पड़ोस की महिलायें इकट्ठी हो गयी और चारों ने साथ जाकर के खरीदी की और 2000 रुपये का नोट payment किया, तो उनको छोटी currency की जरूरत ही नहीं पड़ी, क्योंकि चारों ने मिलकर खरीदा और तय किया कि

अगले हफ्ते मिलेंगे, तब उसका हिसाब हम कर लेंगे बैठ करके। लोग अपने-आप रास्ते खोज रहे हैं। और इसका बदलाव भी देखिए! सरकार के पास एक message आया, असम के Tea garden के लोग कह रहे हैं कि हमारे यहाँ ATM लगाओ। देखिए, किस प्रकार से गाँव के जीवन में भी बदलाव आ रहा है। इस अभियान का कुछ लोगों को तत्काल लाभ मिल गया है। देश को तो लाभ आने वाले दिनों में मिलेगा, लेकिन कुछ लोगों को तो तत्काल लाभ मिल गया है। थोड़ा हिसाब पूछा, क्या हुआ है, तो मैंने छोटे-छोटे जो शहर हैं, वहाँ की थोड़ी जानकारी पाई। करीब 40-50 शहरों की जानकारी जो मुझे मिली कि इस नोट बंद करने के कारण उनके जितने पुराने पैसे बाकी थे, लोग पैसे नहीं देते थे tax के - पानी का tax नहीं, बिजली का नहीं, पैसे देते ही नहीं थे और आप भली-भाँति जानते हैं - गरीब लोग 2 दिन पहले जा कर के पाई-पाई चुकता करने की आदत रखते हैं। ये जो बड़े लोग होते हैं न, जिनकी पहुँच होती है, जिनको पता है कि कभी भी उनको कोई पूछने वाला नहीं है, वो ही पैसे नहीं देते हैं। और इसके लिए काफ़ी बकाया रहता है। हर municipality को tax का मुश्किल से 50% आता है। लेकिन इस बार 8 तारीख के इस निर्णय के कारण सब लोग अपने पुराने नोटें जमा कराने के लिए दौड़ गए। 47 शहरी इकाइयों में पिछले साल इस समय करीब तीन-साढ़े तीन हजार करोड़ रुपये का tax आया था। आपको जान कर के आश्चर्य होगा, आनंद भी होगा - इस एक सप्ताह में उनको 13 हजार करोड़ रुपये जमा हो गया। कहाँ तीन-साढ़े तीन हजार और कहाँ 13 हजार! और वो भी सामने से आकर के। अब उन municipality में 4 गुना ये पैसा आ गया, तो स्वाभाविक है, गरीब बस्तियों में गटर की व्यवस्था होगी, पानी की व्यवस्था होगी, आंगनबाड़ी की व्यवस्था होगी। ऐसे तो कई उदाहरण मिल रहे हैं कि जिसमें इसका सीधा-सीधा लाभ भी नज़र आने लगा है।

भाइयो-बहनो, हमारा गाँव, हमारा किसान ये हमारे देश की अर्थव्यवस्था की एक मज़बूत धुरी हैं। एक तरफ़ अर्थव्यवस्था के इस नये बदलाव के कारण, कठिनाइयों के बीच, हर कोई नागरिक अपने आपको adjust कर रहा है। लेकिन मैं मेरे देश के किसानों का आज विशेष रूप से अभिनंदन करना चाहता हूँ। अभी मैं इस फ़सल की बुआई के आँकड़े ले रहा था। मुझे खुशी हुई, चाहे गेहूँ हो, चाहे दलहन हो, चाहे तिलहन हो; नवम्बर की 20 तारीख तक का मेरे पास हिसाब था, पिछले वर्ष की तुलना में काफ़ी मात्रा में बुआई बढ़ी है। कठिनाइयों के बीच भी, किसान ने रास्ते खोजे हैं। सरकार ने भी कई महत्वपूर्ण निर्णय किए हैं, जिसमें किसानों को और गाँवों को प्राथमिकता दी है। उसके बाद भी कठिनाइयों तो हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि जो किसान हमारी हर कठिनाइयों, प्राकृतिक कठिनाइयों हो, उसको झेलते हुए भी हमेशा डट करके खड़ा रहता है, इस समय भी वो डट करके खड़ा है।

हमारे देश के छोटे व्यापारी, वे रोजगार भी देते हैं, आर्थिक गतिविधि भी बढ़ाते हैं। पिछले बजट में हमने एक महत्वपूर्ण निर्णय किया था कि बड़े-बड़े mall की तरह गाँव के छोटे-छोटे दुकानदार भी अब चौबीसों घंटा अपना व्यापार कर सकते हैं, कोई कानून उनको रोकेंगा नहीं। क्योंकि मेरा मत था, बड़े-बड़े mall को 24 घंटे मिलते हैं, तो गाँव के गरीब दुकानदार को क्यों नहीं मिलना चाहिये? मुद्रा-योजना से उनको loan देने की दिशा में काफ़ी initiative लिए। लाखों-करोड़ों रुपये मुद्रा-योजना से ऐसे छोटे-छोटे लोगों को दिए, क्योंकि ये छोटा कारोबार, करोड़ों की तादाद में लोग करते हैं और अरबों-खरबों रुपये के व्यापार को गति देते हैं। लेकिन इस निर्णय के कारण उनको भी कठिनाई होना स्वाभाविक था। लेकिन मैंने देखा है कि अब तो हमारे इन छोटे-छोटे व्यापारी भी technology के माध्यम से, Mobile App के माध्यम से, मोबाइल बैंक के माध्यम से, क्रेडिट कार्ड के माध्यम से, अपने-अपने तरीके से ग्राहकों की सेवा कर रहे हैं, विश्वास के आधार पर भी कर रहे हैं। और मैं अपने छोटे व्यापारी भाइयो-बहनो से कहना चाहता हूँ कि मौका है, आप भी digital दुनिया में प्रवेश कर लीजिए। आप भी अपने मोबाइल फ़ोन पर बैंकों की App download करे दीजिए। आप भी क्रेडिट कार्ड के लिए POS मशीन रख लीजिए। आप भी बिना नोट कैसे व्यापार हो सकता है, सीख लीजिए। आप देखिए, बड़े-बड़े मॉल technology के माध्यम से अपने व्यापार को जिस प्रकार से बढ़ाते हैं, एक छोटा व्यापारी भी इस सामान्य user friendly technology से अपना व्यापार बढ़ा सकता है। बिगड़ने का तो सवाल ही नहीं उठता है, बढ़ाने का अवसर है। मैं आप को निमंत्रण देता हूँ कि cashless society बनाने में आप बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं, आप अपने व्यापार को बढ़ाने में, mobile phone पर पूरी banking व्यवस्था खड़ी कर सकते हैं और आज नोटों के सिवाय अनेक रास्ते हैं, जिससे हम कारोबार चला सकते हैं। technological रास्ते हैं, safe है, secure है और त्वरित है। मैं चाहूँगा कि आप सिर्फ़ इस अभियान को सफल करने के लिए मदद करें, इतना नहीं, आप बदलाव का भी नेतृत्व करें और मुझे विश्वास है, आप बदलाव का नेतृत्व कर सकते हैं। आप पूरे गाँव के कारोबार में ये technology के आधार पर काम कर सकते हैं, मेरा विश्वास है। मैं मज़दूर भाइयो-बहनो को भी कहना चाहता हूँ, आप का बहुत शोषण हुआ है। कागज़ पर एक पगार होता है और जब हाथ में दिया जाता है, तब दूसरा होता है। कभी पगार पूरा मिलता है, तो बाहर कोई खड़ा होता है, उसको cut देना पड़ता है और मज़दूर मजबूरन इस शोषण को जीवन का हिस्सा बना देता है। इस नई व्यवस्था से हम चाहते हैं कि आपका बैंक में खाता हो, आपके पगार के पैसे आपके बैंक में जमा हों, ताकि minimum wages का पालन हो। आपको पूरा पैसा मिले, कोई cut ना करे। आपका शोषण न हो। और एक बार आपके बैंक खाते में पैसे आ गए, तो आप भी तो छोटे से मोबाइल फ़ोन पर - कोई बड़ा smart phone की ज़रूरत नहीं है, आजकल तो आपका mobile phone भी ई-बटुवे का काम करता है - आप उसी mobile phone से अडॉस-पडॉस की छोटी-मोटी दुकान में जो भी खरीदना है, खरीद भी सकते हैं, उसी से पैसे भी दे सकते हैं। इसलिए मैं मज़दूर भाइयो-बहनो को इस योजना में भागीदार बनने के लिए विशेष आग्रह करता हूँ, क्योंकि आखिरकार इतना बड़ा मैंने निर्णय देश के गरीब के लिये, किसान के लिये, मज़दूर के लिये, वंचित के लिये, पीड़ित के लिये लिया है, उसका benefit उसको मिलना चाहिए।

आज मैं विशेष रूप से युवक मित्रों से बात करना चाहता हूँ। हम दुनिया में गाजे-बाजे के साथ कहते हैं कि भारत ऐसा देश है कि जिसके पास 65% जनसंख्या, 35 साल से कम उम्र की है। आप मेरे देश के युवा और युवतियों, मैं जानता हूँ, मेरा निर्णय तो आपको पसन्द आया है। मैं ये भी जानता हूँ कि आप इस निर्णय का समर्थन करते हैं। मैं ये भी जानता हूँ कि आप इस बात को सकारात्मक रूप से आगे बढ़ाने के लिए बहुत योगदान भी करते हैं। लेकिन दोस्तो, आप मेरे सच्चे सिपाही हो, आप मेरे सच्चे साथी हो। माँ भारती की सेवा करने का एक अद्भुत मौका हमारे सामने आया है, देश को आर्थिक ऊँचाइयों पर ले जाने का अवसर आया है। मेरे नौजवानो, आप मेरी मदद कर सकते हो क्या? मुझे साथ दोगे, इतने से बात बनने वाली नहीं है। जितना आज की दुनिया का अनुभव आपको है, पुरानी पीढ़ी को नहीं है। हो सकता है, आपके परिवार में बड़े भाई साहब को भी मालूम नहीं होगा और माता-पिता, चाचा-चाची, मामा-मामी को भी शायद मालूम नहीं होगा। आप App क्या होती है, वो जानते हो, online banking क्या होता है, जानते हो, online ticket booking कैसे होता है, आप जानते हो। आपके लिये चीजें बहुत सामान्य हैं और आप उपयोग भी करते हो। लेकिन आज देश जिस महान कार्य को करना चाहता है, हमारा सपना है cashless society. ये ठीक है कि शत-प्रतिशत cashless society संभव नहीं होती है। लेकिन क्यों न भारत less-cash society की तो शुरुआत करे। एक बार अगर आज हम less-cash society की शुरुआत कर दें, तो cashless society की मंजिल दूर नहीं होगी। और मुझे इसमें आपकी physical मदद चाहिए, खुद का समय चाहिए, खुद का संकल्प चाहिए। और आप मुझे कभी निराश नहीं करोगे, मुझे विश्वास है, क्योंकि हम सब हिंदुस्तान के गरीब की जिंदगी बदलने की इच्छा रखने वाले लोग हैं। आप जानते हैं, cashless society के लिये, digital banking के लिये या mobile banking के लिये आज कितने सारे अवसर हैं। हर बैंक online सुविधा देता है। हिंदुस्तान के हर एक बैंक की अपनी mobile app है। हर बैंक का अपना wallet है। wallet का सीधा-सीधा मतलब है e-बटुवा। कई तरह के card उपलब्ध हैं। जन-धन योजना के तहत भारत के करोड़ों-करोड़ गरीब परिवारों के पास Rupay Card है और 8 तारीख के बाद तो जो Rupay Card का बहुत कम उपयोग होता था, गरीबों ने Rupay Card का उपयोग करना शुरू किया और करीब-करीब 300% उसमें वृद्धि हुई है। जैसे mobile phone में prepaid card आता है, वैसा बैंकों में भी पैसा खर्च करने के लिये prepaid card मिलता है। एक बढ़िया platform है, कारोबार करने की UPI, जिससे आप खरीदी भी कर सकते हैं, पैसे भी भेज सकते हैं, पैसे ले भी सकते हैं। और ये काम इतना simple है जितना कि आप WhatsApp भेजते हैं। कुछ भी ना पढ़ा-लिखा व्यक्ति होगा, उसको भी आज WhatsApp कैसे भेजना है, वो आता है, forward कैसे करना है, आता है। इतना ही नहीं, technology इतनी सरल होती जा रही है कि इस काम के लिए कोई बड़े smart phone की भी आवश्यकता नहीं है। साधारण जो feature phone होता है, उससे भी cash transfer हो सकती है। धोबी हो, सब्जी बेचनेवाला हो, दूध बेचनेवाला हो, अखबार बेचनेवाला हो, चाय बेचनेवाला हो, चने बेचनेवाला हो, हर कोई इसका आराम से उपयोग कर सकता है। और मैंने भी इस व्यवस्था को और अधिक सरल बनाने के लिए और जोर दिया है। सभी बैंक इस पर लगी हुई हैं, कर रही हैं। और अब तो हमने ये online surcharge का भी खर्चा आता था, वो भी cancel कर दिया है। और भी इस प्रकार के कार्ड वगैरह का जो खर्चा आता था, उसे आपने देखा होगा पिछले 2-4 दिन में अखबारों में, सारे खर्च खत्म कर दिए, ताकि cashless society की movement को बल मिले।

मेरे नौजवान दोस्तो, ये सब होने के बाद भी एक पूरी पीढ़ी ऐसी है कि जो इससे अपरिचित है। और आप सभी लोग, मैं भली-भाँति जानता हूँ, इस महान कार्य में सक्रिय हैं। WhatsApp पर जिस प्रकार के creative message आप देते हैं - slogan, कविताएँ, किस्से, cartoon, नयी-नयी कल्पना, हंसी-मजाक - सब कुछ मैं देख रहा हूँ और चुनौतियों के बीच ये हमारी युवा पीढ़ी की जो सृजन शक्ति है, तो ऐसा लग रहा है, जैसे ये भारत भूमि की विशेषता है कि किसी ज़माने में युद्ध के मैदान में गीता का जन्म हुआ था, वैसे ही आज इतने बड़े बदलाव के काल से हम गुजर रहे हैं, तब आपके अन्दर भी मौलिक creativity प्रकट हो रही है। लेकिन मेरे प्यारे नौजवान मित्रो, मैं फिर एक बार कहता हूँ, मुझे इस काम में आपकी मदद चाहिए। जी-जी-जी, मैं दुबारा कहता हूँ, मुझे आपकी मदद चाहिए और आप, आप मुझे विश्वास है मेरे देश के करोड़ों नौजवान इस काम को करेंगे। आप एक काम कीजिए, आज से ही संकल्प लीजिए कि आप स्वयं cashless society के लिए खुद एक हिस्सा बनेंगे। आपके mobile phone पर online खर्च करने की जितनी technology है, वो सब मौजूद होगी। इतना ही नहीं, हर दिन आधा-घंटा, घंटा, दो घंटा निकाल करके कम से कम 10 परिवारों को आप ये technology क्या है, technology का कैसे उपयोग करते हैं, कैसे अपनी बैंकों की App download करते हैं? अपने खाते में जो पैसे पड़े हैं, वो पैसे कैसे खर्च किए जा सकते हैं? कैसे दुकानदार को दिए जा सकते हैं? दुकानदार को भी सिखाइये कि कैसे व्यापार किया जा सकता है? आप स्वेच्छा से इस cashless society, इन नोटों के चक्कर से बाहर लाने का महाभियान, देश को भ्रष्टाचार मुक्त करने का अभियान, काला-धन से मुक्ति दिलाने का अभियान, लोगों को कठिनाइयों-समस्याओं से मुक्त करने का अभियान - इसका नेतृत्व करना है आपको। एक बार लोगों को Rupay Card का उपयोग कैसे हो, ये आप सिखा देंगे, तो गरीब आपको आशीर्वाद देगा। सामान्य नागरिक को ये व्यवस्थायें सिखा दोगे, तो उसको तो शायद सारी चिंताओं से मुक्ति मिल जाएगी और ये काम अगर हिंदुस्तान के सारे नौजवान लग जाएँ, मैं नहीं मानता हूँ, ज्यादा समय लगेगा। एक महीने के भीतर-भीतर हम विश्व के अन्दर एक नये आधुनिक हिंदुस्तान के रूप में खड़े हो सकते हैं और ये काम आप अपने mobile phone के जरिये कर सकते हो, रोज 10 घरों में जाकर के कर सकते हो, रोज 10 घरों को इसमें जोड़ करके कर सकते हो। मैं आपको निमंत्रण देता हूँ - आइए, सिर्फ समर्थन नहीं, हम इस परिवर्तन के सेनानी बनें और परिवर्तन लेकर ही रहेंगे। देश को भ्रष्टाचार और काले-धन से मुक्त करने की ये लड़ाई को हम आगे बढ़ाएँगे और दुनिया में बहुत देश हैं, जहाँ के नौजवानों ने उस राष्ट्र के जीवन को बदल दिया है और ये बात माननी पड़ेगी, जो बदलाव लाता है, वो नौजवान लाता है, क्रांति करता है, वो युवा करता है। केन्या, उसने बीड़ा उठाया, M-PESA ऐसी एक mobile व्यवस्था खड़ी की, technology का उपयोग किया, M-PESA नाम रखा और आज करीब-करीब Africa के इस इलाके में केन्या में पूरा कारोबार इस पर shift होने की तैयारी में आ गया है। एक बड़ी क्रांति की है इस देश ने।

मेरे नौजवानो, मैं फिर एक बार, फिर एक बार बड़े आग्रह से आपको कहता हूँ कि आप इस अभियान को आगे बढ़ाइए। हर school, college, university, NCC, NSS, सामूहिक रूप से, व्यक्तिगत रूप से इसे काम को करने के लिए मैं आपको निमंत्रण

देता हूँ। हम इस बात को आगे बढ़ाएँ। देश की उत्तम सेवा करने का हमें अवसर मिला है, मौका गंवाना नहीं है।

प्यारे भाइयो-बहनो, हमारे देश के एक महान कवि - श्रीमान हरिवंशराय बच्चन जी का आज जन्म-जयंती का दिन है और आज हरिवंशराय जी के जन्मदिन पर श्रीमान अमिताभ बच्चन जी ने “स्वच्छता अभियान” के लिये एक नारा दिया है। आपने देखा होगा, इस सदी के सर्वाधिक लोकप्रिय कलाकार अमिताभ जी स्वच्छता के अभियान को बहुत जी-जान से आगे बढ़ा रहे हैं। जैसे लग रहा है कि स्वच्छता का विषय उनके रग-रग में फैल गया है और तभी तो अपने पिताजी की जन्म-जयंती पर भी उनको स्वच्छता का ही काम याद आया। उन्होंने लिखा है कि हरिवंशराय जी की एक कविता है और उसकी एक पंक्ति उन्होंने लिखी है “मिट्टी का तन, मस्ती का मन, क्षण भर जीवन, मेरा परिचय।” हरिवंशराय जी इसके माध्यम से अपना परिचय दिया करते थे। ‘मिट्टी का तन, मस्ती का मन, क्षण भर जीवन, मेरा परिचय’, तो उनके सुपुत्र श्रीमान अमिताभ जी ने, जिसकी रगों में स्वच्छता का mission दौड़ रहा है, उन्होंने मुझे लिखकर के भेजा है हरिवंशराय जी की कविता का उपयोग करते हुए - “स्वच्छ तन, स्वच्छ मन, स्वच्छ भारत, मेरा परिचय”। मैं हरिवंशराय जी को आदर-पूर्वक नमन करता हूँ। श्रीमान अमिताभ जी को भी ‘मन की बात’ में इस प्रकार से जुड़ने के लिये और स्वच्छता के काम को आगे बढ़ाने के लिये भी धन्यवाद करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, अब तो ‘मन की बात’ के माध्यम से आपके विचार, आपकी भावनाएँ आपके पत्रों के माध्यम से, MyGov पर, NarendraModiApp पर लगातार मुझे आपको जोड़ करके रखती हैं। अब तो 11 बजे ये ‘मन की बात’ होती है, लेकिन प्रादेशिक भाषाओं में इसे पूरा करने के तुरंत बाद शुरू करने वाले हैं। मैं आकाशवाणी का आभारी हूँ, ये नया उन्होंने जो Initiative लिया है, ताकि जहाँ पर हिंदी भाषा प्रचलित नहीं है, वहाँ के भी मेरे देशवासियों को ज़रूर इससे जुड़ने का अवसर मिलेगा। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-दिसंबर-2016 11:36 IST

25 दिसम्बर, 2016 को आकाशवाणी पर प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियों, नमस्कार। आप सभी को क्रिसमस की अनेक-अनेक शुभकामनायें। आज का दिन सेवा, त्याग और करुणा को अपने जीवन में महत्व देने का अवसर है। ईसा मसीह ने कहा "गरीबों को हमारा उपकार नहीं, हमारा स्वीकार चाहिये"। Saint Luke के Gospel में लिखा है "जीसस ने न केवल गरीबों की सेवा की है, बल्कि गरीबों के द्वारा की गयी सेवा की भी सराहना की है" और यही तो असली empowerment है। इससे जुड़ी एक कहानी भी बहुत प्रचलित है। उस कहानी में बताया गया है कि जीसस एक temple treasury के पास खड़े थे। कई अमीर लोग आए, ढेर सारे दान दिए। उसके बाद एक गरीब विधवा आई और उसने दो तांबे के सिक्के डाले। एक तरह से देखा जाए दो तांबे के सिक्के, कुछ मायने नहीं रखते। वहाँ खड़े भक्तों के मन में, कौतुहल होना बड़ा स्वाभाविक था, तब जीसस ने कहा, कि उस विधवा महिला ने सबसे ज्यादा दान किया है, क्योंकि औरों ने बहुत कुछ दिया, लेकिन इस विधवा ने तो अपना सब कुछ दे दिया है।

आज 25 दिसम्बर, महामना मदन मोहन मालवीय जी की भी जयन्ती है। भारतीय जनमानस में संकल्प और आत्मविश्वास जगाने वाले मालवीय जी ने आधुनिक शिक्षा को एक नई दिशा दी। उनकी जयन्ती पर भाव-भीनी श्रद्धांजलि। अभी दो दिन पहले, मालवीय जी की तपोभूमि बनारस में मुझे कई सारे विकास के कार्यों का शुभारम्भ करने का अवसर मिला। मैंने वाराणसी में, BHU में, महामना मदन मोहन मालवीय Cancer Centre का भी शिलान्यास किया है। इस पूरे क्षेत्र में निर्माण हो रहा है एक Cancer Centre. न सिर्फ पूर्वी उत्तर-प्रदेश, लेकिन, झारखण्ड-बिहार तक के लोगों के लिये एक बहुत बड़ा वरदान होगा।

आज, भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी का भी जन्मदिन है। ये देश अटल जी के योगदान को कभी नहीं भुला सकता। उनके नेतृत्व में हमने परमाणु शक्ति में भी, देश का सिर ऊपर किया। पार्टी नेता हो, संसद सदस्य हो, मंत्री हो या प्रधानमंत्री, अटल जी ने प्रत्येक भूमिका में, एक आदर्श को प्रतिष्ठित किया। अटल जी के जन्मदिन पर मैं उनको प्रणाम करता हूँ और उनके उत्तम स्वास्थ्य के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। एक कार्यकर्ता के नाते अटल जी के साथ कार्य करने का सौभाग्य मिला। अनेक स्मृतियाँ आँखों के सामने उभर करके आती हैं। आज सुबह-सुबह जब मैंने tweet किया तो एक पुराना video भी मैंने share किया है। एक छोटे कार्यकर्ता के रूप में अटल जी का स्नेह-वर्षा का सौभाग्य कैसा मिलता था, उस video को देख करके ही पता चलेगा।

आज क्रिसमस के दिन, सौगात के रूप में, देशवासियों को दो योजनाओं का लाभ मिलने जा रहा है। एक प्रकार से दो नवतर योजनाओं का आरम्भ हो रहा है। पूरे देश में, गाँव हो या शहर हो, पढ़े लिखे हो या अनपढ़ हो, cashless क्या है! Cashless कारोबार कैसे चल सकता है! बिना cash खरीदारी कैसे की जा सकती है! चारों तरफ एक जिज्ञासा का माहौल बना है। हर कोई एक-दूसरे से सीखना-समझना चाहता है। इस बात को बढ़ावा देने के लिये, mobile banking को ताकत मिले इसलिये, e-payment की आदत लगे इसलिये, भारत सरकार ने, ग्राहकों के लिये और छोटे व्यापारियों के लिये 'प्रोत्साहक योजना' का आज से प्रारंभ हो रहा है। ग्राहकों को प्रोत्साहन करने के लिये योजना है - 'lucky ग्राहक योजना' और व्यापारियों को प्रोत्साहन करने के लिये योजना है - 'Digi धन व्यापार योजना'। आज

25 दिसम्बर को क्रिसमस की सौगात के रूप में, पंद्रह हजार लोगों को draw system से ईनाम मिलेगा और पंद्रह हजार के हर-एक के खाते में एक-एक हजार रुपये का ईनाम जाएगा और ये सिर्फ आज एक दिन के लिये नहीं है, ये योजना आज से शुरू हो करके 100 दिन तक चलने वाली है। हर दिन, पंद्रह हजार लोगों को एक-एक हजार रुपये का ईनाम मिलने वाला है। 100 दिन में, लाखों परिवारों तक, करोड़ों रुपयों की सौगात पहुँचने वाली है, लेकिन, ये ईनाम के हकदार आप तब बनेंगे जब आप mobile banking, e-banking, RuPay Card, UPI, USSD ये जितने digital भुगतान के तरीके हैं उनका उपयोग करोगे, उसी के आधार पर draw निकलेगा। इसके साथ-साथ ऐसे ग्राहकों के लिये सप्ताह में एक दिन बड़ा draw होगा जिसमें ईनाम भी लाखों में होंगे और तीन महीने के बाद, 14 अप्रैल डॉक्टर बाबा साहेब आंबेडकर की जन्म जयन्ती है उस दिन एक bumper draw होगा जिसमें करोड़ों के ईनाम होंगे। 'Digi धन व्यापार योजना' प्रमुख रूप से

व्यापारियों के लिये है। व्यापारी स्वयं इस योजना से जुड़ें और अपना कारोबार भी cashless बनाने के लिए ग्राहकों को भी जोड़ें। ऐसे व्यापारियों को भी अलग से ईनाम दिये जाएंगे और ये ईनाम हजारों की तादात में हैं। व्यापारियों का अपना व्यापार भी चलेगा और ऊपर से ईनाम का अवसर भी मिलेगा। ये योजना, समाज के सभी वर्गों, खास करके गरीब एवं निम्न मध्यम-वर्ग, उनको केंद्र में रख करके बनायी गई है और इसलिये जो 50 रुपये से ऊपर खरीदते हैं और तीन हजार से कम पैसे की खरीदी करते हैं, उन्हीं को इसका लाभ मिलेगा। तीन हजार रुपये से ज्यादा खरीदी करने वाले को इस ईनाम का लाभ नहीं मिलेगा। गरीब से गरीब लोग भी USSD का इस्तेमाल कर feature फोन, साधारण फोन के माध्यम से भी सामान खरीद भी सकते हैं, सामान बेच भी सकते हैं और पैसे का भुगतान भी कर सकते हैं और वे सब इस ईनाम योजना के लाभार्थी भी बन सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग AEPS के माध्यम से खरीद-बिक्री कर सकते हैं और वे भी ईनाम जीत सकते हैं। कड़ियों को आश्चर्य होगा, भारत में आज लगभग 30 करोड़ RuPay Card हैं, जिसमें से 20 करोड़ गरीब परिवार जो जन-धन खाता वाले लोग हैं, उनके पास है। ये 30 करोड़ लोग तो तुरंत इस ईनामी योजना का हिस्सा बन सकते हैं। मुझे विश्वास है कि देशवासी इस व्यवस्था में रुचि लेंगे और आपके अगल-बगल में जो नौजवान होंगे, वो जरूर इन चीजों को जानते होंगे, आप थोड़ा सा उनको पूछोगे वो बता देंगे। अरे, आपके परिवार में भी 10वीं-12वीं का बच्चा होगा, तो वो भी भली-भाँति चीज़ आपको सिखा देगा। ये बहुत सरल है - जैसे आप मोबाइल फोन से WhatsApp भेजते हैं न उतना ही सरल है।

मेरे प्यारे देशवासियों, मुझे ये जान करके खुशी होती है कि देश में technology का उपयोग कैसे करना, e-payment कैसे करना, online payment कैसे करना, इसकी जागरूकता बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। पिछले कुछ ही दिनों में cashless कारोबार, बिना नगद का कारोबार, 200 से 300 प्रतिशत बढ़ा है। इसको बढ़ावा देने के लिये भारत सरकार ने एक बहुत बड़ा फैसला लिया है। ये फैसला कितना बड़ा है इसका अंदाज़ तो व्यापारी बहुत अच्छी तरह लगा सकते हैं। जो व्यापारी digital लेन-देन करेंगे, अपने कारोबार में नगद के बजाय online payment की पद्धति विकसित करेंगे, ऐसे व्यापारियों को Income Tax में छूट दे दी गई है।

मैं देश के सभी राज्यों को भी बधाई देता हूँ। Union Territory को भी बधाई देता हूँ। सबने अपने-अपने प्रकार से इस अभियान को आगे बढ़ाया है। आंध्र के मुख्यमंत्री श्रीमान् चंद्रबाबू नायडू की अध्यक्षता में एक committee भी बनाई है, जो इसके लिये अनेक योजनाओं पर विचार कर रही है, लेकिन मैंने देखा कि सरकारों ने भी अपने तरीके से कई योजनाएँ लागू की हैं, आरंभ की हैं। किसी ने मुझे बताया की असम सरकार ने property tax और व्यापार license fee का digital भुगतान करने पर 10 फ़ीसदी छूट देने का निर्णय किया है। ग्रामीण बैंकों के branch अपने 75% उपभोक्ता से जनवरी से मार्च के बीच कम से कम दो digital transaction करवाते हैं, तो उन्हें सरकार की ओर से 50 हजार रुपये ईनाम मिलने वाले हैं। 31 मार्च 2017 तक अगर 100% digital transaction करने वाले गाँवों को सरकार की ओर से Uttam Panchayat for Digi-Transaction के तहत 5 लाख रुपये का ईनाम देने की उन्होंने घोषणा की है। उन्होंने किसानों के लिये Digital Krishak Shiromani असम सरकार ने ऐसे पहले 10 किसानों को 5 हजार रुपया ईनाम देने का निर्णय किया है जो बीज और खाद की खरीद के लिए पूरी तरह digital भुगतान का इस्तेमाल करते हैं। मैं असम सरकार को बधाई देता हूँ लेकिन इस प्रकार से initiative लिये सभी सरकारों को बधाई देता हूँ। कई Organisations ने भी गाँव गरीब किसानों के बीच digital लेन-देन को बढ़ावा देने के कई सफल प्रयोग किये हैं। मुझे किसी ने बताया GNFC Gujarat Narmada valley Fertilizer और Chemical limited जो मुख्यतः खाद का काम करता है, उन्होंने किसानों को सुविधा हो इसलिये एक हजार Pose Machine खाद जहाँ बेचते हैं, वहाँ लगाए हैं और कुछ ही दिनों में 35 हजार किसानों को 5 लाख खाद के बोरे digital भुगतान के माध्यम से कर दिये और ये सब सिर्फ़ दो हफ्ते में किया है। और मज़ा यह है कि पिछले वर्ष की तुलना में GNFC की खाद की बिक्री में 27 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है।

भाइयों-बहनो, हमारी अर्थव्यवस्था में, हमारी जीवन व्यवस्था में, Informal Sector बहुत बढ़ा है और ज्यादातर इन लोगों का मज़दूरी का पैसा, काम का पैसा या पगार नगद में दिया जाता है, Cash में salary दी जाती है और हमें पता है, उसके कारण मजदूरों का शोषण भी होता है। 100 रुपए मिलने चाहिये तो 80 मिलते हैं, 80 मिलने चाहिये तो 50 मिलते हैं और insurance जैसे health sector की दृष्टि से अन्य कई सुविधाएँ होती हैं उससे वो वंचित रह जाते हैं लेकिन अब cashless payment हो रहा है। सीधा पैसा बैंक में जमा हो रहा है। एक प्रकार से Informal Sector formal convert होता जा रहा है, शोषण बंद हो रहा है, cut देना पड़ता था वो cut भी अब बंद हो रहा है और मज़दूर को, कारीगर को, ऐसे गरीब व्यक्ति को पूरे पैसे मिलना संभव हुआ है। साथ-साथ अन्य जो लाभ मिलते हैं वे लाभ का भी वो हकदार बन रहा है। हमारा देश तो सर्वाधिक युवाओं वाला देश है। Technology हमें सहज साध्य है। भारत जैसे देश ने तो इस क्षेत्र में सबसे आगे होना चाहिये। हमारे नौजवानों ने Start-Up से काफी प्रगति की है। ये digital movement एक सुनहरा अवसर है हमारे नौजवान नये-नये idea के साथ, नयी-नयी technology के साथ, नयी-नयी पद्धति के साथ इस क्षेत्र को जितना बल दे सकते हैं देना चाहिये, लेकिन देश को काले धन से, भ्रष्टाचार से मुक्त कराने के अभियान में पूरी ताकत से हमें जुड़ना चाहिये।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं हर महीने 'मन की बात' के पहले लोगों से आग्रह करता हूँ कि आप मुझे अपने सुझाव दीजिये, अपने विचार बताइए और हजारों की तादाद में MyGov पर और NarendraModiApp पर इस बार जो सुझाव आये, मैं कह सकता हूँ 80-90 प्रतिशत सुझाव भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ की लड़ाई के संबंध में आये, नोटबंदी की चर्चा आयी। इन सारी चीजों को जब मैंने देखा तो मैं मोटे-मोटे तौर पर कह सकता हूँ कि मैं उसको तीन भागों में विभाजित करता हूँ। कुछ लोगों ने जो मुझे लिखा है, उसमें नागरिकों को कैसी-कैसी कठिनाइयाँ हो रही हैं, कैसी असुविधाएँ हो रही हैं। इसके संबंध में विस्तार से लिखा है। लिखने वालों का दूसरा तबका वो है जिन्होंने ज्यादातर उन बातों पर बल दिया है कि इतना अच्छा काम, देश की भलाई का काम, इतना पवित्र काम, लेकिन उसके बावजूद भी कहाँ-कहाँ कैसी-कैसी धांधली हो रही है, किस प्रकार से बेईमानी के नये-नये रास्ते खोजे जा रहे हैं, इसका भी जिक्र लोगों ने किया है। और तीसरा वो तबका है जिन्होंने जो हुआ है, उसका तो समर्थन किया है लेकिन साथ-साथ ये लड़ाई आगे बढ़नी चाहिये। भ्रष्टाचार, काला धन पूर्णतः नष्ट होना चाहिये, इसके लिए और कठोर कदम उठाने चाहिये तो उठाने चाहिये, ऐसा बड़ा ही बल दे करके लिखने वाले लोग भी हैं।

मैं देशवासियों का आभारी हूँ कि इतनी सारी चिट्ठियाँ लिख करके मुझे आपने मदद की है। श्रीमान गुरुमणि केवल ने My Gov पर लिखा है काले धन पर लगाम लगाने का ये कदम प्रशंसा के योग्य है। हम नागरिकों को परेशानी हो रही है, लेकिन हम सब भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहे हैं और इस लड़ाई में हम जो सहयोग दे रहे हैं, उससे हम खुश हैं। हम भ्रष्टाचार, काला धन इत्यादि के खिलाफ Military Forces की तरह लड़ रहे हैं। गुरु मणिकेवल जी ने जो बात लिखी है देश के हर कोने में से यही भावना उजागर हो रही है। हम सब इसको अनुभव कर रहे हैं। लेकिन ये बात सही है जब जनता कष्ट झेलती है, तकलीफ झेलती है तो कौन इंसान होगा जिसको पीड़ा न होती हो। जितनी पीड़ा आपको होती है, उतनी ही पीड़ा मुझे भी होती है। लेकिन एक उत्तम ध्येय के लिये, एक उच्च इरादे को पार करने के लिये, साफ नीयत के साथ जब काम होता है तो ये कष्ट के बीच, दुख के बीच, पीड़ा के बीच भी देशवासी हिम्मत के साथ डटे रहते हैं। ये लोग ही असल में Agent of Change बदलाव के पुरोधा हैं। मैं लोगों को एक और कारण के लिये भी धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने न केवल परेशानियाँ उठाई हैं, बल्कि उन चुनिन्दा लोगों को करारा जवाब भी दिया है, जो जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं। कितनी सारी अफवाहें फैलाइ गई। भ्रष्टाचार और काले धन जैसी लड़ाई को भी साम्प्रदायिकता के रंग से रंगने का भी कितना प्रयास किया गया। किसी ने अफवाह फैलाइ नोट पर लिखी Spelling गलत है, किसी ने कह दिया नमक का दाम बढ़ गया है, किसी ने अफवाह चला दी 2000 के नोट भी जाने वाली है, 500 और 100 के भी जाने वाली है, ये भी फिर से जाने वाला है, लेकिन मैंने देखा भाँति-भाँति अफवाहों के बावजूद भी देशवासियों के मन को कोई डुला नहीं सका है। इतना ही नहीं, कई लोग मैदान में आए, अपने Creativity के द्वारा, अपने बुद्धि शक्ति के द्वारा अफवाह फैलाने वालों को भी बेनकाब किया, अफवाहों को भी बेनकाब कर दिया और सत्य लाकर के खड़ा कर दिया। मैं जनता के इस सामर्थ्य को भी शत-शत नमन करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, ये मैं साफ अनुभव कर रहा हूँ, हर पल अनुभव कर रहा हूँ। जब सवा-सौ करोड़ देशवासी आपके के साथ खड़े हों तब कुछ भी असंभव नहीं होता है और जनता जनार्दन ही तो ईश्वर का रूप होती है और जनता के आशीर्वाद, ईश्वर के ही आशीर्वाद बन जाते हैं। मैं देश की जनता को धन्यवाद देता हूँ, उन्हें नमन करता हूँ कि भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ इस महायज्ञ में लोगों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया है। मैं चाहता था कि सदन में भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ जो लड़ाई चल रही है राजनैतिक दलों के लिये भी, Political Funding के लिये भी, व्यापक चर्चा हो। अगर सदन चला होता तो ज़रूर अच्छी चर्चा होती। जो लोग अफवाहें फैला रहे हैं कि राजनैतिक दलों को सब छुट-छाट है, ये गलत है। कानून सब के लिये समान होता है और कानून का पालन भी चाहे व्यक्ति हो, संगठन हो या राजनैतिक दल हो, हर किसी को कानून का पालन करना ही होता है और करना ही पड़ेगा। जो लोग खुल कर के भ्रष्टाचार और काले धन का समर्थन नहीं कर पाते हैं, वे सरकार की कमियाँ ढूँढ़ने के लिए पूरी देर लगे रहते हैं। एक बात ये भी आती है बार-बार नियम क्यों बदलते हैं। ये सरकार जनता-जनार्दन के लिये है। जनता का लगातार feedback लेने का प्रयास सरकार करती है। जनता-जनार्दन को कहाँ कठिनाई हो रही है! किस नियम के कारण दिक्कत आती है! उसका क्या रास्ता खोजा जा सकता है! हर पल सरकार एक सर्वेदनशील सरकार होने के कारण जनता-जनार्दन की सुख-सुविधा को ध्यान में रखते हुए जितने भी नियम बदलने पड़ते हैं, बदलती है, ताकि लोगों की परेशानी कम हो। दूसरी तरफ, मैंने पहले ही दिन कहा था, 8 तारीख को कहा था, ये लड़ाई असामान्य है। 70 साल से बेईमानी और भ्रष्टाचार के काले कारोबार में कैसी शक्तियाँ जुड़ी हुई है? उनकी ताकत कितनी है? ऐसे लोगों से मैंने जब मुकाबला करना ठान लिया है तो वे भी तो सरकार को पराजित करने के लिए रोज नये तरीके अपनाते हैं। जब वो नये तरीके अपनाते हैं तो हमें भी तो उसके काट के लिये नया तरीका अपनाना पड़ता है। तू डाल-डाल, तो मैं पात-पात, क्योंकि हमने तय किया है कि भ्रष्टाचारियों को, काले कारोबारों को, काले धन को, मिटाना है। दूसरी तरफ, कई लोगों के पत्र इस बात को लेकर के आए हैं जिसमें किस प्रकार की धाँधलियाँ हो रही हैं, किस प्रकार से नये-नये रास्ते खोजे जा रहे हैं इसकी चर्चा है।

मैं प्यारे देशवासियों को एक बात का हृदय से अभिनन्दन करना चाहता हूँ। आज आप लोग टी.वी. पर समाचार-पत्रों में देखते होंगे! रोज़ नये-नये लोग पकड़े जा रहे हैं! नोटें पकड़े जा रहे हैं! छापे मारे जा रहे हैं! अच्छे-अच्छे लोग पकड़े जा रहे हैं। ये कैसे संभव हुआ है? मैं Secret बता दूँ। Secret ये है कि जानकारीयाँ मुझे लोगों की तरफ से मिल रही हैं। सरकारी व्यवस्था से जितनी जानकारी आती है उस से अनेक गुना ज्यादा सामान्य नागरिकों से जानकारीयाँ आ रही हैं और ज्यादातर हमें सफलता मिल रही है वो जन-सामान्य की जागरूकता के कारण मिल रही है। कोई कल्पना कर सकता है - मेरे देश का जागरूक नागरिक ऐसे तत्वों को बेनकाब करने के लिए कितना risk ले रहा है और जो जानकारीयाँ आ रही हैं उसमें ज्यादातर सफलता मिल रही है। मुझे विश्वास है कि सरकार ने इसके लिये जो एक e-mail address इस प्रकार की खबरें देना चाहते हैं उनके लिए बनाया है। उस पर भी भेज सकते हो, MyGov पर भी भेज सकते हो। सरकार ऐसी सारी बुराइयों के साथ लड़ने के लिए प्रतिबद्ध है और जब आपका सहयोग है तो फिर लड़ना बहुत आसान है।

तीसरे पत्र, लेखकों का ग्रुप ऐसा है, वे भी बहुत बड़ी संख्या में हैं। वो कहते हैं मोदी जी थक मत जाना, रुक मत जाना और जितना कठोर कदम उठा सकते हो, उठाओ, लेकिन अब एक बार रास्ता पकड़ा है तो मंजिल तक पहुंचना ही है। मैं ऐसे पत्र लिखने वाले सब को विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ क्योंकि उनके पत्र में एक प्रकार से विश्वास भी है, आशीर्वाद भी है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ये पूर्ण विराम नहीं है, ये तो अभी शुरुआत है, ये जंग जीतना है और थकने का तो सवाल ही कहाँ उठता है, रुकने का तो सवाल ही नहीं उठता है और जिस बात पर सवा-सौ करोड़ देशवासियों का आशीर्वाद हो, उसमें तो पीछे हटने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। आपको मालूम होगा हमारे देश में 'बेनामी संपत्ति' का एक कानून है। Nineteen Eighty Eight, उन्नीस सौ अठासी में बना था, लेकिन कभी भी न उसके Rules बनें, उसको Notify नहीं किया, ऐसे ही वो ठंडे बस्ते में पड़ा रहा। हमने उसको निकाला है और बड़ा धार-धार 'बेनामी संपत्ति' का कानून हमने बनाया है। आने वाले दिनों में वो कानून भी अपना काम करेगा। देशहित के लिये, जनहित के लिये, जो भी करना पड़े, ये हमारी प्राथमिकता है।

मेरे प्यारे देशवासियों, पिछली बार भी 'मन की बात' में मैंने कहा था कि इन कठिनाइयों के बीच भी हमारे किसानों ने कड़ी मेहनत कर के 'बूवाई' में पिछले साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया। कृषि क्षेत्र के दृष्टि से ये शुभ संकेत हैं। इस देश का मजदूर हो, इस देश का किसान हो, इस देश का नौजवान हो इन सब के परिश्रम आज नये रंग ला रहे हैं। पिछले दिनों विश्व के 'अर्थ मंच' पर भारत ने अनेक क्षेत्र में अपना नाम बड़े गौरव के साथ अंकित करवाया है। हमारे देशवासियों के लगातार प्रयासों का परिणाम है कि अलग-अलग Indicators के जरिये अलग-अलग Indicators के जरिये भारत की वैश्विक ranking में बढ़ोतरी दिखाई दे रही है। World Bank की doing business report में भारत की ranking बढ़ी है। हम भारत में business practices को दुनिया के best Practices के बराबर बनाने का तेज़ी से प्रयास कर रहे हैं और सफलता मिल रही है। UNCTAD उसके द्वारा जारी world Investment report के अनुसार top prospective host economies for 2016-18 में भारत का स्थान तीसरा पहुँच गया है। World Economic Forum के global competitiveness Report में भारत ने 32 Rank की छलांग लगाई है। Global Innovation Index 2016 में हमने 16 स्थानों की बढ़त हासिल की है और World Bank के Logistics Performance Index 2016 में 19 rank की बढ़ोतरी हुई है। कई report ऐसे हैं जिसके मूल्यांकन भी इसी ओर इशारा करते हैं। भारत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियों, इस बार संसद का सत्र देशवासियों की नाराज़गी का कारण बना, चारों तरफ संसद के गतिविधि के संबंध में रोष प्रकट हुआ। राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति जी ने भी प्रकट रूप से नाराज़गी व्यक्त की, लेकिन इस हालत में भी, कभी-कभी कुछ अच्छी बात भी हो जाती है और तब मन को एक बहुत संतोष मिलता है। संसद के हो-हल्ले के बीच एक ऐसा उत्तम काम हुआ जिसकी तरफ देश का ध्यान नहीं गया है। भाइयों-बहनो, आज मुझे इस बात को बताते हुए गर्व और हर्ष की अनुभूति हो रही है कि दिव्यांग-जनों पर जिस Mission को ले करके मेरी सरकार चली थी, उससे जुड़ा एक बिल संसद में पारित हो गया, इसके लिये मैं लोकसभा और राज्यसभा के सभी सांसदों का आभार व्यक्त करता हूँ, देश के करोड़ों दिव्यांग-जनों की तरफ से आभार व्यक्त करता हूँ। दिव्यांगों के लिए हमारी सरकार Committed है। मैंने निजी-तौर पर भी इसे लेकर मुहिम को गति देने की कोशिश भी की है। मेरा इरादा था, दिव्यांग-जनों को उनका हक मिले, सम्मान मिले, जिसके वो अधिकारी हैं। हमारे प्रयासों और भरोसों को हमारे दिव्यांग भाई-बहनों ने उस वक़्त और मजबूती दी जब वे Paralympics में चार Medal जीत करके ले आये, उन्होंने अपनी जीत से न केवल देश का मान बढ़ाया बल्कि अपनी क्षमता से लोगों को आश्चर्य चकित भी कर दिया। हमारे दिव्यांग भाई-बहन भी देश के हर नागरिक की तरह हमारी एक अनमोल विरासत हैं, अनमोल शक्ति हैं। मैं आज बेहद खुश हूँ कि दिव्यांग-जनों के हित के लिए ये कानून पास होने के बाद दिव्यांगों के पास नौकरी के ज्यादा अवसर होंगे। सरकारी नौकरियों में आरक्षण की सीमा बढ़ा करके 4% कर दी गयी है। इस कानून से दिव्यांगों की शिक्षा, सुविधा और शिकायतों के लिए विशेष प्रावधान भी किये गए हैं। दिव्यांगों को ले करके सरकार कितनी संवेदनशील है इसका अंदाज़ आप इस बात से लगा सकते हैं कि केंद्र सरकार ने पिछले दो वर्ष में दिव्यांग-जनों के लिए चार हज़ार तीन सौ पचास कैंप लगाए। तीन सौ बावन करोड़ रूपयों की राशि खर्च करके पाँच लाख अस्सी हज़ार दिव्यांग भाई-बहनों को उपकरण बाँटे। सरकार ने United Nation की भावना के अनुरूप ही नया कानून

पारित किया है। पहले दिव्यांगों की श्रेणी सात प्रकार की हुआ करती थी, लेकिन अब कानून बना करके उसे इक्कीस प्रकार की कर दी गई है। इसमें चौदह नई श्रेणियाँ और जोड़ दी हैं। दिव्यांगों की कई ऐसी श्रेणियाँ शामिल की गयी हैं जिसे पहली बार न्याय मिला है, अवसर मिला है। जैसे- Thalassemia, Parkinson's, या फिर बौनापन, ऐसे क्षेत्रों को भी इस श्रेणी के साथ जोड़ दिया गया है। मेरे युवा साथियो, पिछले कुछ हफ्तों में खेल के मैदान में ऐसी खबरें आईं जिसने हम सब को गौरवान्वित कर दिया। भारतीय होने के नाते हम सब को गर्व होना बहुत स्वाभाविक है। भारतीय cricket टीम की इंग्लैंड के खिलाफ चार शून्य से सीरीज में जीत हुई है। इसमें कुछ युवा खिलाड़ियों की Performance काबिले तारीफ रही। हमारे नौजवान करुण नायर ने Triple Century लगाई, तो, के.एल. राहुल ने 199 रनों की पारी खेली। टेस्ट कप्तान विराट कोहली ने तो अच्छी batting के साथ-साथ अच्छा नेतृत्व भी दिया। भारतीय क्रिकेट टीम के off-spinner गेंदबाज आर. अश्विन को ICC ने वर्ष 2016 का 'Cricketer Of The Year' और 'Best Test Cricketer' घोषित किया है। इन सब को मेरी बहुत-बहुत बधाईयाँ, ढेर सारी शुभकामनायें। हॉकी के क्षेत्र में भी पंद्रह साल के बाद बहुत अच्छी खबर आई, शानदार खबर आई। Junior Hockey Team ने World Cup पर कब्ज़ा कर लिया। पंद्रह साल के बाद ये मौका आया है जब Junior Hockey Team ने World Cup जीता। इस उपलब्धि के लिये नौजवान खिलाड़ियों को बहुत-बहुत बधाई। ये उपलब्धि भारतीय हॉकी टीम के भविष्य के लिये शुभ संकेत है। पिछले महीने हमारी महिला खिलाड़ियों ने भी कमाल करके दिखाया। भारत की महिला हॉकी टीम ने Asian Champions Trophy भी जीती और अभी-अभी कुछ ही दिन पहले Under 18 Asia Cup भारत की महिला हॉकी टीम ने Bronze Medal हासिल किया। मैं क्रिकेट और हॉकी टीम के सभी खिलाड़ियों को हृदय से बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, 2017 का वर्ष नई उमंग और उत्साह का वर्ष बने, आपके सारे संकल्प सिद्ध हों, विकास की नई ऊँचाइयों को हम पार करें। सुख चैन की ज़िन्दगी जीने के लिए गरीब से गरीब को अवसर मिले, ऐसा हमारा 2017 का वर्ष रहे। 2017 के वर्ष के लिये मेरी तरफ से सभी देशवासियों को अनेक-अनेक शुभकामनायें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

KSD/AD/AK